सब्र और तवक्कुल

मुअल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

सब्र
और
तवक्कुल

मुअल्लिफ़
डा०-आज़म बेग क़ादरी सफ़वी
09897626182

© जुमला हुक़ूक़ नाशिर के लिये महफ़ूज़ हैं

नाम किताब- **सब्र और तवक्कुल**

मुअ़ल्लिफ़-डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

सने इशाअ़त-जुलाई-2023

कम्पोज़िंग-अमन अ़ली क़ादरी &
ज़ैनुल आ़बदीन क़ादरी

क़ीमत- **140/-** रुपये

-: मिलने के पते :-

मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

जावेद बुक सेलर
करहल (मैनपुरी)
09634447000

अनवार उर्दू बुक डिपो
बिसात खाना मैनपुरी
09319086703

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

न० शुमार	उन्वानात	सफ़हा
01	हम्द..........................	09
02	तम्हीद.........................	11
03	सब्र करने वालों को बेहिसाब अज्र दिया जायेगा....................	14
04	साबिरीन को मग़फ़िरत व जन्नत की बिशारत....................	23
05	अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों से मुहब्बत करता है................	36
06	अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों के साथ होता है....................	37
07	दुनिया आज़माइश का घर है..........	43
08	अल्लाह अपने बन्दों का इम्तिहान लेता है	66
09	सब्र करना बड़ी हिम्मत के कामों में से है	83
10	बन्दों को जो मुसीबत पहुंचती है तो वो उसके गुनाहों की वजह से होती है.......	87
11	अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई मुसीबत दूर नहीं कर सकता..............	101
12	अल्लाह तआ़ला किसी जान पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालता.......	107
13	उस चीज़ का ग़म न करो जो तुम्हारे हाथ से जाती रही................	123

न० शुमार	उन्वानात	सफ़्हा
14	दुश्वारी के साथ आसानी है और तंगी के साथ फ़राख़ी है....................	131
15	बेशक इन्सान बेसब्र और लालची पैदा हुआ है......................	137
16	बराबर रिज़्क़ न देने में हिकमते इलाही..	144
17	अल्लाह तआ़ला ने बाअ़ज़ को बाअ़ज़ पर फ़ज़ीलत दी है..................	153
18	कुफ़्र व गुनाहों के बावुजूद नेअ़मतों का मिलना ये अल्लाह की ढील है...........	157
19	अल्लाह तआ़ला गुमराहों को ऐशो इशरत में ढील देता है.....................	161
20	काफ़िरों के लिये दुन्यावी ज़िन्दगी मुज़य्यन की गई......................	170
21	दुनिया काफ़िरों के लिये जन्नत व उनकी ऐशो इशरत का मक़ाम है.............	176
	सब्र के फ़ज़ाइल अहादीस की रौशनी में	
22	सब्र से बढ़कर कोई नेअ़मत नहीं.........	180
23	साबिरीन को अल्लाह दोस्त रखता है.....	180
24	हक़ीक़ी सब्र पर सवाब मिलता है.........	181
25	तवील ग़म वाला आख़िरत में तवील ख़ुशी वाला होगा...........................	181
26	सब्र हर ख़ैर की चाबी है..................	183

न० शुमार	उन्वानात	सफ़्हा
27	सब्र के बग़ैर कोई ईमान नहीं..............	183
28	रिज़्क़ की तंगी पर सब्र के बदले जन्नत..	184
29	कम रिज़्क़ पर सब्र करने वाला कामयाब.	184
30	सब्र करना मुश्किल अम्र है.................	184
31	सब्र का हुक्म व तल्क़ीन.....................	185
32	अल्लाह तआ़ला साबिरीन को पसंद फ़रमाता है.............................	186
33	कच्चा बच्चा गिरने पर सब्र करने के बाइस जन्नत............................	187
34	ना बालिग़ औलाद ज़रियाए बख़्शिश......	187
35	बीमारी में सब्र करने वालों को अ़ज़ीम अज्र की बिशारत..........................	188
36	बीमारी व दीगर तकलीफ़ों परेशानी के सबब गुनाहों में तख़फ़ीफ़ होती है........	189
37	बीमारी व दीगर तकलीफ़ो परेशानी गुनाहों का कफ़्फ़ारा है............................	190
38	बीमारियाँ गुनाहों को ख़त्म करने का बेहतरीन ज़रिया हैं......................	191
39	मुसलसल मुसीबतों से तमाम गुनाह ख़त्म होते हैं..	192
40	बीमारियों के सबब से दरजात बुलन्द होते	194
41	नाबीना का बदला जन्नत................	196
42	मिर्गी का बदला जन्नत..................	197
43	चार बीमारियों को बुरा न जानो..........	197
44	बीमारियों के न होने में ख़ैर नहीं.......	198

न० शुमार	उन्वानात	सफ़हा
45	जन्नत परेशानियों और दोज़ख़ नफ़्सानी ख़्वाहिशात के घेरे में......................	198
46	जन्नत में फ़ुक़रा की अक्सरियत..........	200
47	मोमिन का तोहफ़ा फ़क़्र व फ़ाक़ा है.....	201
48	रोज़े क़यामत हर मालदार व मुहताज की आरज़ू................................	202
49	अपने से कमतर को देखने से अल्लाह की कोई भी नेअ़मत हक़ीर नहीं लगेगी...	202
50	जिसे चार चीज़ें मिलीं उसे दुनिया व आख़िरत की भलाई मिली................	203
51	नेक लोगों पर सख़्तियाँ आती हैं.........	204
52	मुसीबतों पर सब्र करने वालों को बेहतरीन अज्र..........................	205
53	मिस्कीन रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ला के क़रीब होंगे..........................	205
54	मालदारों के पास आना जाना कम रखना	206
55	रोज़े क़यामत मालदार लोग दरजात में पस्त होंगे..........................	207
56	फ़क़ीर मोमिन मालदार से बेहतर.........	207
57	कम माल वाला क़ाबिले रश्क है..........	208
58	हर इन्सान की तक़दीर मां के पेट में लिख दी जाती है.......................	209
59	अल्लाह ही का है जो वो दे या ले.......	209
60	अल्लाह के नज़दीक अच्छा और बुरा होने की अ़लामत........................	210

न० शुमार	उन्वानात	सफ़्हा
61	कामयाब बन्दे की अ़लामत...............	210
62	हुजूर की दुआ़ मेरी वफ़ात हालते फ़क्र व मुहताजी में हो............................	212
	—: तवक्कुल :—	
63	जो अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करे तो अल्लाह उसे काफ़ी........................	214
64	अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये.....	227
65	ईमान वाले अल्लाह ही पर भरोसा करते.	238
66	शैतान का उस पर कुछ ग़लबा नहीं जो अल्लाह पर तवक्कुल करे...............	243

० बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सइयेआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादिया लहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ०

तमाम खूबियाँ और ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ाला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत व मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है।

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरुदो सलाम हो रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम पर जो ज़ाहिर

व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐबो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो आ़लम में उजाला है अल्लाह तआ़ला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर रोज़े क़यामत प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बिया-किराम अ़लैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है

और रहमत व सलामती हो आपके अहले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो रोज़े क़यामत मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढ़ाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्रात और आपकी आल व असहाव और तमाम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-इ़ज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

—: तम्हीद :—

सब्र एक कड़वी दवा है मगर निहायत बाबरकत और हर तरह की नफ़अ़ का मूजिब व ज़रिया है और हर तरह के ज़रर व नुक़सान को दिफ़ाअ़ करता है और इसकी तल्ख़ी थोड़े वक़्त के लिये है और इसका नफ़ाअ़ तवील वक़्त के लिये होता है और सब्र की चार क़िस्में हैं 01- ताअ़त पर सब्र 02- माअ़सियत पर सब्र यानी गुनाहों को तर्क करने और उससे बाज़ रहने पर सब्र 03- दुनिया की फिज़ूल चीज़ों पर सब्र यानी हाजते दुनिया के सिवाय बाक़ी दुनिया से बे रग़बती पर सब्र 04- दुनिया के मसाइबो आलाम पर सब्र यानी तकलीफ़ व परेशानी और मुसीबत पर सब्र

जब कोई शख़्स सब्र की तल्ख़ी को बर्दाश्त करे तो उसे ताअ़ात और ताअ़ात पर इस्तिक़ामत की नेअ़मते उज़्मा नसीब होती है और वो आख़िरत में सवाबे अ़ज़ीम का मुस्तहिक़ हो जाता है और वो उख़्र'वी अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा और उसके तमाम नेक आअ़माल भी ज़ाए नहीं होते और उसे बेहतर जज़ा और सवाबे कसीर हासिल होता है।

सूफ़िया-ए-किराम फ़रमाते हैं कि जो कुछ होना है वो अपने वक़्त पर ज़रुर होकर ही रहेगा फिर इन्सान क्यों अपने आपको मशक़्क़त व ग़म में डाले रखता है और ऐ नफ़्स हमारे हिस्से में-

सिर्फ़ वो ही चीज़ें आयेंगी जो अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिये मुक़द्दर कर दी हैं और ऐ नफ़्स जब तू अल्लाह तआ़ला के रब होने पर राज़ी है तो उसके हुक्म और तक़दीर पर राज़ी क्यों नहीं

मुसीबत के वक़्त सब्र व तहम्मुल एक दुश्वार काम है ऐसे वक़्त में हर इन्सान को चाहिये कि वो अपने नफ़्स से यूँ कहे कि ऐ नफ़्स ये मुसीबत दूर करने की कोई तदबीर नहीं है सिवाय अल्लाह तबारक व तआ़ला के कि जिसने इससे पहले भी हमारी मुसीबतें दूर की हैं और इस मुसीबत को भी अल्लाह तआ़ला दूर फ़रमायेगा और सब्र के बदले वो दायमी खुशी और अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमायेगा और बेसब्री से नाज़िल शुदा मुसीबत व आफ़त दूर नहीं होगी बल्कि नुजूले मुसीबत के वक़्त 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि रजिऊ़न' का विर्द करो और सब्र व तहम्मुल और तवक्कुल पर इस्तिक़ामत हासिल करो और अल्लाह तआ़ला पर कामिल यक़ीन और भरोसा रखो और उस अज्रो सवाब का तसव्वुर करो जो इस मुसीबत पर सब्र के बाइस अल्लाह तआ़ला अ़ता फ़रमायेगा और वक़्ते मुसीबत अम्बिया-ए-किराम व औलिया-ए-किराम के मसाइब व आलाम और उनके सब्र व तहम्मुल और उनके तवक्कुल को याद करो

अगर तुम्हारा पर'वर दिगार तुमसे दुनिया को रोक ले तो अपने नफ़्स से कहो ऐ नफ़्स अल्लाह तआ़ला तेरे हाल से पूरी तरह वाक़िफ़ है और वो

तुझ पर करम करने वाला मेहरबान भी है और वो काफ़िर को भी रोज़ी देता है जो कि उसका नाफ़रमान दुश्मन और बाग़ी है और मैं तो उसका बन्दा हूँ उसको पहचानने वाला और उसको एक मानता हूँ क्या वो मुझे दुनिया की कुछ नेअ़मतें नहीं देगा ये तो एक नामुम्किन बात है बल्कि वो तो हर शैः पर कुदरत रखता है और वो मुझे हर चीज़ दे सकता है और इसके बावुजूद अगर उसने मालो मताअ़ को मुझसे रोक लिया है तो इसमें ज़रुर मेरे लिये कोई नफ़अ़-ए-अ़ज़ीम पोशीदा है और हर तंगी के बाद सहूलत है और परेशानी के बाअ़द राहत है और बेशक हर दुश्वारी के साथ आसानी भी है।

फ़कीर
डा०-आज़म बेग क़ादरी सफ़वी
9897626182, 9045442223

सब्र करने वालों को
बे हिसाब अज्र दिया जायेगा

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-
बिला शुबा सब्र करने वालों को उनका अज्र बे-हिसाब दिया जायेगा।
(सू०-जुमर-39/10)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-
ये वो लोग हैं जिन्हें उनका अज्र दो बार दिया जायेगा इस वजह से कि उन्होंने सब्र किया और वो बुराई को भलाई के ज़रिये दिफ़ाअ़ करते हैं और उस अ़ता में से ख़र्च करते हैं जो हमने उन्हें बख़्शी है। (सू०-क़सस-28/54)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-
यक़ीनन जो शख़्स अल्लाह से डरता है और सब्र करता है तो बेशक अल्लाह तआ़ाला नेकोकारों का अज्र ज़ाया नहीं करता। (सू०-युसूफ़-12/90)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-
फिर वो अपनी क़ौम के सामने (पूरी) ज़ीनत व आराइश (की हालत) में निकला (उसकी ज़ाहिरी शानो शौकत को देखकर) वो लोग बोल उठे जो दुनियावी ज़िन्दगी के ख़्वाहिश मन्द थे कि काश हमारे लिये भी ऐसा (माल व मताअ़) होता जैसा कारुन को दिया गया बेशक वो बड़े नसीब वाला

है और (दूसरी तरफ़) वो लोग थे जिन्हें इ़ल्मे हक़ दिया गया था वो बोल उठे तुम पर अफ़सोस है अल्लाह तआ़ला का सवाब हर उस शख़्स के लिये (इस दौलत व ज़ीनत से कहीं ज़्यादा) बेहतर है जो ईमान लाया और नेक अ़मल करता हो मगर ये अज्रो सवाब सब्र करने वालों के सिवा किसी को अ़ता नहीं किया जायेगा फिर हमने उस कारुन को और उसके घर को ज़मीन में धंसा दिया सो अल्लाह के सिवा उसके लिये कोई भी जमाअ़त ऐसी न थी जो (अल्लाह के अ़ज़ाब से बचाने में) उसकी मदद करती और न वो खुद ही अ़ज़ाब को रोक सका और जो लोग कल उसके मक़ाम और मर्तबे की तमन्ना कर रहे थे वो कहने लगे कितना अ़जीब है कि अल्लाह अपने बन्दों में से जिसके लिये चाहता है रिज़्क़ कुशादा फ़रमां देता है (और जिसके लिये चाहता है) रिज़्क़ तंग फ़रमां देता है और अगर अल्लाह ने हम पर एहसान न किया होता तो वो हमें भी धंसा देता (और ये माअ़लूम हुआ) कि काफ़िर निजात नहीं पा सकते और ये वो आख़िरत का घर है जिसे हमने ऐसे लोगों के लिये बनाया है जो न तो ज़मीन में सरकशी व तकब्बुर चाहते हैं और न फ़साद और नेक अन्जाम परहेज़गारों के लिये है। (सू०–क़सस–28/79-83)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

जो (भी माल व ज़र) तुम्हारे पास है वो फ़ना हो जायेगा और जो अल्लाह के पास है वो बाक़ी रहने वाला है और हम उन लोगों को जिन्होंने–

सब्र किया उन्हें उनका अज्र ज़रुर अ़ता फ़रमायेंगे उनके अच्छे आअ़माल के ऐ़वज़ जो वो अन्जाम देते रहे थे। (नह्ल–16/96)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और आप सब्र करे बेशक अल्लाह नेकोकारों का अज्र ज़ाया नहीं करता। (सू०–हूद–11/115)

हर तकलीफ़ो मुसीबत पर सब्र करना कि उसमें नाराज़गी और शिकवा शिकायत का शाइबा (मिलावट, आमेज़िश) न हो और गुनाह व मअ़ासी के मुक़ाबले में सब्र करते हुये उनके इरतिकाब से बचना और अल्लाह तअ़ाला की इताअ़त पर सब्र करते हुये उस पर क़ायम रहना तो ऐसे लोगों को अल्लाह तअ़ाला बे हिसाब अज्र अ़ता फ़रमायेगा और ये अज्रो सवाब किसी हद व ताअ़दाद और मिक़्दार के बग़ैर अ़ता होगा यानी उनके अज्रो सवाब की कोई हद व मिक़्दार न होगी और रोज़े क़यामत सब्र करने वालों के दरजात बुलन्द होंगे व उन्हें बेहिसाब अज्रो सवाब अ़ता किया जायेगा जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की इताअ़त में सर्फ़ की और वो गुनाहों से बचते रहे और दुनियावी तकलीफ़ो मुसीबत पर उन्होंने सब्र किया और कसरत से नेक आअ़माल करते रहे।

➡ हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मसाइबो आलाम से दो चार होने वाले और मुसीबत और बला में मुब्तिला रहने वाले क़यामत के दिन हाज़िर किये जायेंगे तो न उनके लिये मीज़ान क़ायम किया जायेगा और न ही उनके लिये आअ़माल नामों के दफ़्तर खोले जायेंगे और उन पर अज्रो सवाब की बे हिसाब बारिश होगी यहाँ तक कि जब अल्लाह तआ़ला उन्हें अ़ज़ीम सवाब और मरातिब अ़ता फ़रमायेगा तो दुनिया में अ़ाफ़ियत व ऐशो आराम में रहने वाले लोग उनके सवाब और मरातिब को देखकर तमन्ना करेगे कि काश (कि मेरी ज़िन्दगी अ़ाफ़ियत में बसर न होती और हम भी तकलीफ़ो मुसीबत में गिरफ़्तार रहते हत्ता कि हमें इतनी तकलीफ़ मिलती कि) दुनिया में मेरी खालें कैंचियों से काटी जातीं (ताकि आज हम भी ये बेहिसाब अज्रो सवाब और मरातिब के मुस्तहिक़ होते जो कि आज उन सब्र करने वालों को मिल रहे हैं जिन्होंने दुनिया में बहुत तकलीफ़ें और मुसीबतें उठाईं और वो सब्र करते रहे)

(तबरानी–मुअ़जम–कबीर–12/182-ह०–12829)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/231-ह०–2402)
(इब्ने अबी शैबा–3/537-ह०–10934)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/602-ह०–6553)

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस मुसलमान–

पर जब कोई मुसीबत आये और वो कहे ‘‘इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न’’ (सू०-बक़्राह-156) और साथ में ये कलिमात कहे कि ऐ मेरे रब मुझे इस मुसीबत का अज्र अ़ता फ़रमां और मुझे इससे बेहतर बदल अ़ता फ़रमां तो अल्लाह तआ़ला उसको फ़ौत शुदा चीज़ से बेहतर चीज़ अ़ता फ़रमायेगा सो जब मेरे शौहर अबू सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़ौत हो गये तो मैंने सोचा मुसलमानों में अबू सलमा से बेहतर कौन होगा उन्होंने सबसे पहले नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की तरफ़ हिजरत की थी और फिर अल्लाह तआ़ला ने उनके बदले में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से मेरा निकाह करा दिया।
(मुस्लिम-सहीह-2/255-ह०-2126)

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब किसी बन्दे का बच्चा फ़ौत हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से फ़रमाता है कि तुमने मेरे बन्दे के बच्चे की रुह क़ब्ज कर ली वो कहते हैं जी हाँ फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि तुमने उसके दिल के फल को क़ब्ज कर लिया वो कहते हैं जी हाँ फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है फिर बन्दे ने क्या कहा वो कहते हैं कि उसने तेरी हम्द बयान की और ‘इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न’’ पढ़ा तो फिर अल्लाह तआ़ला-

फ़रमाता है कि मेरे इस बन्दे के लिये जन्नत में एक घर बनादो और इसका नाम बैतुल हम्द रखो (तिर्मिज़ी–सुनन–1/565-ह०-1021)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) बयान करते हैं कि जिस शख़्स में ये चार सिफ़ात (ख़सलतें) मौजूद हों तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये जन्नत में एक घर बना देगा 1- जिस शख़्स का तहफ़्फ़ुज़ और बचाओ 'ला इलाहा इल्ल ल्लाह' हो 2- वो शख़्स जिसको जब कोई मुसीबत पहुँचे और वो कहे 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न' 3- वो शख़्स कि जब उसको कोई चीज़ अ़ता हो तो वो कहे अल्हम्दु लिल्लाह 4- जब वो कोई गुनाह करे तो कहे अस्तग़फ़िरुल्लाह।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/113-ह०-9692)

➡ हज़रत हुसैन बिन अ़ली (अ़लैहिमस्लाम) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस मुसलमान पर कोई मुसीबत आई हो और वो जब भी उस मुसीबत को याद करे और कहे ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न'' तो अल्लाह तआ़ला उसको नया सवाब अ़ता फ़रमाता है उस दिन की तरह जब उस पर पहली बार मुसीबत आयी थी ख़्वाह कितना ही अ़रसा गुज़र चुका हो।
(इब्ने माजा–सुनन–2/540-ह०-1600)

अल्लाह तआ़ला ने कुरान में कई मक़ामात पर–

सब्र की फ़ज़ीलत और साबिरीन को मिलने वाले अज्रो सवाब और इनाअ़मात और उनके आअ़ला मक़ामात व दरजात का ज़िक्र फ़रमाया है अहकामे शरीअ़त की ताअ़मील और इबादात की मशक़्क़त पर सब्र और मुसीबत और रंजो ग़म को बर्दाश्त करने पर सब्र करना और तंगदस्ती और बीमारी के वक़्त सब्र व लोगों से मिलने वाली अज़्ज़ियत पर सब्र करने वाले और आअ़माले सालिहा की तकमील की मशक़्क़त पर अपने नफ़्स को जमाये रखने वाले और ग़लबाए शहवत के वक़्त खुद को गुनाहों से रोकने वाले और ग़लबाए गुस्से के वक़्त खुद को ज़्यादती से रोकने वाले और आज़माइश के वक़्त साबित क़दम रहने वाले और सब्र करने वालों को बेहिसाब अज्र अ़ता किया जायेगा

अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब बन्दे सबसे ज़्यादा आज़माइश और मुसीबत में गिरफ़्तार रहते हैं और ये लोग वो होते हैं जो तंगी व मुफ़लिसी में भी क़ानेअ़ रहते हुये अपनी ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और सब्र व शुक्र पर क़ायम रहते हैं और हमेशा अपने रब की रिज़ा व खुशनूदी के तालिब रहते हैं और अक्सर मुत्तक़ीन व सालिहीन की ज़िन्दगी तंगी व मुफ़लिसी में गुज़रती है।

➡ हज़रत मुस्अ़ब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह लोगों में सबसे ज़्यादा मुसीबत किस पर आती है तो आपने फ़रमाया कि अम्बिया किराम पर फिर जो–

उनके बाद अफ़ज़ल और बेहतर हों और दर्जा व दर्जा बन्दे की आज़माइश और उस पर मुसीबत उसके दीन के ऐतबार से होती है और जो अपने दीन में जितना ज़्यादा पुख़्ता होगा उस पर उसी के मुताबिक़ आज़माइश व मुसीबत सख़्त होती है और जो दीन में नरम होगा तो उसके ऐतबार से उस पर आज़माइश व मुसीबत आती है और बन्दे पर मुसलसल आज़माइश व मसाइब आते रहते हैं हत्ता कि वो इस हाल में ज़मीन पर चलता है कि उसके ऊपर कोई गुनाह नहीं होता।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/229-ह०-2398)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/595-ह०-6534)
(इब्ने माजा–सुनन–3/306-ह०-4023)
(बज़्ज़ार–अल मुस्नद–3/349-ह०-1150)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/59-ह०-2901)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/135-ह०-9775)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला के नज़दीक किसी बन्दे का कोई मक़ाम व मर्तबा जो उसका मुक़द्दर हो चुका हो और वो अपने आअ़्माल की बिना पर उस तक न पहुँच सकता हो तो अल्लाह तआ़ला उसके जिस्म या उसके माल में या उसकी औलाद के मसाइब में उसे मुब्तिला कर देता है।
(अबू दाऊद–सुनन–3/496-ह०-3090)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ईमान के दो निस्फ़ हैं आधा सब्र में और आधा शुक्र में (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–74/119-ह०-9715)

जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की इ़बादत व इताअ़त में अपनी ज़िन्दगी गुज़ारे और नेक अ़मल करे और अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी न करे और हर हाल में वो सब्र करे यानी तिजारत में नुक़सान पर सब्र, दुनिया के मसाइब पर सब्र, व माल के ज़ाया होने पर सब्र, हर तरह की बीमारी व तकलीफ़ पर सब्र, अल्लाह व रसूल की इ़बादत व इताअ़त में होने वाली मेहनतो मशक़्क़त में सब्र माअ़सियत के कामों को छोड़ने पर नफ़्स को होने वाली तकलीफ़ पर सब्र और आफ़ात व हादसात और मुश्किलात पर सब्र, किसी की मौत पर सब्र, माल की तंगी पर सब्र वग़ैराह पर क़ायम रहे तो उसको निहायत अच्छा बदला अ़ता किया जायेगा।

अल्लाह तआ़ला नेकोकारों का अज्र ज़ाया नहीं करता और उनकी आख़िरत की ज़िन्दगी बहुत ही बेहतर पुर लुत्फ़ व इत्मीनाने क़ल्ब व सुकूने नफ़्स व कसीर नेअ़मतों में होगी और अल्लाह तआ़ला उन्हें मुख़्तलिफ़ क़िस्म की लज़्ज़ात से नवाज़ेगा कि जिनको न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना और न ही किसी इन्सान के दिल में उसका ख़्याल गुज़रा और अल्लाह तआ़ला उन्हें दुनिया में भी भलाई से नवाज़ेगा और आख़िरत में भी उनके साथ ख़ैर और भलाई का मुआ़मला फ़रमायेगा।

साबरीन को मग़फ़िरत व जन्नत की बिशारत

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

सिवाये उन लोगों के जिन्होंने सब्र किया और नेक अ़मल करते रहे तो ऐसे लोगों के लिये मग़फ़िरत और बड़ा अज्र है (सू०-हूद-11/11)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और जो लोग अपने रब की रज़ा जोई के लिये सब्र करते हैं और नमाज़ क़ायम रखते हैं और जो रिज़्क़ हमने उन्हें दिया है उसमें से वो पोशीदा और ऐअ़लानियां ख़र्च करते हैं और वो नेकी के ज़रिये बुराई को दूर करते रहते हैं यही वो लोग हैं जिनके लिये आख़िरत का (हसीन) घर है जहाँ सदाबहार बाग़ात हैं उनमें वो लोग दाख़िल होंगे और उनके आबा व अजदाद और उनकी बीवियाँ और उनकी औलाद में से जो भी नेकोकार होगा और फ़रिश्ते उनके पास जन्नत के हर दरवाज़े से आयेंगे (उन्हें खुश आमदीद कहते और मुबारक-बाद देते हुये कहेंगे) तुम पर सलामती हो तुम्हारे सब्र करने के सिले में पस (अब देखो) आख़िरत का घर क्या खूब है।
(सू०-राअ़द-12/22-24)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

क्या तुम ये गुमान किये हुये हो कि तुम यूँ ही-

जन्नत में चले जाओगे हालाँकि अभी तो अल्लाह तआ़ला ने तुममें से जिहाद करने वालों को परखा ही नहीं और ना ही सब्र करने वालों को जाँचा है (सू०–आले इमरान–3/142)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
उन्हीं लोगों को (जन्नत में) बुलन्द तरीन महल्लात उनके सब्र करने की जज़ा के तौर पर अ़ता किये जायेंगे और वहाँ दुआ़ऐ ख़ैर और सलाम के साथ उनका इस्तक़बाल किया जायेगा।
(सू०–फुरक़ान–25/75,76)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और इस बात के ऐवज़ कि उन्होंने सब्र किया तो (रहने को) जन्नत व (पहनने को) रेशमी पोशाक अ़ता करेगा और ये लोग उसमें तख़्तों पर तकिये लगाये बैठे होंगे ना वहाँ वो धूप की तपिश पायेंगे और न सर्दी की शिद्दत और जन्नत के दरख़्तों के साये उन पर झुक रहे होंगे और उनके मेवों के गुच्छे झुक कर लटक रहे होंगे और खुद्दाम उनके गिर्द चांदी के बर्तन और साफ़ सुथरे शीशे के गिलास लिये फिरते होंगे और शीशे भी चांदी के बने होंगे जिन्हें उन्होंने (हर एक की तलब के मुताबिक़) ठीक ठीक अन्दाज़ से भरा होगा और उन्हें वहाँ शराबे तहूर के ऐसे जाम पिलाये जायेंगे जिनमें ज़न्जबील की आमेज़िश होगी और ज़न्जबील जन्नत में ऐसा चश्मा है जिसका नाम सलसबील रखा गया है और उनके इर्द गिर्द ऐसे माअ़सूम–

बच्चे घूमते रहेंगे जो हमेशा उसी हाल में रहेंगे जब आप उन्हें देखेंगे तो उन्हें बिखरे हुये मोती गुमान करेंगे और जब आप बहिश्त पर नज़र डालेंगे तो वहा कसरत से नेअ़मतें और हर तरफ़ बड़ी सल्तनत देंखेगे और उनके जिस्मों पर बारीक रेशम के सब्ज़ और दबीज़ (मोटे) रेशम के कपड़े होंगें और उन्हें वहाँ चाँदी के कंघन पहनाये जायेंगे और उनका रब उन्हें पाकीज़ा शराब पिलायेगा बेशक ये तुम्हारा सिला होगा और तुम्हारी मेहनत मक़बूल हो चुकी। (सू०–दहर–76/12-22)

किसी मुसीबत पर या किसी नेअ़मत के छिन जाने पर सब्र करने वाले और हर हाल में सब्र पर क़ायम रहने वाले और हर सूरत अल्लाह तआ़ला की इताअ़त व फ़रमां बरदारी में मसरुफ़ रहने वाले लोगों की मग़फ़िरत का रब तआ़ला ने वाअ़दा फ़रमाया है और उन्हें अज्रे अ़ज़ीम अ़ता किया जायेगा यानी ऐसे तमाम लोग नेअ़मतों व लज़्ज़तों वाली जन्नत में दाख़िल किये जायेंगे।

जो लोग किसी नेअ़मत के ज़ाया होने पर या माल की तंगी पर या किसी मुसीबत पर सब्र पर क़ायम नहीं रहते और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की इताअ़त के बजाए शैतान की इताअ़त और अपने नफ़्स की इत्तेबाअ़ करते हैं वो आख़िरत के अज्रो सवाब से महरुम रहेंगे और वो लोग जब अल्लाह तआ़ला उन्हें दुनिया में नेअ़मतें अ़ता फ़रमाये और

उन्हें माल व मताअ़ से नवाज़े तो वो लोगों पर फ़ख़्र व गुरुर का इज़हार करते हैं तो ऐसे लोग भी आख़िरत में मिलने वाले अ़ज़ीम अज्रो सवाब से महरुम रहेंगे और उन्हें रब तआ़ला का ग़ज़ब व उसके अ़ज़ाब से दो चार होना पड़ेगा तो हमें इन बातों पर ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये कि मेरा रब हमें दुनिया में जिस हाल में भी रखे हम हर हाल में सब्र व शुक्र पर क़ायम रहते हुये अल्लाह व रसूल की इताअ़त और नेक अ़मल करें और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा पर राज़ी रहें और शर व गुनाह और हर बुराई से हर हाल में इजतिनाब करें ताकि हमारी आख़िरत बेहतर हो और हम अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब व उसके अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रह सकें और आख़िरत मे मिलने वाले बेहतरीन इनाअ़मात व अज्रो सवाब के मुस्तहिक़ हो जायें।

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो सब्र करना चाहेगा तो अल्लाह तआ़ला उसे सब्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमायेगा और किसी को कोई ऐसा अ़तिया नहीं दिया गया जो सब्र से बेहतर और वसीअ़ तर हो। (मुस्लिम–सहीह–2/388-ह०-2424)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया–

सब्र निस्फ़ ईमान है और यक़ीन पूरा ईमान है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–9/107-ह०-7544)

➡ हज़रत सुहैब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मोमिन का मुआ़मला बड़ा अ़जीब है और उसका हर मुआ़मला भलाई व ख़ैर पर मुश्तमिल है और ये सिर्फ़ उस मोमिन के लिये है कि जब उसे राहत व खुशी हासिल हो तो वो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता है तो इसमें भी उसके लिये सवाब और ख़ैर और भलाई है और जब उसे कोई तकलीफ़ या तंगदस्ती पहुँचती है तो वो सब्र करता है तो इसमें भी उस के लिये सवाब और ख़ैर और भलाई है।
(मुस्लिम–सहीह–6/488-ह०-7500)
(कंज़ुल उ़म्माल–01/134-ह०–710)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसको जान या माल के ज़रिये कोई तकलीफ़ पहुँचे और वो उस तकलीफ़ को लोगों से छुपाये और लोगों के सामने उसकी शिकायत न करे तो अल्लाह तआ़ला पर हक़ है कि उसको बख़्श दे।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/429-ह०-737)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे के साथ ख़ैर और भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे मुसीबत में मुब्तिला कर देता है और अल्लाह तआ़ला जिसके साथ शर का इरादा फ़रमाता है तो उसे दुनिया में ढील देता है और उसके गुनाहों की सज़ा को क़यामत के दिन के लिये उठा रखता है और क़यामत के दिन उसे उसके गुनाहों की सज़ा देगा नीज़ फ़रमाया बड़ी मुसीबत का बड़ा अज्र होता है और मुसीबत के वक़्त जो सब्र करता और वो अल्लाह तआ़ला से राज़ी होता है तो अल्लाह तआ़ला भी उससे राज़ी होता है और जो अल्लाह तआ़ला से नाराज़ होता है तो अल्लाह तआ़ला भी उससे नाराज़ होता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/228-ह०-2396)
(इब्ने माजा–सुनन–3/310-ह०–4031)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन मर्द और मोमिना औ़रत पर उसकी जान में, उसकी औलाद में और उसके माल में मुसीबतें नाज़िल होती रहती है हत्ता कि वो अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मुलाक़ात करेंगे कि उन पर कोई गुनाह न होगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/230-ह०-2399)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/69-ह०-2913)

सब्र की कई अक़साम हैं एक ये कि इन्सान

इ़बादात की मशक़्क़त पर सब्र करे और बीमारी, तकलीफ़ और ग़म व परेशानी के बावुजूद इ़बादात व इताअ़ात बजा लाने में कोई तक़सीर व कोताही न करे और सब्र की दूसरी क़िस्म ये कि इन्सान नफ़्स और शहवत के तक़ाज़ो पर सब्र करे और वो अपने नफ़्स को गुनाहों से आलूदा न होने दे और सब्र की तीसरी क़िस्म कुदरती आफ़ात और मसाइब व नुक़सानात पर सब्र करना और सब्र की चौथी क़िस्म ये कि नेक अ़मल के वक़्त होने वाली परेशानियों पर सब्र करना और ये सब्र सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा जोई के लिये हो तो उस सब्र का बेहतरीन अज्र है और अगर किसी दुनियावी या ज़ाती ग़रज़ से सब्र किया तो उसका कोई अज्र नहीं मिलता

मसलन किसी शख़्स ने अगर नुक़सान या मसाइबो आलाम पर सब्र इसलिये किया कि लोग उसके सब्र की ताअ़रीफ़ करें कि देखो उस शख़्स का कितना हौसला है कि उसने कितने बड़े ग़म को किस क़दर आसानी से बर्दाश्त कर लिया या फिर उसने सब्र इसलिये किया कि उसकी बेक़रारी, शिकवा शिकायत को देखकर लोग उसकी मज़म्मत करेंगे और उसकी ऐ़ब जोई करेंगे या फिर उसने सब्र इसलिये किया कि अगर उसने अपने रंज व ग़म का इज़हार किया तो उसके दुश्मन खुश होंगे तो ऐसा सब्र मज़मूम है यानी जो सब्र अल्लाह तआ़ला की रिज़ा जोई के लिये न हो बल्कि वो ग़ैरुल्लाह के लिये हो तो ऐसा सब्र मज़मूम है और

ऐसे लोगों को सब्र का कोई अज्र नहीं मिलता इन्सान किसी आफ़त व मुसीबत में सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला की रिज़ा जोई के लिये सब्र करे कि मेरी तक़दीर में इसी तरह लिखा हुआ था और मैं रब तअ़ाला की क़ज़ा (हुक्म) पर राज़ी हूँ अगर माल का नुक़सान हो तो माल उसी का दिया हुआ था अगर औलाद का इन्तिक़ाल हो तो औलाद उसी की दी हुई थी हत्ता कि उसकी अपनी जान भी उसी की दी हुई थी और हर चीज़ का अल्लाह तअ़ाला ख़ालिक़ व मालिक है और जब वो चाहता है कोई चीज़ देता है और जब चाहता है वो चीज़ ले लेता है और बन्दे पर जब कोई मुसीबत व परेशानी नाज़िल हो तो उसकी नज़र मुसीबत पर न हो बल्कि मुसीबत के नाज़िल करने वाले पर हो और वो रब तअ़ाला के हुक्म व उसकी रिज़ा पर राज़ी हो और जाने वाली चीज़ पर ग़म न करे बल्कि सब्र करे और उसका सब्र रब तअ़ाला की रिज़ा व सवाब की तलब के लिये हो तो ऐसा सब्र क़ाबिले ताअ़रीफ़ व अज्रो सवाब का बाइस है

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मख़लूक़ में सबसे पहले फ़ुक़रा व मुहाजिरीन जन्नत में दाख़िल होंगे कि उनमें से कोई इस हाल में फ़ौत होता है कि उसकी ख़्वाहिश उसके दिल में ही रह जाती है और वो उस ख़्वाहिश को पूरा नहीं कर पाता तो अल्लाह तअ़ाला फ़रिश्तों से फ़रमायेगा कि

उन लोगों के पास जाओ और उनको सलाम करो ये मेरे वो बन्दे हैं जो मेरी इ़बादत करते थे और इनमें से कुछ लोग इस हाल में फ़ौत हुये हैं कि उनकी ख़्वाहिश उनके दिल में ही थी और वो उस ख़्वाहिश को पूरा न कर सके ये सुनकर फ़रिश्ते उनके पास जन्नत के हर दर'वाज़े से जायेंगे और कहेंगे कि तुम पर सलामती हो क्योंकि तुमने सब्र किया। (मुस्नद अहमद–6/142-ह०-6570)

➡ अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और अ़ली बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) बयान करते हैं कि क़यामत के दिन एक मुनादी निदा करेगा कि सब्र करने वाले उठ खड़े हों फिर कुछ लोग खड़े होंगे और उनसे कहा जायेगा कि तुम जन्नत की तरफ़ जाओ फिर उनको रास्ते में फ़रिश्ते मिलेंगे और कहेंगे कि तुम कहाँ जा रहे हो तो वो कहेंगे कि जन्नत की तरफ़ तो फ़रिश्तें कहेंगे हिसाब से पहले वो कहेंगे हाँ फ़रिश्ते पूछेंगे तुम लोग कौन हो वो कहेंगे कि हम अहले सब्र हैं और कहेंगे कि हमने अल्लाह की इ़बादत पर सब्र किया, हमने गुनाहों से रुकने पर सब्र किया, हमने आफ़तों व मुसीबतों पर सब्र किया फ़रिश्ते उनसे कहेंगे कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ अच्छे अ़मल करने वालों का कैसा अच्छा अज्र है और फ़रिश्ते कहेंगे तुम पर सलामती हो क्योंकि तुमने सब्र किया तो आख़िरत का घर कैसा अच्छा है। (अल जामेउल अहकामुल कुरान–9/273) (अल मतालिबुल आ़लिया–किताबुल फ़ित्न बाब–शफ़ाअ़तुल मोमिनीन–8/702-ह०-4578)

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को मसाइबो आलाम व दीगर तकालीफ़ के ज़रिये से आज़माइश में डालता है ताकि उसको उसके ईमान की कसौटी पर परखा जाये और बन्दो के आअ़माल को जांचा जाये कि मुसीबत की कैफ़ियत में बन्दे का ईमान कितना मज़बूत है और वो कितना साबित क़दम रहता है और वो कैसे अ़मल करता है और जो शख़्स जन्नत का तालिब हो उसे आज़माइशों से गुज़रना और उन पर ख़रा व पूरा उतरना पड़ेगा और इन्सान चाहिये कि मुसीबत के नुजूल के वक़्त दिलों को ग़म और दिमाग़ को कमज़ोर होने से सब्र के ज़रिये बचायें क्योंकि इससे मुसीबत टलती नहीं बल्कि इन्सान की मुसीबत में इज़ाफ़े का सबब बनती है और मुसीबत तो सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही दूर करता है तो सब्र व तहम्मुल पर साबित क़दम रहना चहिये और रब तआ़ला से दुआ़ करना चहिये कि वो हमसे हमारी मुसीबतों को दूर फ़रमाये और मुसीबतों के टलने का मुन्तज़िर रहना चाहिये और दिलों से ग़म को निकालकर दिलों को मज़बूत रखना चाहिये और हमें अपने सब्र पर अज्रो सवाब का तालिब और उम्मीदवार रहना चाहिये।

कोई भी शख़्स राहे खुदा में बग़ैर तकलीफ़ उठाये जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता ख़्वाह वो तकलीफ़ व मशक़्क़त इबादात में हो ताअ़ात में हो या बन्दे की आज़माइश के लिये उस पर नाज़िल होने वाली मुसीबतें हो या नेक आअ़माल करने में

दरपेश आने वाली तकलीफ़ें व परेशानियाँ और मशक़्क़तें हों क्योंकि जन्नत बुलन्द तरीन मन्ज़िले मक़सूद और सबसे अफ़ज़ल व आअ़ला मक़ाम है और मतलूब व मक़सूद जितना ज़्यादा बड़ा होगा तो वहाँ तक पहुँचने वाला वसीला और अ़मल भी उतना ही बड़ा होगा तो एक राहत को छोड़कर दूसरी राहत तक पहुँचा जा सकता है जब दुनिया ए फ़ानी की नेअ़मत बग़ैर मेहनतो मशक़्क़त के हासिल नहीं होती तो जन्नत जैसा आअ़ला मक़ाम बग़ैर मेहनतो मशक़्क़त कैसे हासिल हो सकता है।

जो मसाइब व तकालीफ़ के वक़्त अपने नफ़्स को सब्र करने पर मजबूर करते हैं और खुशी के वक़्त इतराते नहीं बल्कि वो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करते हैं और वो अल्लाह तआ़ला के अहकामात पर अ़मल पैरा रहते हैं तो उनके लिये मग़फ़िरत और बड़ा अज्र है और ये नेअ़मतों से भरपूर जन्नत में दाख़िल होंगे जिसमें वो सब कुछ होगा जिसकी वो चाहत करेंगे और आँखें लज़्ज़त हासिल करेंगी और अल्लाह तआ़ला उन्हें ऐसी पाकीज़ा दायमी ज़िन्दगी अ़ता फ़रमायेगा जो अपनी शानो शौकत और मक़ामो मरतबत के एतबार से बहुत शानदार व बेहतर और पुर लुत्फ़ और पुर अमन होगी और जन्नत हर क़िस्म की लज़्ज़तो व फ़रहतों का जामेअ़ है।

अगर जन्नत में जाना है तो हर आज़माइश में खरा और पूरा उतरना ज़रुरी है और राहे खुदा–

में मेहनतो मशक़्क़त ज़रुरी है और हर मुसीबतो परेशानी में सब्र पर साबित क़दम रहना ज़रुरी है और हर नेअ़मत के मिलने पर शुक्र अदा करना ज़रुरी है और कसरत से नेक आअ़माल करना ज़रुरी है और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की इताअ़त करना ज़रुरी है खुद को शर व गुनाह से पाक रखना ज़रुरी है।

मज़कूरा बातों पर अ़मल करने वाले लोग जन्नत में दाख़िल किये जायेंगे जहाँ पर वो उन तमाम नेअ़मतों से नवाज़े जायेंगे कि जिनका दिल ख़्वाहिश करेगा और फ़रिश्ते दुआ़ऐ ख़ैर व सलाम के साथ उनकी ताअ़ज़ीमों तकरीम करेंगे और वो जन्नत में हमेशा हमेशा रहेंगे वो निहायत अच्छी ठहरने व क़याम करने की जगह है जन्नती जन्नत में तख़्तों पर तकिया लगाये बैठे होंगे और दुनिया की तरह वहाँ न गर्मी होगी और न ही सर्दी होगी और उन्हें रेशमी लिबास पहनाये जायेंगे जन्नतियों पर दरख़्तों के साये झुका दिये जायेंगे और उनके गुच्छे झुकाकर नीचे कर दिये जायेंगे ताकि वो खड़े बैठे और लेटे हर हाल में बाआसानी गुच्छों में से फल ले सकें और जैसे चाहें वैसे खा सकें और उन्हें वहाँ चांदी के बर्तनो और गिलासों में जन्नती पाकीज़ा शराब पिलाई जायेगी और वो बर्तन शीशे की तरह साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ होंगे

और उनकी ख़िदमत के लिये आसपास हमेशा खूबसूरत लड़के होंगे और वो हर वक़्त जन्नतियों

की ख़िदमत करेंगे और वो लड़के इतने खूबसूरत होंगे गोया चमकते हुये बिखरे मोती की तरह होंगे और जन्नती जो कुछ खायेंगे पियेंगे वो खुशबूदार डकार के ज़रिये हज़्म होकर निकल जायेगा और वहाँ उन्हें न पेशाब की हाजत होगी न पखाना की हाजत होगी और उनके लिये जन्नत में पाकीज़ा बीवियाँ होगी जिनसे उनका निकाह होगा और वो बीवियाँ निहायत खूबसूरत होंगी जिनको कि उनसे पहले न किसी इन्सान ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने हाथ लगाया होगा और जन्नती जन्नत में जिस चीज़ की ख़्वाहिश करेंगे तो वो चीज़ उनके सामने फ़ौरन हाज़िर हो जायेगी और वहाँ न चांद होगा न सूरज होगा बल्कि जन्नत अल्लाह तआ़ला के नूर से रौशन होगी।

मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं अगर तुम किसी मुसीबत पर सब्र करोगे तो अल्लाह तआ़ला उस मुसीबत के ऐवज़ तुम्हें बेहतर नेअ़मत अ़ता फ़रमायेगा और जो सब्र से मदद लेता है तो सब्र उसकी मदद ज़रुर करता है और सब्र करने वाले की मुसीबत आसान हो जाती है और अल्लाह तआ़ला सब्र के ऐवज़ बेहतर सिला अ़ता फ़रमाता है और सब्र वो सवारी है जो कभी ठोकर नहीं खाती और नेकी करने वाले की नेकियों का वज़न किया जायेगा सिवाय सब्र करने वालों के कि उन्हें बेहिसाब और बेअन्दाज़ा दिया जायेगा।

अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों से मुहब्बत करता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और कितने ही अम्बिया ऐसे हुये हैं कि जिन्होंने जिहाद किया और उनके साथ बहुत से अल्लाह वाले भी शरीक हुये तो उन्होंने उन मुसीबतों के सबब जो उन्हें अल्लाह की राह में पहुँची तो न उन्होंने हिम्मत हारी और न वो कमज़ोर पड़े और न वो झुके और अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों से मुहब्बत करता है। (सू०-आले इमरान-3/146)

मज़कूरा आयत में अहले ईमान को तसल्ली दी जा रही है और उनका हौसला बढ़ाया जा रहा है और उन्हें सब्र की तल्क़ीन की जा रही है और उन्हें ये बताया जा रहा है कि तुमसे पहले बहुत से अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) और उनके सहाबा ने तकलीफ़ें व मुसीबतें उठाईं और उन्होंने तमाम तकालीफ़ व मसाइब को बर्दाश्त करते हुये सब्र किया और साबित क़दम रहे तो ऐ मुसलमानों तुम तो इमामुल अम्बिया के उम्मती हो और तुम तमाम उम्मतों से अफ़ज़ल हो तो तुम्हारा तकालीफ़ व मसाइब पर सब्र उनसे ज़्यादा होना चाहिये ताकि तुम अल्लाह तआ़ला के महबूब बन्दे बन जाओ और अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों को पसंद फ़रमाता है और उनसे मुहब्बत करता है

अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों के साथ होता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों के साथ है। (सू०–अनफ़ाल–8/46 व 66)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
अल्लाह सब्र करने वालों को अपनी माअ़इयत से नवाज़ता है। (सू०–बक़राह–2/249)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो सब्र और नमाज़ के ज़रिये मुझसे मदद चाहा करो यक़ीनन अल्लाह सब्र करने वालों के साथ होता है। (सू०–बक़राह–2/153)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और सब्र व नमाज़ के ज़रिये से अल्लाह से मदद चाहो और बेशक ये गिराँ है मगर (उन) आ़जिज़ो पर (हरगिज़) नहीं (जिनके दिल मुहब्बते इलाही से ख़स्ता और ख़शीयते इलाही से शिकस्ता हैं ये वो लोग हैं) जो यक़ीन रखते हैं कि वो अपने रब से मुलाक़ात करने वाले हैं और वो उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। (सू०–बक़राह–2/45,46)

इन्सान को चाहिये कि सब्र को मश्क़ के ज़रिये अपनी आ़दत बनाले ताकि सब्र करना इन्सान के

लिये मुश्किल न हो और सब्र करने के बदले उसे अल्लाह तआ़ाला की माअ़इयत हासिल हो और उसे चाहिये कि वो तमाम असबाब इख़्तियार करे जो उसे साबिर बना दे और उन असवाब में से एक ये है कि मसाइबो आलाम के वक़्त अल्लाह तआ़ाला का कसरत से ज़िक्र करे ये उस बन्दे के लिये ईमान का कमाल व कामयाबी की बेहतरीन व उ़म्दाह तदबीर है और रब तआ़ाला की रिज़ा और उसकी माअ़इयत हासिल करने का बेहतरीन ज़रिया है।

सब्र बहुत कढ़वा है मगर उसका फल बहुत मीठा होता है क्योंकि अल्लाह सुबहानहू व तआ़ाला की रहमत और उसका फ़ज़्ल सब्र वालों के साथ होता है इसलिये मुसलमान का रज़ाए इलाही के हुसूल और अपनी हाजतों की तकमील व मसाइबो आलाम से निजात व अज्रो सवाब पाने के लिये सब्र करना दोनों जहान के लिये सबसे बेहतर व नफ़ा बख़्श है और सब्र करने की वजह से क़ल्बी कुव्वत में इज़ाफ़ा होता है और अल्लाह तआ़ाला से तआल्लुक़ मज़बूत होता है और जो शख़्स सब्र करने की कोशिश करता है तो अल्लाह तबारक व तआ़ाला उस शख़्स को सब्र करने की तौफ़ीक़ से नवाज़ता है और अल्लाह तआ़ाला की इताअ़ात व इ़बादात पर अपने नफ़्स को पाबन्द करना और उसकी नाफ़रमानी से खुद को रोकना हत्ता कि उसे तर्क कर देना और उसकी तक़दीर पर सब्र करना व हर क़िस्म की मुसीबतो परेशानी में सब्र

करना अल्लाह तआ़ाला की माअ़इयत और उसकी मदद हासिल करने का बेहतरीन ज़रिया है और मुसीबत में दिल चाहता है कि बेक़रारी व बैचैनी का इज़हार करे तो उस वक़्त दिल को क़ाबू में रखना और अल्लाह तआ़ाला की क़जा पर राज़ी रहना ये एक क़िस्म का सब्र है इसी तरह सर्दी के मौसम में ठंडे पानी से वुजू करने की हिम्मत नहीं होती इसी तरह से ज़कात निकालने को दिल नहीं चाहता मगर दिल पर ज़बर करके इन कामों को कर गुज़रना ये दूसरे क़िस्म का सब्र है

इसी तरह से हमारा नफ़्स गुनाह व सरकशी में लज़्ज़त हासिल करता है तो अब नफ़्स को क़ाबू करके गुनाहों व सरकशी से रुक जाना ये तीसरी क़िस्म का सब्र है इसी तरह से मेहनतों मशक़्क़तों के बाइस हमारा नफ़्स अल्लाह तआ़ाला की इ़बादत व इताअ़त से रोकता है तो अब अपने नफ़्स को क़ाबू में करते हुये अल्लाह तआ़ाला की इ़बादत व इ़ताअ़त बजा लाना ये चौथे क़िस्म का सब्र है नफ़्स को अ़क़्ल व शरीअ़त के तकाज़ों के मुताबिक़ रोकना ये पांचवें क़िस्म का सब्र है और क़लील रिज़्क़ पर क़नाअ़त करना ये छंटवें क़िस्म का सब्र है दूसरों से मिली ईज़ा को बर्दाश्त करना ये सांतवें क़िस्म का सब्र है इ़बादात में मशक़्क़त पर सब्र करना से आठवें क़िस्म का सब्र है इस तरह सब्र की बेशुमार क़िस्में है और बातिनी आअ़माल में सबसे सख़्त अ़मल सब्र है व ज़ाहिरी आअ़माल में सबसे मुश्किल अ़मल नमाज़ है।

इरशादे बारी तआ़ला है:-
ऐ ईमान वालो सब्र करो और साबित क़दमी में ज़्यादा मेहनत करो और जिहाद के लिये खूब मुस्तइद (आमादा, तैयार) रहो और अल्लाह का तक़्वा क़ायम रखो ताकि तुम कामयाब हो सको।
(सू०-आले इमरान-3/200)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक तुम लोग मेरे बाद देखोगे कि इन्साफ़ नहीं हो रहा है बल्कि बाअ़ज़ लोगों के साथ तरजीही सुलूक किया जा रहा है तो उस वक़्त तुम सब्र करते रहना यहाँ तक कि तुम लोग मुझे हौज़े कौसर पर पा लेना।
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-7/122-ह०-9735)

सब्र करने के बेशुमार फ़ज़ाइल हैं मसलन अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों के साथ है सब्र करने वालों को उनका अज्र बेहिसाब दिया जायेगा क़यामत के दिन साबिरीन के अज्र को देखकर लोग रश्क करेंगे और क़यामत के दिन साबिरीन के दरजात बुलन्द किये जायेगे व सब्र करने वाले अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हिदायत और रहमत पाते हैं और सब्र करने वालों से अल्लाह तआ़ला मुहब्बत करता है और सब्र जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है व सब्र करने वालों की ख़तायें मिटा दी जाती हैं और सब्र हर भलाई की कुंजी है और अगर सब्र की सिर्फ़ यही फ़ज़ीलत होती कि साबिरीन अल्लाह तआ़ला की माअ़इयत में-

कामयाबी की मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हो जाते हैं तो ये शरफ़ व फ़ज़ीलत ही उनके लिये काफ़ी होती और अल्लाह तआ़ला की मदद व नुसरत जब साबिरीन को अ़ता होती है तो उन पर बड़ी बड़ी मशक़्क़तें और मसाइब आसान हो जाते हैं और उनसे हर मुश्किल दूर हो जाती है और सब्र जिस्मानी बदन पर मशक़्क़तें झेल जाने का नाम है यानी रज़ाऐ इलाही के लिये सख़्त मेहनत व मशक़्क़त बर्दाश्त करे रोज़ा नमाज़ हज वग़ैराह और बदनी अमराज़ और सर्दी व गर्मी हर हाल में अल्लाह तआ़ला की इ़बादत व इताअ़त करना और सब्र नफ़्सानी यानी नफ़्स को बुराईयों से रोकने व भलाईयों पर क़ायम रखने का नाम है यानी कि नफ़्स को हर बुरी व नाजाइज़ ख़्वाहिशात से रोकना व शर्मगाह को बुरी ख़्वाहिशात से रोकना, माल व दौलत की हवस से नफ़्स को बाज़ रखना और कानेअ़ हो जाना और मुसीबत में सब्र व तहम्मुल और नफ़्स को गुरुर व तकब्बुर से बाज़ रखना और ज़बान को बुरे व नापसंदीदा कलिमात से रोकना और गुस्से के वक़्त गुस्से को काबू में रखना वग़ैराह।

मसाइबो आलाम के वक़्त किसी से अपनी तकलीफ़ो मुसीबत और बेक़रारी और बेचैनी का इज़हार करना या अल्लाह तआ़ला की शिकायत करना बेसब्री है बल्कि हर हाल में अपने रब पर तवक्कुल रखना और उसकी इताअ़त से न हटना सब्र है और सब्र एक बेहतरीन व आअ़ला इ़बादत है इन्सान को इस बात पर ग़ौर करना चाहिये कि

जिस पाक ज़ात ने तुझे कसीर नेअ़मतें दी है तो क्या तू उसके लिये थोड़ी सी तकलीफ़ बर्दाश्त नहीं कर सकता और जो शख़्स नेअ़मतों के मिलने के वक़्त अल्लाह तआ़ला से राज़ी व खुश रहता है और तकलीफ़ो मुसीबत के वक़्त अल्लाह तआला से राज़ी नहीं रहता तो ये उसके कमज़ोर ईमान की दलील है और अल्लाह तआ़ला और आख़िरत पर उसका यक़ीन कामिल नहीं है।

हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) ने अपना सारा माल ख़ैरात करके अपने फ़रज़न्द को ज़िब्हा करके नमरुद की आग में खुद को पहुँचा कर सब्र की मिसाल क़ायम की हज़रत अय्यूब (अ़लैहिस्सलाम) ने सख़्त बीमारी बर्दाश्त करके सब्र की मिसाल कायम की हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने कुफ़्फ़ारे मक्का की बेशुमार सख़्तियाँ व अज़ियतें बर्दाश्त की इसके अ़लावा आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुख़्तलिफ़ तकलीफ़ें बर्दाश्त कीं हजरत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने कर्बला के मैदान में अपने बच्चों को अपने सामने भूके प्यासे शहीद होते हुये देखा और खुद भी भूके प्यासे जामे शहादत नोश फ़रमाकर सब्र की मिसाल क़ायम की इसलिये हमें चाहिये कि मसाइबो आलाम के वक़्त इन्हीं हज़रात के वाक़्यात को सामने रखकर सब्र कर लिया करें और जिस तरह नेअ़मत के मिलने पर शुक्र करना लाज़िम है उसी तरह किसी नेअ़मत के ज़ाइल होने पर सब्र करना वाजिब है।

–: दुनिया आज़माइश का घर है :–

इरशादे बारी तआ़ला है:–

और बेशक उन तमाम चीज़ों को जो ज़मीन पर हैं हमने उनको ज़ीनत (व आराइश) बनाया ताकि हम लोगों को आज़मायें कि उनमें से कौन अच्छे अ़मल करता है और बेशक हम उन तमाम चीज़ों को जो ज़मीन पर हैं हम उसे (नेस्त व नाबूद करके) चटयल मैदान बनाने वाले हैं।
(सू०–कह्फ़–18/7,8)

इरशादे बारी तआ़ला है:–

मगर इन्सान (ऐसा है) कि जब उसका रब उसे (राहत व आसाइश देकर) आज़माता है और उसे इ़ज़्ज़त से नवाज़ता है और उसे नेअ़मतें बख़्शता है तो वो कहता है कि मेरे रब ने मुझ पर करम फ़रमाया है लेकिन जब अल्लाह उसे (तकलीफ़ व मुसीबत देकर) आज़माता है और उस पर उसका रिज्क़ तंग कर देता है तो वो कहता है मेरे रब ने मुझे ज़लील कर दिया ये बात नहीं है बल्कि (हक़ीक़त ये है कि इ़ज़्ज़त और मालो दौलत के मिलने पर) तुम यतीमो की क़दर व इकराम नहीं करते और ना ही तुम मिस्कीनो (यानी ग़रीबो व मुहताजों) को खाना खिलाने की (मुआ़शरे में) एक दूसरे को तरग़ीब देते हो और विरासत का सारा माल समेट कर (खुद ही) खा जाते हो (उस

में से मुफ़लिस व तंगदस्त व ग़रीब का हक़ नहीं निकालते हो) यक़ीनन जब ज़मीन पाश पाश करके रेज़ा रेज़ा कर दी जायेगी और आपका रब जलबा फ़रमां होगा और फ़रिश्ते क़तार दर क़तार (उसके हुजूर) हाज़िर होंगे और उस दिन दोज़ख़ पेश की जायेगी तो फिर उस दिन इन्सान की समझ में आ जायेगा मगर (तब) उसे नसीहत फ़ायदा मंद न होगी और वो कहेगा काश हमने अपनी अस्ल ज़िन्दगी के लिये कुछ आगे भेज दिया होता (जो आज हमारे काम आता) सो उस दिन न उसके अ़ज़ाब की तरह कोई अ़ज़ाब दे सकेगा और न उसके जकड़ने की तरह कोई जकड़ सकेगा ऐ इत्मीनान पा जाने वाले नफ़्स तू अपने रब की तरफ़ इस हाल में लौट आ कि तू उसका रिज़ा का तालिब भी हो और उसकी रिज़ा का मतलूब भी हो पस तू मेरे (कामिल) बन्दों में शामिल हो जा और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।
(सू०–फ़ज्र–89/15-30)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और हम ज़रुर बिल ज़रुर तुम्हें आज़मायेंगे कुछ ख़ौफ़ से और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों के नुक़सान से और ऐ हबीब आप उन सब्र करने वालों को खुश ख़बरी सुनादें जिन पर कोई मुसीबत पड़ती है तो वो कहते है बेशक हम अल्लाह तआ़ला ही का (माल) हैं और उसी की तरफ़ पलट कर जाने वाले हैं।
(सू०–बक़राह–2/155,156)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और हमने उन्हें गिरोह दर गिरोह तक़सीम कर दिया (और) उनमें से बाअ़ज़ नेकोकार भी हैं और उनमें से बाअ़ज़ बदकार भी हैं और हमने उनकी आज़माइश इनाअ़मात व मुश्किलात (दोंनों तरीक़ों) से की ताकि वो अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करें। (सू०-आअ़राफ़-7/168)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

(और ऐ मुसलमानो) तुम्हें ज़रुर बिल ज़रुर तुम्हारे अमवाल और तुम्हारी जानों में आज़माया जायेगा। (सू०-आले इमरान-3/186)

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने ज़मीन पर मौजूद तमाम चीज़ों को ज़ीनत और आराइश दी और उसके ज़ीनत देने में हिकमत और मक़सूद ये है कि इसके ज़रिये लोगों की आज़माइश की जाये कि कौन अच्छा अ़मल करता है और कौन बुरा अ़मल करता है ताकि उनके आअ़माल का पूरा पूरा बदला दिया जाये और अच्छे आअ़माल का बदला अच्छा व बेहतर होगा व बुरे आअ़माल का बदला सज़ा व अ़ज़ाब होगा और बिल आख़िर रोज़े क़यामत जो कुछ ज़मीन पर मौजूद है ये सब लपेट दिया जायेगा व दुनिया वीरान कर दी जायेगी और कुछ भी बाक़ी नहीं रहेगा और एक हमवार चटमल मैदान में सब इन्सानों को हिसाबो किताब के लिये जमाअ़ किया जायेगा तो फिर ऐसी फ़ानी दुनिया से दिल लगाना व इससे मुहब्बत व रग़बत

रखना और इसके सबब आख़िरत को भूल जाना व आख़िरत के लिये तैयारी न करना बहुत बड़ी हिमाकत व हलाकत और आफ़त और तबाही व बर्बादी है।

दुनिया की मुहब्बत दूर करने का सबसे उ़म्दाह तरीक़ा ये है कि इस दुनिया की फ़नाय्यत पर ग़ौर करते रहना चाहिये और इन्सान जितना इसमें ग़ौर करता जायेगा उतना ही दुनिया से मुहब्बत कम होती जायेगी और दुनिया की ज़ीनत व आराइश की तरफ़ रग़बत भी कम होती जायेगी और वो जान लेगा कि ज़मीन पर पाई जाने वाली खूबसूरत हसीनो जमील अ़ौरतें व लज़ीज़ अशया, दिल कश मनाज़िर, हरे भरे पेड़ पौधे, खुश मंजर बाग़ात व सोना चांदी और बहती नहरें व झरने, ऊँचे ऊँचे पहाड़ों के दिल खुश मंज़र व दरिया और उसकी मौजें व खूबसूरत मकान और दीगर अशया जो दुनिया की ज़ीनत हैं ये सब फ़ानी और फ़ित्ना हैं और इन्सान की आज़माइश के लिये हैं और ये सब एक दिन ज़ाइल हो जायेंगी व इसकी लज़्ज़तें ना पैद हो जायेंगी तमाम दरिया खुश्क हो जायेंगे और दुनिया की ज़ीनत के तमाम आसार मिट जायेंगे और इसकी नेअ़मतें ज़ाइल हो जायेंगी ये दुनिया की हक़ीक़त है।

जिन लोगों का बातिन दुनिया की मुहब्बत और गुनाहों के मैल कुचैल से आलूदा है तो वो दुनिया की ज़ाहिरी ज़ैबो ज़ीनत की तरफ़ राग़िब होते हैं–

और धोका खाते हैं और वो दुनिया से मवेशियों की तरह फ़ायदा उठाते हैं मगर जब उन्हें मौत आती है तो उन्हें दुनिया की लज़्ज़तों व नेअ़मतों के छूट जाने पर निहायत ग़म व तकलीफ़ होती है

और जो इस दुनिया के बातिन व इसकी हक़ीक़त पर ग़ौर करता है तो वो दुनिया में रहकर अपनी आख़िरत को संवारता है और वो दुनिया से इस तरह फ़ायदा उठाता है कि वो अपनी आख़िरत को बेहतर बनाने के अस्ल मक़सद को हासिल कर लेता है जिसके लिये उसे पैदा किया गया और वो दुनिया को ऐशो आराम की मन्ज़िल नहीं बल्कि दुनिया को राह गुज़र समझता है कि जिस तरह मुसाफ़िर को हालते सफ़र में मेहनतो मशक़्क़त व तकलीफ़ो से दो चार होना पड़ता है इसी तरह वो सफ़रे दुनिया की मेहनतो मशक़्क़त व तकलीफ़ों को बा आसानी उठाता है और उस पर साबिर व शाकिर रहकर अपनी ऐशो आराम वाली आख़िरत की तैयारी में हमा वक़्त लगा रहता है और अपने रब की इताअ़त पर गामज़न रहता है और अपने रब की माअ़रिफ़त के हुसूल के लिये जद्दो जहद करता रहता है ऐसा शख़्स रब की बारगाह में बुलन्द तरीन मक़ाम व बेहतरीन मन्ज़िल में क़याम पज़ीर होगा और हर क़िस्म के ऐशो आराम और दायमी नेअ़मतों व लज़्ज़तों और मसर्रतों में होगा।

➡ हज़रत अबू सईद (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया सर सब्ज़ व शीरी है और अल्लाह तआ़ाला तुम्हें दुनिया में हाकिम बनाने वाला है फिर देखेगा कि तुम कैसे अ़मल करते हो पस ग़ौर से सुनो दुनिया से बचते रहना और औ़रतों से बचते रहना क्योंकि बनी-इसराईल में सबसे पहला फ़ित्ना औ़रतों से शुरु हुआ था। (इब्ने माजा-सुनन-3/297-ह०-4000) (मुस्लिम-सहीह-6/300-ह०-6948)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक दुनिया मीठी सर सब्ज़ व खुशनुमा है जिहाज़ा तुम लोग दुनिया से बचना व औ़रतों से बचना और जो शख़्स इसको हक़ के मुताबिक़ हासिल करता है तो अल्लाह तआ़ाला उसके लिये उसमें बरकत अ़ता फ़रमाता है और बहुत सारे लोग अल्लाह व उसके रसूल के माल में घुसते हैं उसमें जो उनका नफ़्स ख़्वाहिश करता है तो ऐसे लोगों पर क़यामत के दिन आग का अ़ज़ाब होगा।
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-7/250-ह०-10301)
(बैहक़ी-शुअबुल ईमान-7/250-ह०-10304)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अन्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ लोगो अल्लाह की क़सम मुझे तुम्हारे बारे में किसी चीज़ का डर नहीं सिवाये दुनिया की उस ज़ीनत के जो अल्लाह

तअ़ाला तुम्हारे लिये ज़ाहिर करेगा एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया क्या ख़ैर भी शर को लाती है तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ख़ैर तो ख़ैर ही लाती है लेकिन देखो बरसात जो कुछ उगाती है वो ख़ैर है या नहीं लेकिन वो जानवरों को मार डालती या मौत के क़रीब कर देती है सिवाये उन जानवरों के जो कि सिर्फ़ चारा या सब्ज़ा इस क़दर खाते हैं कि उनकी कोखें फूल जाती हैं फिर वो (मज़ीद खाने के बजाये) सूरज का रुख कर लेते हैं और पाखाना या पेशाब करते है और जब पहला खाना हज़्म हो जाता है तब वो दोबारा खाते हैं इसलिये उसमें बरकत डाल दी जाती है इसी तरह जो शख़्स माल को अपने हक़ के मुताबिक़ लेगा और उसको सहीह जगह ख़र्च करेगा और तो उसके लिये उस माल में बरकत दी जाती है और जो शख़्स नाहक़ माल लेगा तो उसके माल में बरकत नहीं होती और वो उस जानवर की तरह है जो खाता है लेकिन सेर नहीं होता। (इब्ने माजा–सुनन–3/295-ह०–3995)
(मुस्लिम–सहीह–2/385-ह०–2421)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि माले दुनिया सर सब्ज़ और मीठा है और मुसलमानो का अच्छा साथी है माल का जो हिस्सा मिस्कीन, यतीम और मुसाफ़िर को दिया वो अच्छा साथी है और जो माल को नाहक़ लेता है वो उस जानवर की तरह

है जो खाता है लेकिन सेर नहीं होता और ये माल उसके ख़िलाफ़ क़यामत के दिन गवाही देगा। (मुस्लिम–सहीह–2/387-ह०–2423)

दुनिया के थोड़े से माल पर कनाअ़त करो क्योंकि मोमिन के लिये दुनिया का थोड़ा सा माल भी काफ़ी है और क़नाअ़त से ज़िन्दगी पुर लुत्फ़ हो जाती है और माल मुसीबत की सवारी है और जो माल राहे खुदा में ख़र्च किया वो क़यामत में तेरे लिये ज़ख़ीरा होगा और जिस माल को दुनिया में तू छोड़ कर मरा उससे दूसरे फ़ायदा उठायेंगे और बेशक अल्लाह तआ़ला ने अपने दोस्तों को माल कम दिया और अपने दुश्मनों को माल देने में कभी बुख़्ल नहीं किया और थोड़ा सा वो माल जो इन्सानी ज़रुरियात के लिये काफ़ी हो वो उस ज़्यादा माल से बेहतर है जो गुनाह और सरकशी का बाइस हो।

जो शख़्स दुनिया के माल से सेर नहीं होता ख़्वाह उसे कितना ही माल मिल जाये और कसीर माल पर भी उसे कनाअ़त नहीं होती बल्कि उसकी कोशिश यही रहती है कि ज़्यादा से ज़्यादा माल जमाअ़ करे ये वो शख़्स है जिसने अल्लाह और उसके रसूल की नसीहत को नहीं समझा और वो माल के फ़ित्ने में मुब्तिला हो गया है और जिस शख़्स को बाक़दरे ज़रुरत माल मिला और उस माल पर वो कानेअ़ यानी उसे कनाअ़त हासिल हो गयी तो वो शख़्स कामयाब हो गया।

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) बयान करते है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया कि दुनिया में तुम इस तरह रहो जैसे कि तुम मुसाफ़िर हो या रास्ता उ़बूर करने वाले हो और जब तू सुबह करे तो अपने दिल में शाम का यक़ीन न कर और जब शाम करे तो दिल में सुबह का भरोसा न कर यानी हो सकता है सुबह से पहले ही तेरी मौत आ जाये और तुम अपना शुमार मुर्दो में करो और मौत आने से पहले नेक आअ़माल करो और तुम नहीं जानते कि कल तुम्हारा नाम क्या होगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/192-ह०–2333)
(बुख़ारी–सहीह–6/42-ह०–6416)
(इब्ने माजा–सुनन–3/351-ह०–4114)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/752-ह०–698)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/586-ह०–6572)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/237-ह०–10245,46,47)

➡हज़रत काअ़ब बिन इयाज़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर उम्मत के लिये एक फ़ित्ना होता है और मेरी उम्मत का फ़ित्ना माल है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/194-ह०–2336)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/252-ह०–10309)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/305-ह०–3223)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–19/179-ह०–404)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तहक़ीक़ कामयाब हो गया वो शख़्स जिसने इस्लाम कुबूल किया और उसे बाक़दरे किफ़ायत (ज़रुरत के मुवाफ़िक़) रिज़्क़ दिया गया और अल्लाह तआ़ाला ने अपने अ़ता कर्दा माल पर उसे क़नाअ़त दे दी तो वो शख़्स कामयाब हो गया।

(मुस्लिम–सहीह–2/389-ह०–2426)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/201-ह०–2348,2349)
(इब्ने माजा–सुनन–3/358-ह०–4138)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/261-ह०–10345)

अल्लाह तबारक व तआ़ाला बन्दों को मालो दौलत और नेअ़मत व इ़ज़्ज़त देकर भी आज़माता है और ये सब चीज़ें न देकर या वापस लेकर भी आज़माता है तो मोमिन व मुख़्लिस और इताअ़त गुज़ार व फ़रमां बरदार बन्दे तो हर हाल मे रब तआ़ाला की रिज़ा पर राज़ी रहते हैं कि नेअ़मत के वक़्त शुक्र और तंगी व मुसीबत के वक़्त वो सब्र करते हैं मगर ग़ाफ़िल व जाहिल का तर्ज़े अ़मल इसके बरअ़क्स होता है कि नेअ़मत व इ़ज़्ज़त के वक़्त वो मुताकब्बिर और खुदपसंदी का शिकार हो जाता है और उस नेअ़मत व इ़ज़्ज़त पर अल्लाह तआ़ाला का शुक्र अदा करने और उसका फ़ज़्ल व एहसान क़रार देने के बजाये उसको अपना ज़ाती हक़ और अपना कमाल समझता है इस तरह वो आज़माइश में नाकाम हो जाता है और गुनाहों का मुरतकिब व अ़ज़ाबे नार का मुस्तहिक़ हो जाता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
वो तो दुनिया की ज़ाहिरी ज़िन्दगी को (ही) जानते हैं और वो लोग आख़िरत की हक़ीक़ी ज़िन्दगी से ग़ाफ़िल और बेख़बर है। (सू०–रुम–30/7)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और बाअ़ज़ लोग ऐसे हैं जो (बिल्कुल दीन के) किनारे पर (खड़े होकर) इबादत करते हैं अगर उन्हें कोई दुनियावी फ़ायदा पहुँचता है तो वो उस (दीन) से मुतमइन हो जाते हैं और अगर उन पर कोई मुसीबत (या आज़माइश) पहुँचती तो वो उसी वक़्त (दीन से) पलट जाते हैं पस वो दुनिया में भी नुक़सान उठाते और आख़िरत में भी नुक़सान उठाते हैं और यही वाज़ेह तौर पर बड़ा नुक़सान है। (सू०–हज–22/11)

दुनिया की नेअ़मतें आख़िरत के मुक़ाबले में इस क़दर कम है जैसे एक क़तरा समुन्दर के मुक़ाबले में हो बल्कि ये भी निस्बत नहीं है क्योंकि क़तरे की समुन्दर की तरफ़ निस्बत मुतनाही की मुतनाही की तरफ़ निस्बत है जबकि दुनिया की आख़िरत की तरफ़ निस्बत मुतनाही की ग़ैर मुतनाही की तरफ़ निस्बत है क्योंकि दुनिया की तमाम नेअ़मतें मुतनाही और महदूद है और आख़िरत की नेअ़मतें ग़ैर मुतनाही और ला महदूद हैं पस अगर किसी शख़्स को दुनिया में कसीर नेअ़मतें मिल जायें और वो आख़िरत की नेअ़मतों से महरुम रहे तो ये उसके लिये बहुत ही बड़ा नुक़सान है और जो

दुनिया की नेअमतों से महरुम रहा और मसाइबो आलाम व आफ़ात में मुब्तिला रहा मगर आख़िरत में उसको जन्नत और उसकी दायमी नेअ़मतें मिल गई तो वो शख़्स कामयाब और बा मुराद हुआ।

जब किसी इसान पर कोई मुसीबत या तंगी या उसको दुनियावी नेअ़मतें न मिलें तो उसको ये नहीं समझना चाहिये कि अल्लाह तअ़ाला उससे नाराज़ है या ये उसके किसी अ़मल का नतीजा है या ये उसकी बद क़िस्मती है बल्कि इसमें अल्लाह तअ़ाला की हिकमत व आज़माइश होती है और अल्लाह तअ़ाला जिस पर चाहता है रिज़्क़ कुशादा कर देता है और जिस पर चाहता है रिज़्क़ तंग कर देता है रब तअ़ाला इस तरह अपने बन्दो को आज़माता है कि कौन उसकी क़ज़ा पर राज़ी है और कौन उसकी अ़ता पर उसका शुक्र गुज़ार है

अल्लाह तबारक व तअ़ाला अपने बन्दों में बाअ़ज़ बन्दों को चुन लेता है जिन पर मसाइबो आलाम की बारिश होती है अगर वो उस वक़्त सब्र व शुक्र पर क़ायम रहें और रब की रज़ा पर राज़ी रहें तो फिर उसे आख़िरत में बेहिसाब अज्र और बेशुमार इनाअ़मात अ़ता होंगे और अल्लाह तअ़ाला ने दुनिया में जिसे मालो दौलत व इ़ज़्ज़त दी और फिर भी वो यादे इलाही से ग़ाफ़िल रहा और अपनी आख़िरत को भूलकर मुताकब्बिर हो गया तो ऐसे शख़्स को आख़िरत में सख़्त हिसाब व सख़्त अ़ज़ाब से दो चार होना होगा।

अल्लाह तबारक व तअ़ाला अपने नेक बन्दो को ज़रुर आज़माता है जैसे हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) को बेशुमार मसाइब व आलाम में गिरफ़्तार करके आज़माया और अल्लाह तअ़ाला बदकारों को भी ऐशो आराम और नेअ़मतें देकर आज़माता है जैसे काफ़िर यज़ीद मलऊ़न को ऐश व इशरत और हुकूमत व दुनियावी कसीर नेअ़मतें दीं तो ये ऐशो इशरत उसके लिये बतौर अल्लाह की अज़माइश व ढील थी और वो दोज़ख़ के सख़्त तरीन अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होगा और हमेशा नारे दोज़ख़ जलता रहेगा इसलिये मुसलमानों को हर हाल में अपनी आख़िरत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये।

दुनियावी हालात व असबाब चाहे जैसे भी हों उस पर कभी ध्यान नहीं देना चाहिये बल्कि हर वक़्त इस तसव्वुर को ज़हन में रखना चहिये कि दुनिया में हमें कितने दिन रहना है बिल आख़िर हमें मरना है और हक़ीक़ी व दायमी ज़िन्दगी में पहुंचना है और आख़िरत की ऐशो इशरत वाली ज़िन्दगी हमेशा के लिये है और दुनियावी तंगी व परेशानी सिर्फ़ थोड़े दिनों के लिये है फिर तो ऐश ही ऐश है अगर हम दुनियावी फ़िक्र को छोड़ दें और अपनी ज़िन्दगी को आख़िरत की ज़िन्दगी का मक़सद बना लें और ताअ़त व इ़बादत और नेक आअ़माल में अपनी ज़िन्दगी सर्फ़ कर दें तो फिर आख़िरत में हमें किसी क़िस्म की कोई परेशानी व तकलीफ़ न होगी और दुनियावी ज़िन्दगी में थोड़ी–

परेशानी उठा लें और सब्र व शुक्र व अहकामाते इलाही की ताअ़मील पर गामज़न रहें ताकि हमारी आख़िरत की दायमी ज़िन्दगी ऐशो इशरत और बेशुमार नेअ़मतों व मसर्रतों में हो इन्सान अपनी ज़िन्दगी का आधा हिस्सा तो रात को सोने में ही गुज़ार देता है बची आधी ज़िन्दगी तो आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी तो फिर कुछ भी नहीं है तो जो शख़्स मालदार व खुशहाल हो तो उसे अपनी ज़िन्दगी के ख़ात्मे से ग़ाफ़िल होना उसके लिये हालाकत व बर्बादी और आफ़त और तबाही है और जो शख़्स तंगदस्त व फ़क़ीर और मुहताज हो तो उसे ये नहीं भूलना चाहिये कि थोड़े दिनों की परेशानी व तकलीफ़ के बाद फिर हमेशा के लिये आराम ही आराम है।

जब इन्सान को अपनी लज़्ज़तों के हुसूल और शहवतों के असबाब मयस्सर होते हैं तो वो अपनी नफ़्सानी तक़ाज़ों को पूरा करने में मशगूल रहता है और उन लज़्ज़तों को तर्क करना और अल्लाह तआ़ला की इ़बादत व इताअ़त की तरफ़ रुजूअ़ करना उसके लिये बहुत मुश्किल हो जाता है और जब इन्सान के पास ऐशो इशरत के सामान न हो और यादे इलाही से ग़ाफ़िल करने वाली चीज़ें न हों तो उसके लिये अल्लाह तआ़ला की इ़बादत व इताअ़त करना आसान हो जाता है और दुनिया के मसाइबो आलाम व रिज़्क़ की तंगी में मुब्तिला शख़्स और इताअ़त गुज़ार, फ़रमां बरदार शख़्स पर अल्लाह तआ़ला का ख़ास फ़ज़्लो करम होता है

बल्कि मुसीबत के वक़्त अल्लाह तआ़ला की बन्दे पर ऐन रहमत होती है जो कि उसे ग़फ़लत से निकाल कर बेदारी की तरफ़ ले जाना चाहती है और रब तआ़ला उसे अपनी आख़िरत संवारने का एक मौक़ाअ़ इनायत फ़रमाता है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जिसके साथ ख़ैरो बरकत और भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे तकलीफ़ व मसाइबो आलाम में मुब्तिला कर देता है।
(बुख़ारी–सहीह–5/422-ह०–5645)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/64-ह०–2907)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान मर्द व औ़रत के जान व माल और औलाद में मुसीबत रहती है यहाँ तक कि वो अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मिलता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं होता। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/230-ह०–2399)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मसाइबो आलाम से दो चार होने वालों को जब अल्लाह तआ़ला अ़ज़ीम सवाब और मरातिब

अ़ता फ़रमायेगा तो दुनिया में आ़फ़ियत व ऐशो आराम में रहने वाले लोग जब उनके सवाब और मरातिब को देखेंगें तो वो तमन्ना करेंगे कि काश दुनिया में मेरी खालें कैंचियों से काटी जातीं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/231-ह०–2402)
(इब्ने अबी शैबा–3/537-ह०-10934)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/602-ह०–6553)

इन्सान दुनियावी नेअ़मतों व राहतों में जितना ज़्यादा मुब्तिला होगा उसी क़दर वो ज़्यादा उनकी मुहब्बत में गिरफ़्तार होगा और मौत के वक़्त जब उन चीज़ों से उसकी जुदाई होगी तो उसको उतना ही ज़्यादा ग़म व तकलीफ़ होगी और दुनिया की नेअ़मतों व लज़्ज़तों व ऐशो इशरत से जिस क़दर जिसका तअ़ाल्लुक़ कम होगा तो मौत के वक़्त उन चीज़ों की जुदाई से उसे उसी क़दर कम तकलीफ़ होगी इसलिये ये समझना ग़लत है कि दुनिया की नेअ़मतों का हुसूल इ़ज़्ज़त व रब तअ़ाला की रिज़ा का सबब है और नेअ़मतों व राहतों का दुनिया में न मिलना ज़िल्लत या रब तअ़ाला की नाराज़गी का सबब है ऐसा नहीं है बल्कि इन दोंनों हालतों में बन्दे के लिये बड़ी आज़माइश है और बाअ़ज़ मुसलमान अपनी जहालत व ला इ़ल्मी के सबब ये गुमान करते हैं कि जब उन्हें कोई नेअ़मत मिले तो वो समझते है ये नेअ़मत उन्हें अपने किसी अच्छे अ़मल या अपनी अ़क़्ल के कमाल के सबब से मिली है बल्कि वो नेअ़मत उसके लिये बड़ी आज़माइश है और अल्लाह तअ़ाला मालो दौलत–

व ऐशो इशरत देकर भी आज़माता है और तंगी व परेशानी देकर भी आज़माता है और जिसके पास जितना ज़्यादा माल होगा आख़िरत में उसका हिसाब उतना ही बड़ा व सख़्त होगा और जिसके पास जितना माल कम होगा उसका उतना ही कम और आसान हिसाब होगा।

इन्सान की ज़िन्दगी में क़दम क़दम पर आज़माइशें हैं और अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को कभी बीमारी कभी मालो दौलत की कमी और कभी मालो ज़र व जायदाद के नुक़सान और कभी किसी चीज़ के ख़ौफ़ और कभी ऐशो इशरत और कभी कसीर मालो दौलत देकर और कभी किसी की जान लेकर भी आज़माता है अल्लाह तआ़ला ने अपने अम्बिया व औलिया को भी आज़माइश में डाला जैसे हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) का आग में डाला जाना और बीवी सय्यदा हाज़रा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) व फ़रज़न्द हज़रत इस्माईल (अ़लैहिस्सालम) को सफ़ा मर्वाह पहाड़ियों के दरमियान तन्हा छोड़ना और हज़रत इस्माईल (अ़लैहिस्सालम) की क़ुर्बानी और हज़रत अय्यूब (अ़लैहिस्सालम) को बीमारी में मुब्तिला करना व हज़रत याक़ूब (अ़लैहिस्सालम) से हज़रत यूसुफ़ (अ़लैहिस्सालम) को जुदा करना व हज़रत आदम (अ़लैहिस्सालम) का जन्नत से निकाला जाना ये सब आज़माइशें और सब्र की मिसालें हैं।

बन्दों की आज़माइश में अल्लाह तआ़ला की

एक हिकमत ये भी होती है कि अहले ख़ैर अहले शर से अ़लैहदा हों और अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दों पर आज़माइश उसे हलाक करने की ग़रज़ से नहीं आती बल्कि उसका मक़सद बन्दे के क़ल्ब व बातिन को पाक व साफ़ करना होता है और मसाइबो आलाम के ज़रिये होने वाली आज़माइश पर सब्र व रिज़ाये इलाही पर राज़ी न रहने वाले लोगों को पांच चीज़ों का नुक़सान होता है यानी जिस चीज़ पर उसने सब्र न किया उस चीज़ से उसका महरुम रहना और दूसरा सब्र न करने के सबब मिलने वाले अज्रो सवाब से महरुम रहना और तीसरा उसके तवक्कुल व उसके ईमान में कमी होना और चौथा सब्र के ज़रिये मिलने वाली रब की रिज़ा से महरुम होना पांचवां रब तआ़ला की नाराज़गी जो सबसे बड़ा नुक़सान है।

और वो शख़्स जिस पर अल्लाह तआ़ला मसाइबो आलाम के ज़रिये आज़माइश डाले उस वक़्त वो सब्र और रब की क़ज़ा पर राज़ी रहे और जिसे मालो दौलत और ऐशो इशरत मिले वो अपने रब की अ़ता पर उसका शुक्र गुज़ार रहे और अपने माल के हुकूक़ अदा करे और राहे खुदा में ख़र्च करे तो इन दोनों क़िस्म के लोग अपनी अपनी आज़माइश में कामयाब हो जाते हैं और इसके बदले मिलने वाले अज्रो सवाब व अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के मुस्तहिक़ हो जाते हैं और मुसीबत व तकलीफ़ से मुक़ाबला करने का सबसे बेहतरीन ज़रिया सब्र है और सब्र ही बन्दे को रब तआला–

की रिज़ा पर राज़ी रहना आसान बनाता है और हर मुसीबत बन्दे के हक़ में अल्लाह की नेअ़मत और उसके लिये भलाई और फ़ायदे का बाइस है क्योंकि हर मुसीबत परेशानी या बीमारी के सबब उसके गुनाह मिटाये जाते है हत्ता कि किसी के कांटा चुंभने के सबब भी उसके गुनाह मिटते हैं और दुनिया में लोगों को जो हादसात व कुदरती आफ़ात से जानी व माली नुकसान होता है उसकी दो क़िस्में होती हैं एक अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आज़माइश व दूसरी गुनाहों का कफ़्फ़ारा होती है जिसके सबब से उसके गुनाहों में तख़फ़ीफ़ की जाती है और वो गुनाहों से बिल्कुल पाको साफ़ हो जाता है या अल्लाह तआ़ला जितना चाहता है उस बन्दे के उतने गुनाह मिटा देता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और जो मुसीबत तुम को पहुँचती है वो तुम्हारी (बद आअ़माली) के सबब पहुंचती है जो तुम्हारे हाथों ने कमाई होती है जबकि बहुत सी ख़ताओं को वो मुआ़फ़ फ़रमां देता है। (सू०-शूरा-42/30)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) से रिवायत है कि जब ये आयते करीमा उतरी कि जो कोई बुराई करेगा उसको उसका बदला मिलेगा (सू०-निसा-123) तो मुसलमानों पर बहुत सख़्त गुज़री कि हर गुनाह के बदले ज़रुर अ़ज़ाब होगा तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ क्योंकि मुसलमान को जो भी तकलीफ़

पहुँचती है तो वो उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाती है यहाँ तक कि जो उसे ठोकर लगती है या उसे कोई काँटा भी चुभता है तो वो उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है।
(मुस्लिम–सहीह–6/203-ह०–6569)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/595-ह०–6525)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/76-ह०–2923)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/409-ह०–1725)

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन की मिसाल लोहे की तरह है कि जब उसे बुख़ार या दीगर तकलीफ़ पहुँचती है तो उसका मैल (गुनाह) ख़त्म हो जाते हैं और पाकीज़गी बाक़ी रह जाती है यानी जिस तरह लोहे को आग में डालने से मैल कुचैल ख़त्म हो जाता है और असल लोहा बच रहता है।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/599-ह०–6544)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) फ़रमाते हैं कि मोमिन की हर बीमारी उसके लिये गुनाहों का कफ़्फ़ारा है
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/701-ह०–1286)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब किसी मुसलमान को जब किसी–

बीमारी से तकलीफ़ पहुँचे या किसी और तरह से तकलीफ़ पहुँचे तो अल्लाह तअ़ाला उसके गुनाहों को गिरा देता है जैसे दरख़्त अपने पत्ते गिराता है। (मुस्लिम–सहीह–6/202-ह०–6559)
(इब्ने अबी शैबा–3/530-ह०-10905)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/593-ह०–6531)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/409-ह०–1724)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/79-ह०–2927)

➡ हज़रत उम्मे अ़ला (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) बयान करती हैं कि मैं बीमार हो गई तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) मेरी अ़यादत के लिये तशरीफ़ लाये और फ़रमाया ऐ उम्मे अ़ला तुम्हें खुशख़बरी हो कि बिला शुबा मुसलमान की बीमारी के ज़रिये से अल्लाह तअ़ाला उसके गुनाहों को ख़त्म कर देता है जैसे कि आग सोने व चाँदी के खोट को निकाल देती है।
(अबू दाऊद–सुनन–3/498-ह०–3092)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने एक मरीज़ की अ़यादत की (जिसको बुख़ार था) तो आपने फ़रमाया कि खुशख़बरी हो बेशक अल्लाह तअ़ाला फ़रमाता है कि ये (बुख़ार) मेरी आग है जो मैं मोमिन बन्दे पर दुनिया में इसलिये मुसल्लत करता हूँ ताकि वो आख़िरत की आग के बदले में उसका हिस्सा हो जाये।
(इब्ने अबी शैबा–3/531-ह०–10907)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है हत्ता कि उसे काँटा भी चुभे तो इसके सबब से अल्लाह तआ़ला उसका दर्जा बुलन्द करता है और उसके गुनाह में तख़फ़ीफ़ करता है (बुख़ारी–सही–5/421-ह०–5640)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/539-ह०–965)
(अबू दाऊद–सुनन–3/498-ह०–3093)
(मुस्लिम–सहीह–6/202-ह०–6561)
(इब्ने अबी शैबा–3/531-ह०-10906)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/596-ह०–6541)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/497-ह०–1278)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बुख़ार को बुरा मत कहो क्योंकि वो दूर करता है इन्सान के गुनाहों को जैसे भट्टी लोहे का मैल दूर करती है। (मुस्लिम–सहीह–6/204-ह०–6570)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/533-ह०-10915)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/605-ह०–6561)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/698-ह०–1279)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/85-ह०–2936)

दुनिया में मुसलमानो को कई क़िस्म की आज़माइशों से गुज़रना पड़ता है जैसे हुकूक़ की अदायगी, जानो माल के नुक़सान और बीमारियाँ–

परेशानियाँ व कई क़िस्म की मुसीबतें व इ़बादात व अ़मलियात और शरई अहकामात की तकमील में मशक़्क़तें और तंगी व फ़राख़ी और मुफ़लिसी व खुशहाली और कारोबार और दीगर नुक़सान वग़ैराह ये सब आज़माइश हैं इन सबके लिये उसे हमेशा तैयार रहना चाहिये और रब की रिज़ा और सब्र व शुक्र पर क़ायम रहते हुये आख़िरत के अज्रो सवाब पर नज़र रखते हुये इन तमाम आज़माइशों में कामयाब होने की हत्तल इमकान कोशिश करनी चाहिये।

इन्ही आज़माइशों के ज़रिये अच्छे बुरे, नेक और बद व ख़रे खोटे में इम्तियाज़ किया जाता है तो ये दुनिया आज़माइशों का घर है ऐशो आराम की जगह नहीं है और ये दुनिया फ़ानी है हमेशगी का घर नहीं तो फिर इन्सान को चाहिये कि इन आज़माइशों वाले और फ़ानी घर से क़तई मुहब्बत व रग़बत न रखें बल्कि दुनिया में अपनी आख़िरत और हमेशगी के घर के लिये हर वक़्त तैयारी करे और उसके लिये कसरत से नेक आअ़माल जमाअ़ करे और दुनिया को सफ़र की जगह और खुद को मुसाफ़िर ख़्याल करे और इन्सान की मन्ज़िल आख़िरत है वहाँ कभी मौत नहीं आयेगी और वो नेक या बद आअ़माल का पूरा पूरा बदला पायेगा अच्छे आअ़माल का बदला बेहतर है और जन्नत है और बुरे आअ़माल का बदला दोज़ख़ है और निहायत सख़्त अ़ज़ाब है।

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों का इम्तिहान लेता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

क्या तुम ये गुमान करते हो कि तुम (यूँ ही बिला आज़माइश) जन्नत में दाख़िल हो जाओगे हालांकि तुम्हें अभी वो हालात पेश ही नहीं आये जो तुमसे पहले ईमान लाने वालों को पेश आये थे उन पर इस क़दर सख़्तियां और मुसीबतें आयीं थीं कि जिन्होंने उनको हिलाकर रख दिया यहाँ तक कि खुद रसूल और ईमान लाने वाले उनके साथी सब पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आयेगी पस आगाह हो जाओ अल्लाह की मदद क़रीब है। (सू०-बक़राह-2/214)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

क्या तुम ये ख़्याल करते हो कि तुम (यूँ ही बिला आज़माइश) जन्नत में दाख़िल जाओगे हालांकि अल्लाह तआ़ला ने अभी जिहाद करने वालों को परखा ही नहीं और न ही सब्र करने वालों को जांचा है। (सू०-आले इमरान-3/142)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

क्या लोग ये ख़्याल करते हैं कि सिर्फ़ उनके इतना कह लेने से कि हम ईमान ले आये है छोड़ दिये जायेंगे और उनकी आज़माइश नहीं की जायेगी और बेशक हमने उन लोगों को भी आज़माया था

जो इनसे पहले थे सो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला उन लोगों को ज़रुर आज़माइश के ज़रिये नुमायां फ़रमां देगा जो दाअ़वा-ए-ईमान में सच्चे हैं और झूठों को भी ज़रुर ज़ाहिर फ़रमां देगा।
(सू०-अ़नकबूत-29/2,3)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
जब वो काफ़िर तुम्हारे ऊपर (वादी की बालाई मशरिक़ी जानिब) से और तुम्हारे नीचे (वादी की मग़रिबी जानिब) से चढ़ आये थे और जब (हैबत से तुम्हारी) आँखें फिर गईं थी और (दहशत से तुम्हारे) दिल हल्क़ूम तक आ पहुँचे थे और तुम अल्लाह तआ़ला के मुताअ़ल्लिक़ तरह तरह के गुमान करने लगे थे इस मौक़ेअ़ पर मोमिनो की आज़माइश की गई और उन्हें निहायत सख़्त झटके दिये गये। (सू०-अहज़ाब-33/10,11)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
तुम्हारे माल व तुम्हारी औलाद महज़ आज़माइश ही है। (सू०-तग़ाबुन-64/15) (सू०-अनफ़ाल-8/28)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
हम ज़रुर तुम्हारी आज़माइश करेंगे यहाँ तक कि तुममें से (साबित क़दमी के साथ) जिहाद करने वालों और सब्र करने वालों को ज़ाहिर कर देंगे और तुम्हारी (मुनाफ़िक़ाना बुजदिली की मख़्फ़ी) ख़बरें भी ज़ाहिर कर देंगे।
(सू०-मुहम्मद-47/31)

अल्लाह तबारक व तआ़ला खुशहाली व बदहाली और तकलीफ़ो मुसीबत के ज़रिये अपने बन्दों का इम्तिहान लेता है जैसे उसने पहले के लोगों को आज़माया और इसमें कोई तग़य्युर व तबद्दुल नहीं होता जो कोई भी उसके दीन व शरीअ़त पर चलने का दाअ़वा करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे ज़रुर आज़माता है अगर वो अल्लाह तआ़ला के हुक्म पर सब्र करता है तो वो अपने दाअ़वे में सच्चा होता है और वो कामिल तरीन सआ़दत की मन्ज़िल को पा लेता है इसी तरह साबिक़ा उम्मतों को भी आज़माया गया वो भी फ़क्र व फ़ाक़ा के शिकार हुये और उन पर मुख़्तलिफ़ बीमारियों ने हमला किया और वो हिला दिये गये और दीगर मसाइबो आलाम व नुक़सानात के ज़रिये उनको आज़माया गया उस हालत ने उनको उस मुक़ाम पर पहुंचा दिया कि अल्लाह तआ़ला की मदद व नुसरत पर यक़ीन रखने के बावुजूद वो अल्लाह तआ़ला के मुताअ़ल्लिक़ बेयक़ीनी का शिकार हो गये हत्ता कि मसाइबो आलाम की शिद्दत व तंगी के बिना पर रसूल व उनके मोमिन साथी पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आयेगी।

पस हर मुसलमान को मुख़्तलिफ़ ज़राये से आज़माया जाता है जब बन्दे पर सख़्तियाँ और मुसीबतें आती हैं और वो साबित क़दमी से उन पर सब्र करता है तब ये इम्तिहान उसके हक़ में इनआ़म और मशक़्क़तें राहतों में बदल जाती हैं और वो क़ल्बी बीमारियों से शिफ़ायाब हो जाता है

➡ हज़रत ख़ब्बाब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) काअ़बा के साये तले अपनी चादर मुबारक से तकिया लगाये बैठे थे हमने आपसे कुफ़्फ़ार की ईज़ाओं के मुताअ़ल्लिक़ शिकायत की और हमने अ़र्ज़ किया आप हमारे लिये मदद क्यों नहीं मांगते और आप अल्लाह तआ़ला से हमारे लिये दुआ़ क्यों नहीं करते तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम लोगों से पहले कुछ लोग ऐसे हुये हैं कि उनके लिये ज़मीन में गढ्ढा खोदा जाता था फिर उसमें उन्हें खड़ा कर दिया जाता था फिर आरा लाया जाता था और उनके सर पर रखकर उनके दो टुकड़े कर दिये जाते और इतनी शदीद तरीन सख़्ती के बावुजूद भी वो दीन से दूर नहीं हुये और न वो कभी दीन के मुन्हरिफ़ हुये और उनके गोस्त के नीचे की हड्डी और पुट्ठों से लोहे की कंघियों से उनके गोस्त नौचे जाते थे मगर ये अज़्ज़ियतें भी उन्हें उनके दीन से न हटा सकीं। (बुख़ारी–सहीह–3/681-ह०-3612)

साबिक़ा उम्मतों की तकालीफ़ व शिद्दत इस इन्तिहां को पहुँच गई कि फ़रमांबरदार मोमिन भी मदद तलब करने में जल्दी करने लगे हालांकि अम्बियाकिराम (अ़लैहिमुस्सलाम) बड़े साबिर होते हैं और उनके असहाब भी मगर इन्तिहाई मुसीबतों के सबब रसूलों ने भी अपनी उम्मत के इसरार पर अल्लाह तआ़ला से फ़रियाद की और इंतिहाई

मुसीबत के बाद भी वो लोग अपने दीनो मज़हब पर क़ायम रहे और कोई मुसीबत उनके हाल को मुताग़य्यर न कर सकी और उनकी फ़रियाद पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला की मदद क़रीब है और इस जवाब से उन्हें तसल्ली दी गई।

ऐ मुसलमानों क्या तुमने ये समझ रखा है कि जन्नत जैसी आअ़ला नेअ़मत तुम्हें यूँ ही मिल जायेगी इसके लिये तुम्हें अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की इताअ़त और नेक अअ़माल करने होंगे और अपनी आज़माइशों में कामयाब होना पड़ेगा और तकलीफ़ो मुसीबत और तंगी के वक़्त साबित क़दमी के साथ सब्र पर क़ायम रहना होगा जबकि हम मुसलमानों पर ऐसी मुसीबतें नहीं आईं जो हमसे पहले के लोगों पर गुज़री हैं और हमें भी मशक़्क़तें बर्दाश्त करनी पड़ेंगी और बहुत सी मुसीबतें उठानी पड़ेंगी और बहुत सी आज़माइशों से गुज़रना पडेगा और बहुत सी कुर्बानियाँ देनी पड़ेंगी।

अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से तुम्हें जो भी आज़माइशें आती हैं तो उस पर बेक़रार व हैरत ज़दा नहीं होना चहिये और न ये सोचना चहिये कि हम तो मुसलमान हैं फिर अल्लाह तआ़ला हमें क्यों तकलीफ़ में मुब्तिला कर रहा है याद रखो कि तुम्हारी वक़्तन फ़वक़्तन आज़माइश की जायेगी और तुम्हें ईमान की कसौटी पर परखा जायेगा।

कि तुम अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये कितनी तकलीफ़ें उठाते हो और कितना सब्र करते हो और कितना साबित क़दम रहते हो और थोड़ी सी तकलीफ़ पर चिल्ला उठते हो या सब्र करते हो और मुसीबत व तंगी के वक़्त बेक़रारी का इज़हार करना ये ईमान वालों को शैवा नहीं है और अगर तुम्हें जन्नत में दाख़िला चाहिये और जन्नत की नेअ़मतों के अगर तुम तालिब हो तो तुम्हें इन आज़माइशों में पूरा उतरना पड़ेगा और हर हाल में साबित क़दमी का मुज़ाहरा करना पड़ेगा।

जो मुसीबतें बन्दे पर नाज़िल होती हैं और जिससे बन्दा दो चार होता है तो मुसीबत के वक़्त ग़म का इज़हार और बेक़रारी के बाइस मुसीबत में इज़ाफ़ा होता है और ग़मो बेक़रारी का इज़हार उस मोमिन बन्दे के लायक़ नहीं जो कि अल्लाह तआ़ला के वाअ़दे के मुताबिक़ दुनियावी व उख़रवी सवाब का तलबगार है और तुम्हारा ये समझ लेना कि तुम किसी मशक़्क़त और अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये कोई तकलीफ़ उठाये बग़ैर जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ऐसा ख़्याल बातिल है क्योंकि जन्नत बुलन्द तरीन मन्ज़िले मक़सूद और निहायत अफ़ज़लो आअ़ला मक़ाम है तो मतलूब व मक़सूद जितना ज़्यादा बड़ा होगा तो वहाँ तक पहुँचाने वाला वसीला और अ़मल भी उतना ही बड़ा होगा पस एक राहत को छोड़कर दूसरी राहत तक पहुँचा जा सकता है और एक नेअ़मत को तर्क करके ही दूसरी नेअ़मत हासिल की जा सकती है और जब

दुनिया की फ़ानी नेअ़मतें बग़ैर मेहनतों मशक़्क़त के हासिल नहीं होती तो जन्नत जैसी नेअ़मत जो कि लाज़वाल और ग़ैर फ़ानी है तो जन्नत बग़ैर मशक़्क़त और बग़ैर नेक आअ़माल के कैसे मिल सकती है।

दुनिया की तकलीफ़ और मुश्किलात जिनका सामना मोमिन बन्दे के करना पड़ता है नफ़्स को उन तकलीफ़ का आदी बना दो ताकि तकलीफ़ के वक़्त सब्र पर साबित क़दम रह सको और हर तकलीफ़ से बे परवाह हो जाओ और हर वक़्त अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के हुसूल के तलबगार रहो ताकि अल्लाह तआ़ला तुम्हें हर तकलीफ़ का दुनिया व आख़िरत में बेहतर अज्र अ़ता फ़रमाये और अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल और उम्मीद रखो क्योंकि अल्लाह तआ़ला की मदद व नुसरत क़रीब है

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बन्दों को मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मसाइब और जान व माल में तरह तरह की मुश्किलात के ज़रिये आज़माता है ताकि उनके ईमान की हक़ीक़त खूब ज़ाहिर हो जाये और मुख़लिस मोमिन और मुनाफ़िक़ में फ़र्क़ ज़ाहिर हो जाये यानी मुसलमानों की ईमानी कुव्वत के मुताबिक़ इम्तिहान लेना ये निज़ामे ईलाही है और इसमें हिकमते इलाही पोशीदा होती है।

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जब अपने किसी बन्दे के साथ ख़ैर और भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे मसाइबो आलाम में गिरफ़्तार कर देता है और जब अल्लाह तआ़ला किसी के साथ शर का इरादा करता है तो रोक रखता है उसके गुनाहों की सज़ा को यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उसकी सज़ा को पूरा फ़रमायेगा और आख़िरत में जिसका सवाब ज़्यादा होगा तो उसे दुनिया में मसाइबो आलाम ज़्यादा उठाने होंगे और बेशक अल्लाह तआ़ला जब किसी को दोस्त रखता है तो उस पर बलायें नाज़िल होती हैं फिर जो राज़ी रहे तक़दीरे इलाही पर तो अल्लाह तआ़ला उससे राज़ी होता है और जो नाराज़ हो तो अल्लाह तआ़ला उससे नाराज़ होता है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/228-ह०-2396)
(इब्ने माजा–सुनन–3/310-ह०-4031)
(मुस्नद बज़्ज़ार–1/1318-ह०-1150)

➡ हज़रत साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया कि लोगों में सबसे ज़्यादा सख़्त आज़माइश किसकी होती है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अम्बिया की फिर दर्जा ब दर्जा मुक़र्रब बन्दों की और आदमी की आज़माइश उसके दीन के मुताबिक़ होती है जो दीन में मज़बूत हो तो सख़्त आज़माइश होती है और अगर दीन में कमज़ोर–

हो तो उसके दीन के हिसाब से आज़माइश की जाती है बन्दे के साथ ये आज़माइश हमेशा रहती है यहां तक कि वो ज़मीन पर इस तरह चलता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं होता।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/229-ह०-2398)
(इब्ने माजा–सुनन–3/306-ह०-4023)
(दारमी–सुनन–2/500-ह०-2825)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/477-ह०–826)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/135-ह०–9775)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/349-ह०–ह०-1150)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/59-ह०–2901)
(इब्ने अबी शैबा–3/537-ह०–10933)

अल्लाह तअ़ाला का ये तरीक़ा रहा है कि वो ईमान वालो को आज़माइश में मुब्तिला फ़रमाता है और हमें हमेशा ये बात नहीं भूलना चाहिये कि इस उम्मत से पहले के लोगों पर इन्तिहाई सख़्त आज़माइश और मुसीबतें आईं हैं और उन लोगों ने अपनी मुसीबतों व आज़माइशों पर सब्र किया और अपने दीन पर इस्तिक़ामत के साथ क़ायम रहे और हम पर भी आज़माइशें और मुसीबतें आयेंगी तो हमें चाहिये कि साबिक़ा लोगों की तरह सब्र व तहम्मुल से काम लें और दीनी अहकामात पर मज़बूती से अ़मल करते रहें।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और कितने ही अम्बिया ऐसे हुये हैं कि जिन्होंने जिहाद किया और उनके साथ बहुत से अल्लाह–

वाले भी शरीक हुये तो न उन्होंने उन मुसीबतों के बाइस जो उन्हें अल्लाह की राह में पहुंची थीं उन मुसीबतों से न हिम्मत हारी और न ही वो कमज़ोर पड़े और न वो झुके और अल्लाह सब्र करने वालों से मुहब्बत करता है।
(सू०–आले इमरान–3/146)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि मैं नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपको शदीद बुखार था तो मैंने अपना हाथ आप पर रखा तो चादर के ऊपर से बुखार की हरारत महसूस हो रही थी मैनें अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह अपको बहुत बुखार है आपने फ़रमाया कि हमारे साथ ऐसा ही होता है आज़माइश भी दो गुना होती है और सवाब भी दो गुना मिलता है मैनें अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह लोगों में सबसे ज़्यादा सख़्त आज़माइश किस पर होती है आपने फ़रमाया अम्बिया पर मैनें अ़र्ज़ किया फिर उनके बाद फ़रमाया नेक लोगों पर और बेशक उनमें से हर एक को मुहताजी के साथ आज़माया जाता है यहाँ तक कि उनमें से बाअ़ज़ के पास एक चादर भी नहीं होती कि वो उसे अपने ऊपर ओढ़ सके और बाअ़ज़ लोगों पर फ़क्र की ऐसी आज़माइश होती है कि ओढ़े हुये चादर के अ़लावा उनके पास कुछ भी नहीं होता और नेक लोग अपनी आज़माइश के वक़्त ऐसे खुश होते हैं जैसे तुम लोग वुसअ़त के वक़्त खुश होते हो।

(इब्ने माजा–सुनन–3/306-ह०-4024)
(अबू याअ़ला–अल मुस्नद–1/577-ह०-1041)
(मुस्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़–11/310-ह०-20626)

➡ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तबारक व तअ़ाला जब अपने किसी बन्दे के साथ ख़ैर और भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे उसके गुनाहों की सज़ा बीमारी या कोई तकलीफ़ की शक्ल में दुनिया में दे देता है ताकि वो रोज़े क़यामत अ़ज़ाब से बच जाये।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/703-ह०–1291)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/61-ह०–2911)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला जब अपने किसी बन्दे के साथ ख़ैर और भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे बीमारी, तकलीफ़, व दीगर मसाइब व आलाम और आज़माइशों में मुब्तिला कर देता है। (बुख़ारी–सहीह–5/422-5645)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/64-ह०–2907)

➡ हज़रत मुस्अ़ब बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं मैने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) कि लोगों में सबसे ज़्यादा तकलीफ़ किस पर आती है

तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अम्बिया पर फिर उन लोगों पर जो उनके मिस्ल हैं और जिन बन्दों पर मुसलसल मुसीबतें आती हैं तो वो बन्दा अपने रब से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उस पर कोई गुनाह न होगा। (इब्ने अबी शैबा–3/537-ह०–10933)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन मर्द व औ़रत पर आज़माइश जारी रहती है उसके नफ़्स, माल व औलाद में हत्ता कि वो अल्लाह तआ़ाला से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उस पर कोई गुनाह न होगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/230-ह०-2399) (सुनन कुबरा–4/598-ह०–6543)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक किसी शख़्स के लिये अल्लाह तआ़ाला की बारगाह में एक मक़ाम लिखा हुआ होता है लेकिन वो अपने आअ़्माल से उस मक़ाम तक नहीं पहुंच पाता तो अल्लाह तआ़ाला उसको मुसलसल आज़माइशों में मुब्तिला कर देता है हत्ता कि वो उन आज़माइशों की वजह से उस मक़ाम को पा लेता है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/95-ह०–1274)
(अत्तरग़ीब–वत्तरहीब–407-ह०–1719)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/65-ह०–2908)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जब मैं किसी मोमिन बन्दे को आज़माइश में मुब्तिला करता हूँ फिर वो मुझसे आज़माइश को ख़त्म करने शिकायत नहीं करता कि मैं उससे आज़माइश को दूर कर दूँ तो मैं उसे उसके ग़म से आज़ादी अ़ता करता हूँ फिर मैं उसके गोस्त को बहुत अच्छे गोस्त में बदल देता हूँ और उसके खून को बेहतर खून में बदल देता हूँ फिर वो बन्दा नये सिरे से आअ़माले सालिहा शुरु कर देता है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/702-ह०–1290)
(बैहक़ी–सुनन–कुबरा–4/600-ह०–6548)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जब किसी मुसलमान को तकलीफ़ या बीमारी में मुब्तिला फ़रमाता है तो फ़रिश्ते को हुक्म फ़रमाता है कि इसके लिये नेक अ़मल लिख दो जो ये तन्दरुस्ती की हालत में किया करता था फिर अगर अल्लाह तआ़ला उसको शिफ़ा अ़ता करे तो उसको गुनाहों से पाको साफ़ फ़रमाता है और अगर उस तकलीफ़ या बीमारी में उसे मौत दे दे तो अल्लाह तआ़ला उसकी मग़फिरत फ़रमाता है और उससे रहमत का मुआ़मला फ़रमाता है।
(इब्ने अबी शैबा–3/537-ह०–10936)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन अपनी जान व माल और औलाद के हवाले से मुसलसल आज़माइश में रहता है हत्ता कि जब वो अल्लाह तआ़ला से मिलता है तो उसके नामा-ए-आअ़माल में कोई गुनाह नहीं होता।
(हाकिम-अल मुस्तदरक-1/699-ह०-1281)
(इब्ने हिब्बान-सहीह-4/69-ह०-2913)
(हाकिम-अल मुस्तदरक-6/317-ह०-7879)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि एक शख़्स ने ये आयत तिलावत की ''कि जो कोई भी बुरा अ़मल करेगा उसे उसका बदला दिया जायेगा'' (सू०-निसा-123) तो वो कहने लगा कि हम तो हलाक हो जायेंगे जब ये बात नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को पहुँची तो आप ने फ़रमाया कि हाँ दुनिया में गुनाहों का बदला आज़माइश (मुसीबत) है जो उसके जिस्म को पहुँचकर तकलीफ़ देती है और इस आज़माइश मुसीबत की वजह से गुनाह मुआ़फ़ होते हैं और ये गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती है (इब्ने हिब्बान-सहीह-4/76-ह०-2923)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब-2/409-ह०-1725)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला

तुम्हें मुसीबत के साथ जाँचता है हालांकि वो तुम्हें अच्छी तरह जानता है और जैसा कि तुम सोने को आग के साथ जाँचते हो तो कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह तअ़ाला की आज़माइश से इस तरह निकल आते हैं जैसे ख़ालिस सोना और ये वो लोग हैं जिनको अल्लाह तअ़ाला ने गुनाहों से बचा कर रखा और कुछ लोग ऐसे हैं जो कि सोने की तरह निकलते है मगर उससे थोड़ा कम और ये वो लोग हैं जो शुकूक वो शुबहात में मुब्तिला हुये और कुछ लोग काले सोने की तरह निकलते हैं ये वो लोग हैं जो फ़ित्ने में मुब्तिला हो गये।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/316-ह०-7878)

गज़वा–ए–अहज़ाब के मौक़ेअ़ पर जब कुफ़्फ़ार और मुशिरक़ीन के लश्कर हमला आवर हुये तब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने मदीना मुनव्वरा के इर्द गिर्द खन्दक खोद ली और कुफ़्फ़ारों ने मदीना मुनव्वरा की घेरा बन्दी की उस वक़्त लोगों की आँखे ठिटक कर रह गईं यानी हैरान खड़े रह जाने की हालत में और मुअ़ामला बहुत सख़्त हो गया कलेजे मुंह को आ गये और रोअ़ब व हैबत की शिद्दत से आँखे ख़ौफ़ व इज़्तिराब (बेक़रारी बैचेनी) की उस इंतिहा को पहुंच गईं कि दिल गोया गलों के पास आ गये और जब लोगों ने निहायत सख़्त हालात देखे तो उनमें से बाअ़ज़ लोग तरह तरह के गुमान करने लगे और मुनाफ़िक़ लोग ये गुमान करने लगे कि अब मुसलमानों का नामो निशान बाक़ी न रहेगा

क्योंकि कुफ़्फ़ार की इतनी बड़ी जमाअ़त सब को फ़ना कर डालेगी और मुसलमानों को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मदद आने और फ़तहयाब होने की उम्मीद थी मगर मुनाफ़िक़ों को नहीं थी कुफ़्फ़ारों की मदीना मुनव्वरा की घेराबन्दी एक माह की मुद्दत तक रही उस वक़्त अह्ले ईमान अ़ज़ीम फ़ित्ने के ज़रिये आज़माये गये और उनको हौलनाक हालात और भूक ज़रिये हिला डाला गया और दहशत नाक हालात में मुसलमानों के सब्र व इख़्लास को आज़माया गया ताकि उनके ईमान व ईक़ान में इज़ाफ़ा हो और मुसलमान ऐसी आफ़ात में भी साबित क़दम रहे।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और जब अह्ले ईमान ने कुफ़्फ़ारों के लश्करों को देखा तो पुकार उठे ये तो वही है जिसका वाअ़दा अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे किया था और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा था और उस वाक़ेअ़े ने उनके ईमान में और इताअ़त गुज़ारी में इज़ाफ़ा कर दिया।
(सू०-अहज़ाब-33/22)

अल्लाह तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों पर बड़ा फ़ज़्ल और एहसान फ़रमाया कि मुसलमानों के दुश्मनों को जो हमला करने आये उन्हें मदीना से भगा दिया और अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ारों को शिकस्त दी अल्लाह तआ़ला ने कुफ़्फ़ारों पर एक तेज़ आंधी भेजी जिससे कुफ़्फ़ारों के तमाम-

खेमे उखड़ गये और उनकी हर चीज़ तहस नहस हो गयी और वो न तो चूल्हे जला सकते थे और न ही वो खाना बना सकते थे अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के लश्करों को भेजा और उन्होंने खेमों की रस्सियाँ काट दीं और उनकी देगचियाँ उलट दी और उनकी जलाई हुई आग बुझा दी और उनके घोड़े बिदकर भागने लगे और अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों में मुसलमानों का ख़ौफ़ व रोअ़ब तारी कर दिया और उस लश्कर के चारों तरफ़ फ़रिश्ते बुलन्द आवाज़ से अल्लाहु अकबर कहने लगे यहाँ तक कि तमाम कुफ़्फ़ारों की मुख़्तलिफ़ जमाअ़तें जो मदीना मुनव्वरा पर हमला आवर हुई थीं सब के सब मैदान छोड़कर भाग गये अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों पर एहसान फ़रमाया और उनकी मदद की और मुसलमान फ़तहयाब हुये।

इरशादे बारी तआ़ला हैः—

ऐ ईमान वालों अपने ऊपर अल्लाह तआ़ला का एहसान याद करो जब कुफ़्फ़ार की फ़ौजें तुम पर आ पहुंची तो हमने उन पर हवा और फ़रिश्तों के लश्करों को भेजा जिन्हें तुमने नहीं देखा और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे खूब देखने वाला है। (सू०—अहज़ाब—33/9)

सब्र करना बड़ी हिम्मत के कामों में से है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
(ऐ मुसलमानों) तुम्हें ज़रुर बिल ज़रुर तुम्हारे अमवाल और तुम्हारी जानों में आज़माया जायेगा और तुम ज़रुर सुनोगे उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और मुशरिकों से भी दुख देने वाली बहुत सी बातें सुनोगे और अगर तुम सब्र करते रहो और तक़्वा इख़्तियार किये रखो तो ये बड़ी हिम्मत के कामों में से है।
(सू०-आले इमरान-3/186)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और यक़ीनन जो शख़्स सब्र करे और मुआ़फ़ कर दे तो बेशक ये बुलन्द हिम्मत के कामों में से है। (सू०-शूरा-42/43)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और जो तकलीफ़ तुझे पहुँचे उस पर सब्र कर बेशक ये बड़ी हिम्मत का काम है।
(सू०-लुक़मान-31/17)

अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इताअ़त व फ़राइज़ और वाजिबात की अदायगी में दरपेश आनी वाली मुश्किलें और मेहनत व मशक़्क़त में-

बन्दे के लिये आज़माइश होती है और दुनियावी ज़िन्दगी में कई मुआ़मलात में होने वाले नुक़सानात और जानी व माली नुक़सानात और ग़मो तकलीफ़ और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बीमारियाँ व परेशानियाँ और मुसीबतों में बन्दे की आज़माइश की जाती है तंगी व फ़राख़ी दोनों हालतों में बन्दे को आज़माया जाता है कि वो सब्र व शुक्र पर क़ायम रहता है या नहीं और इन हालतों में वो कैसे अ़मल करता है और बन्दे को हर वक़्त हर हालात में अपने इम्तिहान के लिये तैयार रहना चाहिये और हर क़िस्म की मुसीबत व परेशानी में सब्र पर साबित क़दम रहना चाहिये और फ़राख़ी व राहतो सुकून और नेअ़्मतों के मिलने के वक़्त शाकिर रहना चाहिये और अल्लाह तआ़ला पर कामिल तवक्कुल रखना चाहिये और दिलों में खौफ़े खुदा रखना चाहिये और तक़्वा व परहेज़गारी और अल्लाह व रसूल की इताअ़त पर गामज़न रहना चाहिये ताकि बन्दा अपने इम्तिहान में कामयाब हो जाये और उसे दुनिया व आख़िरत की सआ़दतें हासिल हों और वो जन्नत व उसकी दायमी नेअ़मतों और अज्रे अ़ज़ीम का मुस्तहिक़ हो जाये।

बन्दे की आज़माइश में एक हिकमत ये होती है कि अल्लाह तआ़ला अपने मोमिन बन्दों के साथ जब भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उनके लिये तकलीफ़ो मुसीबत को उनका मुक़द्दर कर देता है और जो बन्दा सब्र करे और अल्लाह तआ़ला पर भरोसा रखे तो अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों–

के दरजात बुलन्द फ़रमाता है और उनकी बुराईयों को मिटा देता है ताकि उनके ईमान में ईज़ाफ़ा हो और उनके ईक़ान यानी यक़ीन की तकमील हो और इसमें अल्लाह तबारक व तआ़ला की हिकमत ये होती है कि मोमिन व दीगर लोगों के दरमियान इम्तियाज़ वाक़ेअ़ हो जाये और अपनी आज़माइश में जो लोग खरे उतरते हैं और हर मुसीबत व तकलीफ़ में जो लोग सब्र करते हैं वो बाइज़्ज़त और बुलन्द हिम्मत वाले हैं और ये बात सिर्फ़ उन लोगों को हासिल होती है जो लोग सब्र करते हैं और इस बात से सिर्फ़ वो लोग बहरावर होते है जो नसीब वाले हैं।

नापसंदीदा बातों को बर्दाश्त करने को सब्र कहते हैं हालांकि ये बहुत मुश्किल अम्र है मगर ना मुम्किन नहीं है और सब्र के ज़रिये दुनियावी तकलीफ़ो परेशानी कम हो जाती है और तक़्वा उख़र'वी तकलीफ़ो परेशानी को दिफ़ाअ़ करता है।

➡ हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और आपके सहाबाकिराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) की ये आदत रही है कि वो बुत परस्तों और यहूदियों की ईज़ा देने वाली हरकात और बातों को मुआ़फ़ कर देते थे व उनकी ईज़ा रसानी पर सब्र करते थे जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हुक्म दिया था। (बुख़ारी–सहीह–4/519-ह०–4566)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

(ऐ हबीब) पस आप सब्र किये जायें जिस तरह (दूसरे) आ़ली हिम्मत पैग़म्बरों ने सब्र किया था। (सू०-आहक़ाफ़-46/35)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और नेकी और बदी बराबर नहीं हो सकती और बुराई को बेहतर (तरीक़े) से दूर किया करो सो नतीजातन वो शख़्स जो आपसे अ़दावत रखता था वो आपका ख़ैर ख़्वाह और दोस्त हो जायेगा। (सू-फुस्सिलत/हामीम सज्दा-41/34)

जब बन्दे पर कोई परेशानी आती है तो नफ़्स उससे कहता है कि मैंने कौन सा गुनाह किया था कि अल्लाह तआ़ला ने मेरे साथ ऐसा क्यों किया तब बन्दे का अल्लाह तआ़ला के साथ तवक्कुल व यक़ीन कमज़ोर होता है और वो अल्लाह तआ़ला की शिकायत व शिकवा करता है और उसका सब्र व शुक्र कमज़ोर होता है तो अल्लाह तआ़ला की बन्दगी भी कमज़ोर हो जाती है और वो अल्लाह तआ़ला से दूर हो जाता है और तंगी व तकलीफ़ खुशहाली से निहायत क़रीब है और मौत हयात से निहायत क़रीब है और जब तक इन्सान सब्र के कढ़वे नुस्ख़े को न पिये वो अज्रो सवाब का मीठा फल कभी हासिल नहीं कर सकता।

बन्दे को जो मुसीबतें पहुँचती हैं वो उसके गुनाहों की वजह से होती हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और जो मुसीबतें तुमको पहुँचती हैं तो उस (बद आअ़माली) के सबब से (पहुँचती) हैं जो तुम्हारे हाथों ने कमाई होती हैं हालांकि बहुत से गुनाहों को वो दर गुज़र फ़रमां देता है (सू०-शूरा-42/30)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
(ऐ इन्सान अपनी तरबियत यूँ कर कि) जब तुझे कोई भलाई पहुँचे तो (समझ कि) ये अल्लाह की तरफ़ से है (उसे अपने हुस्ने तदबीर की तरफ़ मन्सूब न कर) और जब तुझे कोई बुराई पहुँचे तो समझ कि) वो तेरी अपनी तरफ़ से है (यानी उसे अपनी तरफ़ मन्सूब कर) और (ऐ महबूब) हमने आपको सब इन्सानों के लिये रसूल बनाकर भेजा है और आपकी रिसालत पर अल्लाह गवाही में काफ़ी है। (सू०-निसा-4/79)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
(फ़रमादें) ये मुसीबत तुम्हारी अपनी ही लाई हुई है बेशक़ अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है।
(सू०-आले इमरान-3/165)

दुनिया में मुसलमानों को जो तकलीफ़ें और मुसीबतें पहुँचती हैं तो अक्सर उनका सबब उनके

गुनाह होते हैं और उन तकलीफ़ों व मुसीबतों को अल्लाह तआ़ला उनके गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर देता है और कभी मोमिन की तकलीफ़ में उसकी आज़माइश की जाती है और कभी मोमिन की तकलीफ़ उसके दरजात की बुलन्दी के लिये होती है और मुसलमानों पर लाज़िम है कि वो अपनी मुसीबत के वक़्त बेसब्री और शिकवा शिकायत का मुज़ाहरा न करें बल्कि अपने गुनाहों का कफ़्फ़ारा या फिर आज़माइश तसव्वुर करें और सब्र व शुक्र से काम लें और किसी मुसीबत का कोई इलाज नहीं है सिवाये उस पर सब्र करने के

➡हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बन्दे को जो भी छोटी या बड़ी मुसीबत पहुँचती है वो किसी गुनाह की वजह से पहुँचती है और जो गुनाह अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ फ़रमा देता है वो उससे बहुत ही ज़्यादा होते हैं फिर हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ये आयत तिलावत फरमाई ‘‘और जो मुसीबत तुमको पहुँचती है वो तुम्हारे (बद आअ़मालों के) सबब से पहुँचती है जो तुम्हारे हाथों ने कमाई होती है हालांकि बहुत सी (कोताहियों) को वो दर गुज़र फ़रमा देता है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/801-ह०-3252)

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से मर‘वी है कि सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कोई चीज़ उ़म्र को बढ़ा नहीं सकती सिवाये नेकी के और कोई चीज़ तक़्दीर को बदल नहीं सकती सिवाये दुआ़ के और मर्द अपने गुनाहों की वजह से रिज़्क़ से महरुम कर दिया जाता है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/306-ह०-4022)

➡ हज़रत हसन बसरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया लकड़ी की फ़ांस का लगना, क़दम का ठोकर खाना, रग का फ़ड़कना किसी गुनाह की वजह से होता है और जो गुनाह अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ फ़रमा देता है वो उससे कहीं ज़्यादा होते हैं।
(कंजुल उ़म्माल–2/338-ह०-8670)

➡ किसी नबी ने अपने रब के हुजूर अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब तेरा एक बन्दा तुझ पर ईमान रखता है और तेरी फ़रमां बरदारी में नेक अ़मल करता है फिर भी तू उससे दुनिया को रोकता और उसे मसाइब में मुब्तिला कर देता है और दूसरी तरफ़ तेरा एक बन्दा जो तेरा मुन्किर है और तेरी ना–फ़रमानी के आअ़माल करता है फिर भी तू उससे मसाइब को दूर रखता है और दुनिया को उसके सामने ला रखता तो अल्लाह तआ़ला ने उस नबी की तरफ़ वही फ़रमाई कि बेशक तमाम बन्दे और दुनिया मेरी है और हर चीज़ तस्बीह व तहलील और तकबीर करती है और जहाँ तक मेरे मोमिन

बन्दे का तअ़ाल्लुक़ है तो उससे गुनाह भी होते हैं तो मैं उससे दुनिया दूर रखता हूँ और उस पर मुसीबतें डालता रहता हूँ हत्ता कि जब वो मेरे पास आये तो मैं उसे उसकी नेकियों का बदला दूँ और मेरा काफ़िर बन्दा तो उसकी कुछ नेकियाँ भी होती हैं तो मैं उससे मुसीबतें दूर करता हूँ और दुनिया उसके सामने ला रखता हूँ यहाँ तक कि जब वो मेरे पास आये तो मैं उसे उसके गुनाहों का बदला दूँ। (कंजुल ड़म्माल–2/337-ह०-8662)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला जब किसी बन्दे को भलाई देना चाहता है तो उसे उसके गुनाहों की सज़ा जल्द देता है और अल्लाह तआ़ाला जब किसी बन्दे को बुराई में ढील देना चाहता है तो उसके गुनाहों की सज़ा को रोके रखता है यहाँ तक कि क़यामत के दिन उसे पूरी पूरी सज़ा देगा। (कंजुल ड़म्माल–2/337-ह०-8664) (मुस्नद अहमद–6/914-ह०-16929)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) लोगों से बैअ़त ले रहे थे कि उनमें एक शख़्स लहीम शहीम (तन्दरुस्त) जिस्म वाला था आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उससे पूछा कि तुझे कोई तकलीफ़ हुई है उसने कहा कभी नहीं फिर आपने

फ़रमाया कि तेरी औलाद में उसने कहा नहीं फिर आपने फ़रमाया तेरे घर वालों में उसने कहा नहीं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ना पसंदीदा शख़्स वो है जो ख़बीस व सरकश हो और जिसे माल बदन औलाद और अह्ल में कोई मुसीबत न पहुँची हो। (कंजुल उ़म्माल–2/338-ह०-8668)

➡ हज़रत मुजाहिद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि बन्दे को जो तकलीफ़ पहुँचती है वो उसके गुनाहों की वजह से पहुँचती है जो कि उसने कमाये होते हैं और जिस गुनाह का बदला अल्लाह तआ़ला दुनिया में दे दे तो फिर अल्लाह तआ़ला सबसे बेहतर इंसाफ करने वाला है कि वो अपने बन्दे को दोबारा सज़ा न देगा जिस गुनाह की सज़ा अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे को दुनिया में दे दे और जिन गुनाहों को अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ फ़रमादे तो अल्लाह तआ़ला उन गुनाहों की सज़ा नहीं देता। (कंजुल उ़म्माल–2/338-8671)

➡ हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब ये आयत नाज़िल हुई कि जो कोई बुराई करेगा तो उसे बदला मिलेगा (निसा–123) तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह इसका मतलब तो ये हुआ कि हर ग़लत अ़मल की सज़ा मिलेगी पस आप–

(सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ाला तुझे मुआ़फ़ फ़रमाये ऐ अबू बक्र क्या तुम बीमार नहीं होते क्या तुम कभी रंजीदा और दुखी नहीं होते और क्या तुम तकलीफ़ और थकन का शिकार नहीं होते हो और क्या तुम पर आज़माइश और मुसीबत नहीं आती तो हज़रत अबू बक्र ने कहा क्यों नहीं आती है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया यही वो सज़ा है जो तुम्हें दुनिया में ही दे दी जाती है।
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-7/141-ह०-9805)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मोमिन को उसके गुनाहों की सज़ा दुनिया में ही दे दी जाती है जो भी मुसीबत हो ख़्वाह उसकी जान में हो या उसके माल में हो और उसमें भी जो भी उसे तकलीफ़ पहुँचे जैसे उसे बुख़ार हो जाता है या माल की तंगी होती है हत्ता कि कोई माअ़मूली सी पूँजी जिसको इंसान रखकर भूल जाता है और फिर परेशान होता है हत्ता कि बन्दा अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाता है जैसे सोना भट्टी में से निकलता है।
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-7/142-ह०-9806,9809)

➡ हज़रत क़तादा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो कुछ मुसीबत तुम्हें पहुँचती है वो तुम्हारे अपने आअ़्माल की वजह से पहुँचती है और बहुत सारे गुनाहों को तो अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ फ़रमा देता है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/144-ह०-9815)

अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बन्दों को आगाह फ़रमाता है कि बन्दों को उनके जिस्मों व उनके माल, औलाद व उनकी महबूब व अ़ज़ीज़ चीज़ों में जो भी कोई मुसीबत पहुँचती है उसका सबब उनके हाथों से कमाई हुई बुराईयाँ होती हैं या फिर उनकी आज़माइश होती है और अल्लाह तबारक व तआ़ला कभी भी अपने बन्दों पर जुल्म नहीं करता बल्कि खुद बन्दे अपने आप पर जुल्म के मुरतकिब होते हैं क्योंकि 'अगर अल्लाह तआ़ला लोगों को उन आअ़्माले बद के बदले जो उन्होंने कमा रखे हैं अ़ज़ाब की गिरफ़्त में लेने लगे तो वो इस ज़मीन की पुश्त पर किसी चलने वाले को न छोड़े मगर वो मुक़र्रर वक़्त तक मुहलत देता है फिर जब मुक़र्रर वक़्त आ जाता है तो अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को खूब देखने वाला है'।
(सू०–फ़ातिर–35/45)

इन्सान दुनिया में बेबस और आ़जिज़ है और अल्लाह तआ़ला जो हुक्म हम पर नाफ़िज़ करता है हम उसे रोकने की ताक़त नहीं रखते और अल्लाह तआ़ला के सिवा हमारा कोई दोस्त नहीं जो हमारी मदद और सरपस्ती कर सके और हमें

फ़वाइद अ़ता करे और हमारी परेशानियों को दूर कर सके अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) पर मुख़्तलिफ़ मसाइब आये वो मसाइब उनके ईमान पर इस्तिक़ामत का इम्तिहान होता था कयोंकि नबी मासूम होता है और अम्बिया किराम पर मसाइब उनके दरजात की बुलन्दी के लिये होते हैं या फिर किसी हिकमत की वजह से होते हैं और अ़ाम बन्दों में किसी को गुनाहों की सज़ा दुनिया में दी जाती है और किसी को आख़िरत में दी जायेगी और बाअ़ज़ को कुछ गुनाहों की सज़ा दुनिया में दी जाती है और कुछ गुनाहों की सज़ा आख़िरत में दी जायेगी और अल्लाह तअ़ाला जिसके लिये चाहता उसके सब गुनाहों की सज़ा दुनिया में ही देता है और उस पर कोई गुनाह बाक़ी नहीं रहता फिर आख़िरत में उसे उसकी नेकियों का बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमायेगा।

अल्लाह तबारक व तअ़ाला अपने बन्दों में बाअ़ज़ बन्दों को मसाइब के ज़रिये आज़माता है कि अपने ईमान में कितने मज़बूत और मसाइब के वक़्त सब्र व शुक्र पर साबित क़दम रहते हैं या नहीं और इन सब सूरतों में अल्लाह तअ़ाला की हिकमत होती है।

➡हज़रत मुस्अ़ब बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है फ़रमाते हैं कि मैने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह लोगों में सबसे ज़्यादा तकलीफ़ किस पर आती है तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह–

वसल्लम) ने फ़रमाया कि अम्बियाकिराम पर फिर उन लोगों पर जो इनके मिस्ल हैं और जिन बन्दों पर मुसलसल मुसीबतें आती हैं तो वो बन्दा अपने रब से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उस पर कोई गुनाह न होगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/229-ह०–2398)
(इब्ने माजा–सुनन–3/306-ह०–4023)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/595-ह०–6534)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/135-ह०–9775)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/59-ह०–2901)
(मुस्नद–अल बज़्ज़ार–3/349-ह०–1150)
(इब्ने अबी शैबा–अलमुसन्निफ़–3/537-ह०–10933)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मोमिन और मोमिना की आज़माइश जारी रहती है उसकी जान व माल और औलाद में यहाँ तक कि वो अल्लाह तआ़ला से इस हाल में मिलेगा कि उस पर कोई गुनाह न होगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/230-ह०–2399)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/598-ह०–6543)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/699-ह०–1281)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/69-ह०–2913)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को बीमारी देकर आज़माता है यहाँ–

तक कि उसके तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं और मोमिन की हर बीमारी उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा होती है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/701-ह०–1286)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जिसके साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे उसके गुनाहों की सज़ा बीमारी या कोई और तकलीफ़ की शक्ल में दुनिया में ही दे देता है ताकि वो रोज़े क़यामत अ़ज़ाब से बच जाये। (हाकिम–अल मुस्तदरक–1/703-ह०-1291)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/61-ह०-2911)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे उसके गुनाहों की सज़ा दुनिया में देता है और अल्लाह तआ़ला जिस बन्दे के साथ बुराई का इरादा फ़रमाता है तो उसके गुनाहों की सज़ा को क़यामत के दिन के लिये रोक रखता है यानी उसे दुनिया में सज़ा नहीं देता बल्कि उसके गुनाहों की सज़ा उसे आख़िरत में देगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/2285-ह०-2396)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने एक

मर्तबा फरमाया कि क्या मैं तुमको उस आयत की ख़बर न दूँ जो कि अल्लाह तआ़ला की किताब में सबसे अफ़ज़ल है जो हमें रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने बताई है वो आयत ये है 'और जो मुसीबत तुमको पहुंचती है वो तुम्हारे हाथों ने कमाई होती है हालांकि बहुत से गुनाहों को वो दर गुज़र फ़रमा देता है' (सू०'शूरा-42/30) की तफ़्सीर में से बताया कि ऐ अ़ली लोगों पर जो बीमारी आती है या तकलीफ़ या आज़माइश पेश आती है तो वो उनकी करतूतों की वजह से होती है और अल्लाह तआ़ला बहुत ज़्यादा करीम है वो दोबारा उस गुनाह की सज़ा नहीं देगा जिस गुनाह की सज़ा वो दुनिया में देता है और अल्लाह तआ़ला जिन गुनाहों को दुनिया में मुआ़फ़ फ़रमां देता है तो वो मुआ़फ़ करने के बाद उन गुनाहों की सज़ा नहीं देगा।

(मुस्नद अहमद-1/337-ह०-649)
(अबू यआ़ला-अल मुस्नद-1/380-ह०-604)

➡हज़रत हसन बसरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं हज़रत इमरान बिन हुसैन किसी जिस्मानी बीमारी में मुब्तिला हो गये उन्होंने कहा मेरा यही गुमान है कि ये बीमारी मेरे किसी गुनाह के सबब है और जिन गुनाहों को अल्लाह तआ़ला मुआ़फ फ़रमां देता है वो बहुत सारे हैं और फिर ये आयत तिलावत की ' और जो मुसीबत तुमको पहुँचती है वो उस बद आअ़माली के सबब से पहुँचती है जो तुम्हारे हाथों ने कमाई होती है और

बहुत सी कोताहियों को वो दर गुज़र फ़रमा देता है'। (सू०-शूरा-42/30)
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-12/253-ह०-9356)

पस अहादीस और आसार से ये वाज़ेह हुआ कि अ़ाम मोमिन बन्दों पर दुनिया में जो मसाइब आते हैं तो वो उनके गुनाहों का कफ़्फ़ारा होते हैं या फिर मसाइबो आलाम और माल व असबाब के ज़रिये उनकी आज़माइश की जाती है और नाबालिग़ बच्चों पर जो मसाइब आते हैं ये उनके वालिदैन के अज्रो सवाब का बाइस बनते हैं और कुफ़्फ़ारों पर जो मसाइब आते हैं वो उनके बाअ़ज़ गुनाहों की सज़ा होती है और बाअ़ज़ गुनाहों की सज़ा अल्लाह तअ़ाला उनको आख़िरत में दोज़ख़ में दाख़िल करके देगा क्योंकि कुफ़्फ़ार की तमाम नेकियों का बदला अल्लाह तअ़ाला दुनिया में ही दे देता तो आख़िरत में कुफ़्फ़ारों के पास सिर्फ़ गुनाह होंगे नेकियाँ न होगी और मुसलमानों को उनकी कुछ नेकियों का बदला दुनिया में अल्लाह तअ़ाला अ़ता फ़रमाता है और बाक़ी नेकियों का बदला आख़िरत में अ़ता फ़रमायेगा।

मुसलमान को जो दुनिया में भलाई नसीब होती है वो अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ से होती है क्योंकि उसके सिवा कोई भी मुसलमान को ख़ैर और भलाई नहीं पहुँचा सकता वही है जो ख़ैर और भलाई से नवाज़ता है और उसके असबाब पैदा करके उसके हुसूल को आसान बनाता है।

और जो भी बुराई पहुँचती है वो उसकी अपनी तरफ़ से होती है और बन्दे को जो भी नेअ़मत मयस्सर आ जाये तो उसे अपना कमाल न जाने बल्कि अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा नेअ़मत और उसका फ़ज़्लो करम तसव्वुर करे ये बारगाहे इलाही का अदब है कि हर ख़ैर और भलाई को अल्लाह तबारक व तआ़ला की तरफ़ मन्सूब करे

और शर व बुराई को अपने नफ़्स की तरफ़ मन्सूब करे और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जो नेअ़मत, राहत, वुसअ़त, फ़राख़ी और खुशी मिले उस पर अल्लाह तआ़ला शुक्र अदा करे क्योंकि वो अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से मिलती है और जो तकलीफ़ो मुसीबत बन्दे पर नाज़िल हो उस पर सब्र करे क्योंकि वो उसके बद आअ़मालों की वजह से होती है या फिर उसकी आज़माइश के लिये होती है और सब्र के बाइस बन्दा अज्रो सवाब का मुस्तहिक़ हो जाता है और सब्र करने के सबब उसकी तमाम तकलीफ़ो मुसीबत भी दूर हो जाती है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैं अपने बन्दों में से जिसे बख़्शना चाहता हूँ तो उसे दुनिया से उस वक़्त तक नहीं उठाता जब तक कि मैं उसकी बुराईयों व गुनाहों को जिस्मानी मर्ज़ के ज़रिये या रोज़ी की तंगी के

ज़रिये या उसको पहुंचने वाले मसाइबो आलाम के ज़रिये से मिटा न दूं और अगर फिर भी उसकी बुराईयों व गुनाहों में से कुछ बाक़ी रह जाये तो मैं उस पर नज़अ़ का वक़्त सख़्त कर देता हूं यहाँ तक कि जब वो मुझसे मिलता है तो उसके पास कोई बुराई और गुनाह बाक़ी नहीं रहता

और मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम मैं अपने बन्दों में से जिसे बख़्शना नहीं चाहता हूँ तो उसे दुनिया से उस वक़्त तक नहीं उठाता जब तक कि मैं उसके अच्छे अ़मल का बदला उसे दुनिया में ही न दे दूं और मैं उसे उसकी नेंकियों का बदला अच्छी सेहत की शक्ल में या खुशियों वा राहतों या वुसअ़ते रिज़्क़ की शक्ल में अ़ता करता हूं और अगर उसकी नेकियों में से भी कुछ बच जाये तो मैं उस पर नज़अ़ का वक़्त आसान कर देता हूँ यहाँ तक कि जब वो मुझे मिलता है तो उसके पास कोई नेकी बाक़ी नहीं रहती।

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उस बदन में कोई ख़ैर नहीं कि जिसमें कोई बीमारी न पहुँचे और उस माल में कोई बेहतरी नहीं कि जिस माल में हादसात से कोई नुक़सान न पहुँचे। (कुर्रातुल अबसार–90,92)

अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई भी मुसीबत को दूर नहीं कर सकता

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचाये तो उसके सिवा कोई उसे दूर नहीं कर सकता और अगर वो तुम्हारे साथ भलाई का इरादा फ़रमाये तो कोई उसके फ़ज़्ल को रोक नहीं सकता और वो अपने बन्दों में से जिसको चाहता है अपना फ़ज़्ल पहुँचाता है और वो बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है।

(सू०-यूनुस-10/107)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और अगर अल्लाह तुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाये तो उसके सिवा उसे कोई दूर करने वाला नहीं और अगर वो तुझे कोई भलाई पहुँचाये तो वो हर शैः पर खूब क़ादिर है और वो अपने बन्दों पर ग़ालिब है और बड़ी हिकमत वाला ख़बरदार है।

(सू०-अनआ़म-6/17,18)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

वो कौन है जो बेक़रार शख़्स की दुआ़ को कुबूल फ़रमाता है जब वो उसे पुकारे और तकलीफ़ दूर फ़रमाता है और तुम्हें ज़मीन में (पहले के लोगों का) वारिस व जानशीन बनाता है क्या अल्लाह-

के सिवा कोई और माअ़बूद है तुम लोग बहुत ही कम नसीहत कुबूल करते हो। (सू०–नम्ल–27/62)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और जब मैं बीमार हो जाता हूँ तो वही मुझे शिफ़ा देता है फिर वही मुझे दोबारा ज़िन्दा करेगा। (सू०–शुअ़रा–26/80,81)

अल्लाह तबारक व तआ़ला जिसके साथ वुसअ़त व आसानी का जब इरादा फ़रमाता है तो उसके रिज़्क़ को कोई भी रोक नहीं सकता वही तकलीफ़ो परेशानी और मुसीबतों को दूर फ़रमाता है और वही मदद व नफ़अ़ पहुँचाने और ग़म व तकलीफ़ो मुसीबत को दूर करने के ज़राये और असबाब पैदा करता है और तमाम कायनात उसी की मुहताज है वही हर शैः पर क़ादिर है इसलिये बन्दों को उसी की तरफ़ रग़बत और उसी का खौफ़ और उसी पर भरोसा करना चाहिये और वही अपने बन्दों के गुनाहों को मुआ़फ़ करने वाला बड़ा मेहरबान है।

नफ़अ़ व नुक़सान अल्लाह तआ़ला के क़ब्ज़े कुदरत में है वही अ़ता करता है और वही महरुम करता है और जब कोई तकलीफ़ मसलन कोई बीमारी या माल की तंगी वग़ैराह तो उसके सिवा कोई भी दूर नहीं कर सकता है तमाम मख़्लूक़ मिलकर भी कोई फ़ायदा किसी को नहीं पहुँचा सकती सिवाये इसके जो अल्लाह तआ़ला ने लिख

दिया है तमाम मख़्लूक़ मिलकर किसी को कोई भी नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो अल्लाह तआ़ला के इरादे के बग़ैर नहीं पहुँचा सकती और अगर वो किसी को कोई भलाई पहुँचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल को कोई रोक नहीं सकता जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
अल्लाह तआ़ला इन्सानों के लिये (अपने खज़ाना-ए-) रहमत से जो कुछ भी खोल दे तो उसे कोई रोकने वाला नहीं है और जो रोक ले तो उसके बाद कोई उसे छोड़ने वाला नहीं और वही ग़ालिब है बड़ी हिकमत वाला है। (सू०-फ़ातिर-35/2)

अल्लाह तआ़ला अपना फ़ज़्ल अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसे पहुँचाता है यानी वो अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता है उसे अपनी रहमत के लिये मख़्सूस कर लेता है और अल्लाह तआ़ला बड़े फ़ज़्ल का मालिक है और कायनात की कोई भी शैः लम्हा भर के लिये भी अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व एहसान से बेनियाज़ नहीं रह सकती और जो इन्सान एक दूसरे की मदद करते हैं या फ़ायदा पहुंचाते हैं वो भी अल्लाह के हुक्म और उसकी मर्ज़ी से ही पहुंचाते हैं और अल्लाह तआ़ला की रहमत उसके ग़ज़ब पर ग़ालिब है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बिला शुबा अल्लाह तआ़ला ने जब तमाम मख़्लूक़ को पैदा किया तो फ़रमाया कि मेरे ग़ज़ब पर मेरी रहमत ग़ालिब है और अल्लाह तआ़ला ने अपनी पाक ज़ात पर ये लाज़िम कर लिया है कि मेरी रहमत मेरे गुस्से पर ग़ालिब रहेगी और ये अ़र्श पर अब भी लिखा हुआ है। (बुख़ारी–सहीह–6/561-ह०–7404)
(इब्ने माजा–सुनन–3/401-ह०–4295)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/980-ह०–3543)
(बुख़ारी–सहीह–3/444-ह०–3194)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला–अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर वक़्त अल्लाह तआ़ला से ख़ैर तलब करते रहो और अल्लाह तआ़ला की रहमत की खुश्बूदार हवाओं के पीछे पड़े रहो क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत की खुश्बूदार हवायें अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसे पहुँचाता है और अल्लाह तआ़ला से तुम दुआ़ करो कि वो तुम्हारे ऐ़बों को छुपाये और तुम को तुम्हारे ख़ौफ़ की चीज़ों से तुम्हें महफ़ूज़ रखे (कंजुल उ़म्माल-1/435-ह०-3189)

अल्लाह तआ़ला की मशय्यत के बग़ैर न कोई तसर्रुफ़ कर सकता है और न कोई हरकत करने वाला हरकत कर सकता है और न कोई उसकी मशय्यत के बग़ैर साकिन हो सकता है और दुनियावी तकलीफ़ें व मुसीबतें बहुत छोटी हैं

और उख़्र‘वी मुसीबतें बहुत बड़ी हैं और दुनियावी कुछ मुसीबतें अपनी तदबीर से दिफ़ाअ़ हो जाती हैं मगर उख़्र‘वी मुसीबतें किसी तदबीर से दिफ़ाअ़ नहीं हो सकतीं इसलिये हमें दुन्यावी मुसीबतों के बजाए उख़्र‘वी मुसीबतों की फ़िक्र करना चाहिये और उसे दिफ़ाअ़ करने के लिये कसरत से नेक आअ़माल करना चाहिये और गुनाहों से इजतिनाब करना चाहिये और दुनिया की तकलीफ़ो मुसीबत पर सब्र करना चाहिये ताकि अल्लाह तबारक व तअ़ाला दुनियावी मुसीबतों को हमसे दूर फ़रमाये।

दुनियावी तकलीफ़ो मुसीबत को सब्र के ज़रिये से ही दूर किया जा सकता है क्योंकि सब्र करने से अल्लाह तअ़ाला खुश व राज़ी होता है और अल्लाह तअ़ाला की मदद हमें हासिल होती है और फिर अल्लाह के हुक्म और उसके फ़ज़्ल से तकलीफ़ें व मुसीबतें दूर हो जाती हैं और अल्लाह तअ़ाला जिसे सब्र व शुक्र की नेअ़मतों से नवाज़े तो वो बन्दा बड़ा खुश नसीब व कामयाब है और अल्लाह तअ़ाला का उस बन्दे पर बड़ा फ़ज़्ल व करम होता है हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं मुसीबत में सब्र करना फ़रहत हासिल करने का मूजिब है और बेशक जो सब्र करता है उसकी अल्लाह तअ़ाला ज़रुर मदद करता है और सब्र कामयाबी का ज़ामिन है व मसाइबो आलाम का मुक़ाबला सब्र के सिवा किसी और चीज़ से मुम्किन नहीं और नेअ़मतों की हिफ़ाज़त शुक्र के सिवा किसी चीज़ से मुम्किन नहीं है और बेशक–

सबसे ज़्यादा खुश वो इन्सान है जो रब तआ़ला की तक़सीम पर राज़ी है और उसकी अ़ता पर उसका शुक्र गुज़ार है और बेशक रब तआ़ला ने जो रिज़्क़ बन्दे की तक़दीर में लिख दिया है बन्दा उसमें ज़र्रा भर भी इज़ाफ़ा करने के लिये कैसी भी तदबीर करे मगर वो ज़्यादा न कर सकेगा और जो रिज़्क़ उसके मुक़द्दर में है वही उस तक पहुंचेगा जो इस मसले की समझ रखते हैं वो फ़ायदे में है और जिनको इसमें शक है वो सबसे ज़्यादा फ़िक्र व ग़म और नुक़सान में हैं

जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की तक़दीर पर राज़ी रहता है वो निहायत चैन व आराम की ज़िन्दगी बसर करता है और तक़दीर पर राज़ी रहना बड़ी बड़ी मुसीबतों को आसान कर देता है तक़दीर ऐसी चीज़ है कि इन्सान कितना ही होशियार हो मगर वो उसकी तदबीर पर ग़ालिब आ ही जाती है और तअ़ाज्जुब है उस शख़्स पर जो इस बात को जानता है कि अल्लाह ही रोज़ी देता है फिर भी वो उसकी तलब में हरीस और शब व रोज़ तकलीफ़ क्यों उठाता है इसलिये सख़्ती व नरमी जो कुछ पेश आये हमेशा हर हाल में रब तआ़ला की तक़दीर पर राज़ी रहे और मुसीबत के वक़्त साबिर और नेअ़मत के वक़्त शुक्र गुज़ार रहने का नाम ईमान है और ईमान की अफ़ज़ल सिफ़त ये है कि इन्सान अल्लाह तआ़ला की तक़दीर पर राज़ी रहे।

अल्लाह तआ़ला किसी जान पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालता

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
अल्लाह तआ़ला किसी जान पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालता। (सू०–बक़राह–2/286)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और हम किसी जान को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देते। (सू०–मु'मिनून–23/62)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और उसने दीन में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी यही तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन है और उसने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा। (सू०–हज–22/78)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
अल्लाह तआ़ला तुम्हारे हक़ में आसानी चाहता है दुश्वारी नहीं चाहता। (सू०–बक़राह–2/185)

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को जिन कामों का हुक्म दिया वो रहमत और एहसान की बिना पर दिया इसके बावुजूद जब किसी अहकाम पर अ़मल करने में कोई उज्र पेश आ जाये जिससे सख़्त मशक़्क़त और परेशानी का अंदेशा हो तो अल्लाह तआ़ला ने तख़फ़ीफ़ व आसानी फ़रमाई

है कभी तो उस अ़मल में मुकल्लिफ़ के ज़िम्मे से मुकम्मल तौर पर साक़ित फ़रमां दिया और कभी उसका कुछ हिस्सा मुआ़फ़ फ़रमां दिया जैसे बीमार व मुसाफ़िर के लिये बाअ़ज़ अहकाम में तख़्फ़ीफ़ कर दी गई है मसलन बीमार और मुसाफ़िर से रमज़ान के जो रोज़े तर्क हो जायें वो और दिनों में अदा करे और अगर रोज़ा रखने की ताक़त न हो तो एक रोज़े के बदले एक मिस्कीन को खाना खिलाये और यही हुक्म हामिला व दूध पिलाने वाली औ़रतों के लिये है कि हामिला व दूध पिलाने वाली औ़रतों को रोज़े में रुख़सत है इसी तरह से मुसाफ़िर के लिये नमाज़ को निस्फ़ कर दिया गया ग़रीब पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं नादार पर हज नहीं बीमार पर नमाज़ में क़ियाम फ़र्ज़ नहीं है माअ़ज़ूर पर जिहाद नहीं हाइज़ा की नमाज़ की क़ज़ा नहीं अलग़रज इसी तरह बहुत से अहकाम में रिआ़यत व रुख़सत है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
पस जो कोई बीमार हो या सफ़र पर हो तो दूसरे दिनों (के रोज़ों) से गिनती पूरी करले और जिन्हें इसकी ताक़त न हो तो उनके ज़िम्मे एक मिस्कीन के खाने का बदला है फिर जो कोई अपनी खुशी से ज़्यादा करे तो वो उसके लिये बेहतर है। (सू०-बक़राह-2/184)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
पस जितना हो सके उतना कुरान पढ़ लिया करो

वो जानता है कि तुम में से बाअ़ज़ लोग बीमार होते हैं और बाअ़ज़ लोग ज़मीन में सफ़र करेंगे ताकि अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करें और बाअ़ज़ लोग अल्लाह की राह में जंग करेंगे सो जितना आसानी से हो सके उतना ही पढ़ लिया करो। (सू०–मुज़म्मिल–73/20)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम नमाज़ में क़स्र करो (यानी चार रकअ़त फ़र्ज़ की जगह दो पढ़ो)
(सू०–निसा–4/101)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और अगर तुम हालते जनाबत में हो तो (नहा कर) खूब पाक हो जाओ अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई रफ़अ़ हाजत से फ़रिग़ होकर आया हो या तुमने अ़ौरतों से कुरबत (मुजामअ़त) की हो फिर तुम पानी न पाओ तो तुम पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लिया करो पस (तयम्मुम ये है कि) उस (पाक मिट्टी) से अपने चेहरों और अपने हाथों का मसाह कर लो और अल्लाह नहीं चहता कि वो तुम्हारे ऊपर किसी भी क़िस्म की सख़्ती करे लेकिन वो चाहता है कि तुम्हें पाक कर दे और तुम पर अपनी नेअ़मतें पूरी कर दे ताकि तुम शक्र गुज़ार बन जाओ।
(सू०–मायदा–5/6)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई क़ज़ाये हाजत से लौटे या तुमने औ़रतों से मुबाशरत की हो फिर तुम पानी न पा सको तो तुम पाक मिट्टी से तयम्मुम करलो पस अपने चेहरों और अपने हाथों का मसाह कर लो बेशक अल्लाह मुआ़फ़ फ़रमाने वाला बहुत बख़्शने वाला है। (सू०-निसा-4/43)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुसाफ़िर के लिये आधी नमाज़ मुआ़फ़ फ़रमां दी और मुसाफ़िर व हामिला व दूध पिलाने वाली को रोज़े मुआ़फ़ फ़रमा दिये।
(इब्ने माजा-सुनन-1/564-ह०-1667)
(तिर्मिज़ी-सुनन-1/423-ह०-715)
(नसाई-सुनन-2/84-ह०-2319)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सफ़र में चाहो तो रोज़ा रखो चाहे तो न रखो
(इब्ने माजा-सुनन-1/563-ह०-1662)
(तिर्मिज़ी-सुनन-1/422-ह०-711)
(बुख़ारी-सहीह-2/417-ह०-1943)
(अबू दाऊद-सुनन-2/824-ह०-2402)
(नसाई-सुनन-2/82-ह०-02307,2298)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने रमज़ानुल मुबारक में सफ़र किया उस वक़्त आप हालते रोज़ा थे लेकिन जब मक़ामे ऊ़स्फ़ान पर पहुँचे तो आप ने वहाँ रोज़ा छोड़ दिया और पानी का बर्तन तलब फ़रमाया और दिन के वक़्त में पानी नोश फ़रमाया ताकि लोग आपको देख लें और फिर आपने रोज़ा नहीं रखा हत्ता कि आप मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुये हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा फ़रमाया करते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने दौराने सफ़र में रोज़ा रखा और तर्क भी किया इसलिये जिसका जी चाहे रोज़ा रख ले और जिसका जी चाहे न रखे यानी मुसाफ़िर के लिये इजाज़त है।

(बुख़ारी–सहीह–4/347-ह०–4279,1944)
(मुस्लिम–सहीह–3/126-ह०–2608,2604)
(इब्ने माजा–सुनन–1/563-ह०–1661)
(अबू दाऊद–सुनन–2/826-ह०–2404)
(नसाई–सुनन–2/84-ह०–2318)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हालते सफ़र में हमेशा क़स्र नमाज़ पढ़ी है इस वजह से हम भी सफ़र में क़स्र पढ़ते हैं।

(नसाई–सुनन–1/545-ह०–1434,1438,1439)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि मैं नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ मक्का मुकर्रमा जाने के लिये निकला तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने वापस आने तक नमाज़े क़स्र अदा फ़रमाई और आप की मक्का मुकर्रमा में क़ियाम की मुद्दत दस दिन थी।
(नसाई–सुनन–1/546-ह०–1441,480)

➡ हज़रत मुआ़ज़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से सुवाल किया गया क्या हाइज़ा (हालते हैज़ में फ़ौत शुदा) नमाज़ों की क़ज़ा है तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने फ़रमाया कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की मौजूदगी में हमें हैज़ आता था लेकिन हम नमाज़ों की क़ज़ा नहीं पढ़ते थे और न ही हमें उनकी क़ज़ा का हुक्म हुआ था (अबू दाऊद–सुनन–1/252-ह०–262)
(मुस्लिम–सहीह–1/431-ह०–763)
(नसाई–सुनन–1/177-ह०–384,2322)

इसी तरह अल्लाह तआ़ला जब अपने बन्दों को मसाइबो आलाम में मुब्तिला करता है तो उनकी ताक़त से ज़्यादा उन पर मसाइबो आलाम नहीं डालता और इसमें भी मुसलमानों के लिये अल्लाह तआ़ला की रहमत और उसका फ़ज़्ल शामिले हाल होता है क्योंकि मसाइबो आलाम के ज़रिये बन्दों–

की आज़माइश होती व उनके गुनाहों में तख़फ़ीफ़ होती है और बन्दा अज्रो सवाब का मुस्तहिक़ हो जाता है बशर्ते ये कि वो सब्र व शुक्र पर क़ायम रहे और अपने हर हाल पर अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी का तालिब रहे।

अल्लाह तबारक व तआ़ला किसी को नामुम्किन चीज़ पर मजबूर नहीं करता यानी अल्लाह तआ़ला किसी मुकल्लिफ़ को वो अहकाम नहीं देता जो उसकी ताक़त से बाहर हों और अल्लाह तआ़ला किसी मुसलमान पर कोई मुश्किल चीज़ वाजिब नहीं करता सिर्फ़ वो हुक्म देता है जिसमें आसानी हो अल्लाह तआ़ला ने अपने तमाम अहकाम में बेशुमार सहूलियतें और आसानियाँ रखी हैं और हर शख़्स को बा क़दरे ताक़त अहकाम दिये जाते हैं बच्चा जब तक कमज़ोर और छोटा होता है तो अल्लाह तआ़ला ने उसकी तरबियत और देखभाल व उसकी ख़िदमत के लिये मां बाप मुक़र्रर किये और जैसे ही उसमें ताक़त आयी और वो बड़ा हुआ तो फिर उसकी ज़िम्मेदारियाँ और बोझ उस पर बढ़ना शुरु हो जाता है ये अल्लाह तआ़ला का बड़ा फ़ज़्लो करम व एहसान है कि वो अपने बन्दों पर उनकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालता और इन्सान पर कोई भी तकलीफ़ ऐसी नहीं डाली जाती जो उसकी ताक़त व कुव्वत में न हो इसमें अल्लाह तआ़ला की रहमत व हिकमत होती है।

अल्लाह तआ़ला से किसी चीज़ का इल्म मख़्फ़ी

नहीं है और उसका बेख़बर होना मुहाल है और अल्लाह तआ़ला पर किसी बन्दे का कोई हक़ नहीं है लेकिन अल्लाह तआ़ला का बन्दों पर हक़ है और अल्लाह तआ़ला का बन्दों को अज्रो सवाब देना ये उसका फ़ज़्ल है और बन्दों के गुनाहों को बख़्श देना ये उसका रहमो करम है और गुनाहों पर गिरफ़्त करना और किसी भी शक्ल में सज़ा देना ये उसका अ़द्ल है।

अल्लाह तआ़ला ने तुम पर दीन में किसी तरह की कोई तंगी नहीं रखी बल्कि ज़रुरत के मौक़ेअ़ पर सहूलियत कर दी जैसे कि सफ़र में नमाज क़स्र करने व रोज़ा न रखने की इजाज़त दे दी पानी न पाने या पानी के नुक़सान पहुँचने की हालत में गुस्ल और वुजू की जगह तयम्मुम की इजाज़त दे दी अल्लाह तआ़ला ने दीन इस्लाम को आसान व सहूल बनाया जिसमें ज़रुरत और मुश्किलात के वक़्त आसानी व तख़फ़ीफ की गई।

मुसलमानों को जिन कामों का मुकल्लिफ़ किया गया है उनमें कोई मुश्किल हुक्म नहीं है और न कोई भी ऐसा मसला है कि जिसका कोई हल न हो और न कोई ऐसी दुश्वारी है कि जिसका कोई मख़रज न हो जैसा कि बाअ़ज़ चीज़ों का मख़रज तौबा है और बाअ़ज़ चीज़ों का मख़रज कफ़्फ़ारा है और बाअ़ज़ अहकाम में रुख़सत है और बाअ़ज़ अहकाम में क़ज़ा है और बाअ़ज़ में फ़िदिया है जैसे रोज़ा तोड़ने का कफ़्फ़ारा दो माह के रोज़े या

साठ मिस्कीन को खाना खिलाना है क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा दस मिस्कीन को खाना खिलाना या कपड़ा पहनाना या तीन रोज़े रखना है गरज़ ये कि दीन में वुसअ़त और गुंजाइश है अगर खड़े होकर नमाज़ नहीं पढ़ सकते तो बैठ कर पढ़ो अगर बैठ कर भी न पढ़ सको तो लेटकर पढ़ो इशारे से नमाज़ पढ़ो और अगर दुश्मन के ख़ौफ़ से क़िब्ले की तरफ़ मुँह न कर सको तो चलती सवारी का जिस तरफ मुँह उसी तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ो अगर सख़्त भूक की वजह से मरने का ख़तरा हो और कोई हलाल चीज़ मयस्सर न हो तो बा क़दरे ज़रुरत हराम चीज़ खाने की भी रुख़सत है अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत पर ये आसानी फ़रमाई है कि उसको इतनी रुख़सतें अ़ता फ़रमाईं।

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम्हारे लिये अल्लाह तआ़ला की दी गई रुख़सतों पर अ़मल करना वाजिब है जो उसने तुमको अ़ता फ़रमाई हैं। (मुस्लिम–सहीह–2/466-ह०-2614)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपनी दी हुई रुख़सतों पर अ़मल करने को इस तरह पसन्द फ़रमाता है जिस तरह अपनी

ना फ़रमानी को ना पसंद करता है।
(मुस्नद अहमद–3/344-ह०-5873)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/322-ह०-3890)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपनी दी हुई रुख़सत पर अ़मल करने वालों को इतना पसंद फरमाता है जितना फ़राइज़ पर अ़मल करने वालो को पसंद फ़रमाता है।
(तबरानी मुअ़जम–कबीर–11/323-ह०-11880,10030)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/496-ह०-354)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/321-ह०-3889)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से दी जाने वाली रुख़सतों को कुबूल नहीं करता तो उस पर अ़रफ़ा के पहाड़ों के बराबर गुनाह होता है।
(मुस्नद अहमद–3/229-ह०-5392,17587)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/511-ह०-4535)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक दीन इस्लाम बहुत आसान है और जो शख़्स दीन में सख़्ती करेगा तो दीन उस पर ग़ालिब आ जायेगा पस–

तुम ठीक ठीक काम करो सेहत और दुरस्तगी के क़रीब यानी मेयाना रवी इख़्तियार करो एअ़तिदाल के साथ दीन के क़रीब रहकर अच्छे अ़मल करो और जहाँ मुश्किलात हों वहाँ अल्लाह तआ़ला की दी हुई रुख़सत को इख़्तियार करो और खुशी के साथ इ़बादत करो और सुबहो शाम और दोपहर और कुछ रात में इ़बादत करो।
(बुख़ारी–सहीह–1/100-ह०-39)
(मुस्नद अहमद–9/277-ह०-20945)

➡ हजरत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि तीन लोग नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की अज़वाजे मुताह्रात के घरों की तरफ़ गये ताकि वो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की इ़बादत के मुताअ़ल्लिक़ माअ़लूमात हासिल करें जब उन्हें हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की इ़बादत में मुताअ़ल्लिक़ ख़बर हुई तो उन्होंने उसे कम ख़्याल किया और उनमें से एक ने कहा मैं हमेशा रात भर नमाज़ पढ़ता रहूँगा दूसरे ने कहा मैं हमेशा रोज़े से रहूंगा तीसरे ने कहा मैं औ़रतों से अ़लैहदगी इख़्तियार कर लूंगा और कभी भी निकाह नहीं करुँगा इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आये और आपने उनसे पूछा कि क्या तुमने ये बातें कहीं हैं फिर आपने फ़रमाया ख़बरदार अल्लाह की क़सम मैं तुम्हारी निस्बत अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा डरने वाला हूँ और तुम सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी हूँ लेकिन

मैं रोज़े रखता हूँ और इफ़्तार भी करता हूँ यानी रमज़ान के अ़लावा कभी रोज़ा रखता हूँ कभी तर्क कर देता हूँ और मैं नमाज़ पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ इसके अ़लावा औ़रतों से निकाह भी करता हूँ और जिसने मेरी सुन्नत से एअ़राज़ किया तो उसने मुझसे एअ़राज़ किया।
(बुख़ारी–सहीह–5/95-ह०-5063)

➡ हज़रत अबू मसऊ़द अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरे लिये नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ना मुश्किल हो गया क्योंकि फुलां साहब नमाज़ बहुत लम्बी पढ़ाते हैं अबू मसऊ़द कहते हैं कि मैंने हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को नसीहत के वक़्त उस दिन से ज़्यादा कभी गुस्से में नहीं देखा आपने फ़रमाया लोगो तुम दीन से नफ़रत दिलाने वाले हो देखो जो लोगों को नमाज़ पढ़ाये तो उसे चाहिये कि नमाज़ तख़फ़ीफ़ से पढ़ाये क्योंकि नमाज़ियों में बीमार भी होते हैं और कमज़ोर भी होते हैं और ज़रुरी काम पर जाने वाले भी होते हैं।
(बुख़ारी–सहीह–1/139-ह०-90)
(इब्ने माजा–सुनन–2/128-ह०-984)
(अबू दाऊद–सुनन–1/595-ह०–794,795)
(नसाई–सुनन–1/336-ह०–829)

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उनको और मुआ़ज़-बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा को यमन का हाकिम बनाकर भेजा तो हम दोनों से फ़रमाया तुम दोनों आसान अहकाम नाफ़िज़ करना और लोगों को मुश्किल में न डालना यानी लोगों के लिये आसानियाँ पैदा करना और उन्हें तंगी में न डालना और उन्हें खुश ख़बरी सुनाना और नफ़रत न दिलाना व आपस में इत्तिफ़ाक़ से काम करना।
(बुख़ारी–सहीह–5/637-ह०-6124)
(मुस्लिम–सहीह–3/564-ह०-4526)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आसान अहकाम बयान करो और लोगों को मुश्किल में न डालो व लोगों के लिये दुश्वारी पैदा न करो और उन्हें इत्मिनान दिलाओ और उन्हें दूर न भगाओ।
(मुस्लिम–सहीह–3/564-ह०-4528)
(बुख़ारी–सहीह–5/637-ह०-6125)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को जब दो चीज़ों में से किसी एक का इख़्तियार दिया गया तो आपने उस चीज़ को इख़्तियार फ़रमाया जो ज़्यादा आसान हो बशर्ते कि वो गुनाह न हो।
(बुख़ारी–सहीह–5/637-ह०-6126)

➡ हज़रत अज़रक़ बिन क़ैस से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि हम आहवाज़ शहर में एक नहर के किनारे पर थे वहाँ हज़रत अबू बरज़ाह घोड़े पर आये और घोड़े को छोड़कर नमाज़ पढ़ने लगे वो घोड़ा चल पड़ा तो उन्होंने नमाज़ को छोड़कर घोड़े का पीछा किया और घोड़े को वापस लाकर बांध दिया फिर आकर नमाज़ पढ़ी एक शख़्स ने उनको देखकर कहा इस बूढ़े को देखो कि इसने घोड़े की वजह से नमाज़ छोड़ दी तो हज़रत अबू बरज़ाह ने उसकी तरफ़ मुतवज्जै होकर कहा जब से मैं रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से जुदा हुआ हूँ तब से किसी ने मुझसे ऐसी सख़्त बात नहीं की और फ़रमाया कि मेरा घर दूर है अगर मैं नमाज़ पढ़ता रहता और घोड़े को छोड़ देता तो अपने घर रात तक नहीं पहुँच पाता और फ़रमाया कि मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की सुहबत में रहा हूँ मैंने आपको हमेशा आसानी की सूरत इख़्तियार करते हुये देखा है।
(बुख़ारी–सहीह–5/638-ह०-6127)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं एक आअ़राबी ने आकर मस्जिद में पेशाब कर दिया तो लोग उसको मारने के लिये दौड़े तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया अरे अरे ये क्या कर रहे हो इसे दरमियान में मत रोको और इसको छोड़ दो–

और उसके पेशाब पर पानी बहा दो क्योंकि तुम लोगों के लिये आसानी पैदा करने के लिये भेजे गये हो मुश्किल में डालने के लिये नहीं भेजे गये फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने उस आअ़राबी को बुलाया और उससे फ़रमाया कि मस्जिद पेशाब या किसी और गन्दगी के लिये नहीं है ये तो बस अल्लाह के ज़िक्र, नमाज़ व तिलावते कुरान के लिये है।
(मुस्लिम–सहीह–1/392-ह०-661)
(बुख़ारी–सहीह–5/638-ह०-6128)
(मुस्नद अहमद–4/178-ह०-7786)

➡ हज़रत उर्वाह फुकैमी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ लोगो अल्लाह तआ़ाला के दीन में आसानी ही आसानी है और ये जुमला तीन मर्तबा फ़रमाया।
(मुस्नद–अहमद–9/277-ह०-20945)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दीन इस्लाम आसान व नरम दीन है पस इसमें नरमी के साथ दाख़िल होना चाहिये।
(मुस्नद–अहमद–10/97-ह०-21617)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने नफ़्सों पर शिद्दत व सख़्ती न करो बेशक तुमसे पहले के लोगों को हलाक कर दिया था उनके अपने नफ़्सों पर सख़्ती करने की वजह से यानी उन्होंने अपने ऊपर सख़्त और मुश्किल कामों को लाज़िम कर लिया था। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/320-ह०-3884) (तबरानी–मुअ़जम कबीर–6/73-ह०-5551)

➡ हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम्हारे दीन का सबसे बेहतर काम वो है जो सबसे ज़्यादा आसान हो ये जुमला दो बार फ़रमाया।
(मुस्नद–अहमद–6/589-ह०-16032)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह अल्लाह तआ़ाला ने मेरी उम्मत से वसवसे और ख़्यालो को जो दिल में आयें और दिलों में आने वाली बातों से दर गुज़र फ़रमाया है जब तक कि वो उन पर अ़मल न करें या उन्हें जुबान पर न लायें।
(बुख़ारी–सहीह–6/158-ह०–6664)
(मुस्लिम–सहीह–1/223-ह०–331)
(अबू दाऊद–सुनन–1/688-ह०–2209)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/653-ह०–1183)
(इब्ने माजा–सुनन–2/93-ह०–2040)

उस चीज़ का ग़म न करो जो तुम्हारे हाथ से जाती रही

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

तुम उस चीज़ पर ग़म न करो जो तुम्हारे हाथ से जाती रही और उस चीज़ पर न इतराओ जो उसने तुम्हें अ़ता की और अल्लाह किसी तकब्बुर करने वाले और फ़ख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता। (सू०–हदीद–57/23)

जो तुम्हारे हाथ से जाता रहा उस पर रंज (ग़म) न करो और उस मुसीबत पर जो आन पड़ी है उस पर रंज (ग़म) न करो और अल्लाह तुम्हारे कामों से ख़बरदार है। (सू०–आले इमरान–3/153)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को ना पसंद करो और वो तुम्हारे लिये बेहतर हो और ये भी मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को पसंद करो और वो तुम्हारे लिये बुरी हो और अल्लाह खूब जानता है और तुम नहीं जानते।
(सू०–बक़राह–2/216)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और मुम्किन है तुम किसी चीज़ को ना पसंद करो और अल्लाह तआ़ला उसमें तुम्हारे लिये बहुत सी भलाई रख दे। (सू०–निसा–4/19)

मुसलमान को पहुँचने वाली मुसीबतें तकलीफ़ें व मालो मताअ़ के नुक़सानात ये सब उसकी तक़दीर में लिखा होता है जो दुनिया में उसे ज़रुर मिलना है और जो तक़दीर में लिखा है वो हर हाल में होना है इसलिये अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि तुम उस चीज़ पर ग़म न करो जो तुम्हारे हाथ से जाती रही बल्कि तुम उस पर सब्र करो ताकि तुम बेहतर अज्रो सवाब पाओ और तुम्हारे गुनाहों में तख़्फ़ीफ़ हो जाये और तुम अपनी आज़माइशों में कामयाब हो जाओ और तुम्हारे रंजोग़म करने या परेशान होने से कोई ज़ाया शुदा चीज़ वापस नहीं मिलेगी और अल्लाह तआ़ला ने जो भी माल व मताअ़ तुम्हें अ़ता फ़रमाया है उस पर न इतराओ बल्कि उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करो क्योंकि अल्लाह तआ़ला किसी इतराने वाले और तकब्बुर करने वाले को पसंद नहीं करता।

हज़रत इमाम जाअ़फ़र सादिक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि ऐ फ़रज़न्दे आदम किसी चीज़ के नुक़सान पर तू क्यों ग़म करता है जबकि तेरा ग़म उस ज़ाया चीज़ को वापस नहीं ला सकता और तू किसी मौजूद चीज़ पर क्यों इतराता है हालांकि मौत उस चीज़ को तेरे हाथ में नहीं छोड़ेगी पस जिस चीज़ को दिल चाहता है तो उसके फ़ौत होने पर मायूस और ग़मगीन न हो क्योंकि ये सब कुछ लौहे महफ़ूज़ में दर्ज था जिसका नाफ़िज़ और वाक़ेअ़ होना एक लाज़मी अम्र था और कोई मुसीबत व परेशानी या किसी

चीज़ के ज़ाया होने को बन्दा रोक नहीं सकता।

अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ हमें अ़ता किया है उस पर तकब्बुर के साथ फ़रहत का इज़हार करना गुनाह है क्योंकि जो कुछ हमें हासिल हुआ है वो हमारी कुव्वत व ताक़त व अ़क़्ल से हासिल नहीं हुआ है बल्कि अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम व उसके एहसान की वजह से हमें हासिल हुआ है और दीन व दुनिया की किसी भी नेअ़मत के मिलने में बन्दे का अपना कोई भी कमाल नहीं होता बल्कि हर मुआ़मालात में और दीन व दुनिया की नेअ़मतें अ़ता करने में हक़ीक़ी कमाल सिर्फ़ रब्बुल आ़लमीन का होता है और जो बन्दे अपनी ताक़त व कुव्वत और अपनी अ़क़्ल का कमाल तसव्वुर करते हैं और अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा नेअ़मतों को अपनी तरफ़ मन्सूब करते हैं वो अव्वल दर्जे के बेवकूफ़ और ना शुक्रे हैं।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

फिर जब हम उसे अपनी तरफ़ से नेअ़मतों से नवाज़ते हैं तो कहता है ये तो मुझे मेरे इ़ल्म व तदबीर की वजह से मिली है (ऐसी बात नहीं है) बल्कि ये तो उसके लिये आज़माइश है मगर उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। (सू०-जुमर-39/49)

इन्सान की ज़िन्दगी में मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तकलीफ़ें परेशानियां व दुश्वारियां दरपेश आती है और राहतो सुकून और खुशी व फ़रहत के लम्हें

भी आते हैं और इन्सान किसी क़िस्म की मुसीबत परेशानी व तकलीफ़ को पसंद नहीं करता हालांकि उसकी तकलीफ़ो परेशानी में उसके लिये भलाई पोशीदा होती है मगर बन्दा नहीं जानता कि उसके लिये अल्लाह तआ़ला ने क्या क्या भलाइयाँ रखी हैं और ये सब कुछ अल्लाह तआ़ला की हिकमतों के सबब होता है इसलिये ऐसे वक़्त में बन्दे को चाहिये कि सब्र पर साबित क़दम रहे ताकि उसकी परेशानी भी दूर हो जाये और वो बन्दा अज्र का मुस्तहिक़ भी हो जाये।

इसी तरह नेअ़मतों के मिलने और ख़ुशी व फ़रहत को बन्दा बहुत पसंद करता है मगर इसमें बन्दे के लिये बड़ी आज़माइशें होती हैं कि बन्दा अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता है या नहीं और जो नेअ़मतें उसे दी गई उसके हुक़ूक़ अदा करता है या नहीं या ख़ुशी और फ़रहत के वक़्त बन्दा इतराता व तकब्बुर करता है या आ़जिज़ी व इन्किसारी व तवाज़ोअ़ का इज़्हार करता है और ख़ुशी व फ़रहत के वक़्त बन्दा अल्लाह तआ़ला की इताअ़त करता है या ना फ़रमानी करता है मक़सूद ये कि दोनों हालतों में अल्लाह तआ़ला की हिकमतें पोशीदा होती हैं ग़रज़ ये कि बन्दे को तबई तौर पर तंगी, मुफ़लिसी, तकलीफ़ो मुसीबत नागवार व नापंसद होती है मगर वो नहीं जानता जो चीज़ उसे पसंद नहीं अल्लाह तआ़ला ने उसी चीज़ में उसके लिये भलाई रखी है इसी तरह से बन्दे को जो चीज़ पसंद हो तो वो इस बात की–

दलील नहीं कि वो अच्छी और मुफ़ीद हो बल्कि वो नुक़सान देह भी हो सकती है क्योंकि वो नहीं जानता मगर अल्लाह तआ़ला हर चीज़ का खूब जानने वाला है पस हमें चाहिये कि जब हम पर कोई मुसीबत या परेशानी या तंगी आये तो उसको हम बुरा ख़्याल न करे बल्कि सब्र करें और ये तसव्वुर करें कि हमारी तंगी व तकलीफ़ो मुसीबत में अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिये भलाई रखी है और अच्छा या बुरा होने का मदार अपनी तबीअ़त या अपनी सोच पर न रखे बल्कि अल्लाह तआ़ला की क़ज़ा पर रखें वो जिस हाल में भी हमें रखे वो हाल हमारे लिये बेहतर है।

किसी अम्र या किसी चीज़ में तकलीफ़ो परेशानी या ना पसंदी की सूरत पायी जाये तो हमें चाहिये कि उसके अच्छे और बेहतर पहलुओं पर भी ग़ौरो फ़िक्र करें क्योंकि हो सकता है कि उसमें अच्छे पहलू ज्यादा हों या ज़्यादा फ़ायदे मंद हो मसलन किसी की बीवी बदसूरत है लेकिन उसी औ़रत से आदमी को नेक औलाद हासिल हो और आदमी को उसी औ़रत की वजह से हिदायत व नेकी की तौफ़ीक़ मिले जो उसकी आख़िरत बेहतर बना दे और उसके गुनाहों को बख़्शा दे और नेक औलाद उसके मरने के बाद उसके लिये कसरत से सदक़ा ख़ैरात व निफ़िली इ़बादात के ज़रिये ईसाले सवाब करे तो इसमें उसके लिये कितनी ख़ैर और भलाई है और अक्सर ऐसा होता है कि आदमी पर कुछ परेशानियाँ होती है तो उस पर अल्लाह तआ़ला-

की रहमत के सबब उस पर हज़ारो नेअ़मतें भी होती हैं तो हमें चाहिये कि तमाम परेशानियों पर सब्र करें और नेअ़मतों पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करें हमारे नुफूस नेक कामों को करने को ना पसंद करते हैं क्योंकि उनके करने में बड़ी मशक़्क़त है जबकि बिला शुबा नेकी के कामों में भलाई ही भलाई और अज्रो सवाब है और गुनाहों से मग़फ़िरत है और आख़िरत की कामयाबी है और अ़ज़ाबे क़ब्र और क़यामत और जहन्नुम के अ़ज़ाब से निजात और जन्नत में दाख़िला है और बुरे काम जिनको नुफूस पसंद करते हैं क्योंकि उन में लज़्ज़त और राहत है मगर बुरे काम दोज़ख़ में ले जाने वाले और हलाक करने वाले होते हैं।

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे पर उससे कहीं ज़्यादा रहम करता है जितना बन्दा अपने आप पर रहम कर सकता है और वो अपने बन्दे की कहीं ज़्यादा देख भाल करता है जितनी देखभाल बन्दा खुद कर सकता है और बन्दे के तमाम मुआ़मलात के मुताअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला बन्दे से ज़्यादा जानता है जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है "वल्लाहु याअ़लमु व अन्तुम ला ताअ़लमून" और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अल्लाह तआ़ला के हुक्म व मर्ज़ी के साथ साथ चलें ख़्वाह हमें कोई भी चीज़ अच्छी लगे या बुरी लगे जैसे कढ़वी दवा मरीज़ को नापसंद होती है मगर उसकी सेहत उसी में है इसी तरह इन्जेक्शन व आपरेशन तबई़ तौर पर-

ना पसंद होते हैं मगर मरीज़ की भलाई व फ़ायदा उसी में है बन्दे की निगाह फ़क्त ज़ाहिरी ऐश व आराम पर होती है मगर उसकी हक़ीक़त अल्लाह तआ़ला बेहतर जानने वाला है।

जिस शख़्स को अपनी मक़सूद व मतलूब शैः की अहमियत व ज़रुरत की माअ़रिफ़त हासिल हो जाये उस पर उस शैः के हुसूल के लिये अपनी हर चीज़ कुर्बान कर देना बड़ा आसान हो जाता है और जिसे कोई चीज़ पसंद आ जाती है और वो दिलो जान से उसकी चाहत व रग़बत रखता है तो वो उसकी शिद्दत व मशक़्क़त को बर्दाश्त कर लेता है और उसके हुसूल में जो मेहनत व मशक़्क़त उसे उठानी पड़ती है वो उसकी पर'वाह नहीं करता बल्कि अपनी महबूब शैः की ख़ातिर मुश्किलात व तकालीफ़ बर्दाश्त करने में लज़्ज़त व फ़रहत महसूस करता है जैसे कि मजदूर इन्सान गर्मियों के लम्बे दिनों में कड़ाके धूप में सारा सारा दिन चन्द रुपयों के लिये वो भारी बोझ उठाता है किसान का अनाज कमाने के लिये गर्मी, सर्दी की तकलीफ़ व मशक़्क़त उठाना आसान हो जाता है।

इसी तरह से वो बन्दे जो कि आख़िरत की बेशुमार नेअ़मतों व राहतों के लिये कोशिश करते हैं उनका इ़बादत व ताअ़त में तकलीफ़ो मशक़्क़त का उठाना उनके लिये आसान हो जाता है और दुनिया की लज़्ज़तों व नेअ़मतों का फ़ौत हो जाना उन्हें रंज नहीं देता।

मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं हर एक फ़िक्र व ग़म का ज़वाल है और हर एक तंगी के लिये कोई न कोई रास्ता है अगर तुम तक़दीरे इलाही पर राज़ी रहोगे तो तुम्हारी ज़िन्दगी मज़े से गुज़रेगी और लोगों से बे पर'वाही हासिल होगी क्योंकि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की तक़दीर पर राज़ी रहता है वो चैन व अराम की ज़िन्दगी बसर करता है और जो कुछ उसे मिल जाता है उसी पर वो इक्तिफ़ा व कनाअ़त करता है और अगर तू सब्र करेगा तो जो कुछ तेरी तक़दीर में लिखा है वही होगा मगर इस पर तुझे अज्र व सवाब मिलेगा और अगर तू बेसब्री करेगा तब भी तेरी तक़दीर की तहरीर पूरी होगी लेकिन इस पर तुझे गुनाह होगा और हर एक शख़्स की रोज़ी उसकी मौत की तरह मुक़र्रर हो चुकी है

बहुत से लोग ऐसे हैं कि दुनिया में दूसरे लोग उनकी नेअ़मतों व खुशहाली को देखकर उन पर रश्क करते हैं मगर वो आख़िरत में हलाक और बर्बाद होने वाली जमाअ़त में शामिल होंगे इसलिये ऐ इब्ने आदम तू फ़क़ीरों की सुहवत में बैठा कर ताकि तुझे अल्लाह तआ़ला की बेशुमार नेअ़मतों की क़दर माअ़लूम हो और तेरी शुक्र गुज़ारी में कसरत पैदा हो और तू सब्र इख़्तियार कर और अज्रो सवाब पर निगााह कर ताकि तेरे लिये सब मसाइबो आलाम को बर्दाश्त करना आसान हो जाये और सब्र के अन्दर अल्लाह की रहमत का नुजूल व कुशादगी के हुसूल की बिशारत होती है।

दुश्वारी के साथ आसानी है
तंगी के साथ फ़राख़ी है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
सो बेशक हर दुश्वारी (मुश्किल) के साथ आसानी है यक़ीनन तंगी के बाद कुशादगी (फ़राख़ी) है। (सू०–शरह/इन्शिराह–94/5,6)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
अल्लाह तआ़ला अ़नक़रीब तंगी के बाद आसानी और कुशादगी पैदा फ़रमाता है (सू०–तलाक़–65/7)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
इन्सान भलाई की दुआ़ मांगने से नहीं थकता और जब कोई आफ़त (या तकलीफ़) उस पर आ जाये तो वो मायूस और ना उम्मीद हो जाता है (कि हर उम्मीद छोड़ दे बैठता है)। (सू०–फुस्सिलत–41/49)

किसी मुश्किल या मुसीबत या दुश्वारी व तंगी के वक़्त मुसलमानों को घबराना और अल्लाह तआ़ला की पाक ज़ात से कभी भी ना उम्मीद नहीं होना चाहिये कि अब मेरी मुश्किल व परेशानी या तंगी दूर नहीं होगी बल्कि मुश्किल व परेशानी या तंगी के वक़्त उम्मीद रखते हुये अल्लाह तआ़ला की बारगाह में आ़जिज़ी व ख़ुलूस दिल के साथ दुआ़ करनी चाहिये कि ऐ मेरे रब अपने हबीब के सदक़े व वसीले से हमारी तंगी व परेशानियाँ दूर–

फ़रमां और हमें इनसे निजात अ़ता फ़रमां और हमें सब्र पर साबित क़दम रहना चाहिये ताकि अल्लाह तआ़ला हमारी दुआ़ को अपनी मुक़द्दस बारगाह में कुबूल फ़रमायें ताकि हमारी परेशानियाँ व तंगी हमसे दूर हो जाये अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने कुरान मजीद में एक ही आयत का दो बार ज़िक्र फ़रमाया 'इन्ना माअ़ल उसरि युसरा'' और दो बार ज़िक्र फ़रमाने में हिकमत ये है कि मेरे बन्दे तकलीफ़ो मुसीबत और तंगी के वक़्त घबरायें नहीं और ना ही मेरी रहमत और मेरे फ़ज़्ल से ना उम्मीद हों इसलिये अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को बतौर समझाने और उन्हें तसल्ली देने और अल्लाह तआ़ला पर उम्मीद क़ायम रखने और अल्लाह तआ़ला पर भरोसा रखने की ग़रज़ से एक ही आयत का दो बार ज़िक्र फ़रमाया कि ऐ मेरे बन्दे तकलीफ़ो मुसीबत और तंगी के वक़्त तू क़तई न घबरा और ना उम्मीद न हो बल्कि तू सब्र कर और मुझसे दुआ़ कर बेशक हर मुश्किल के बाद आसानी है और तंगी के बाद कुशादगी है

➡हज़रत हसन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि एक दिन नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) खुशी व सुरुर की हालत में मुस्कुराते हुये बाहर तशरीफ़ लाये और इरशाद फ़रमाया कि एक तंगी दो आसानियों पर हरगिज़ ग़ालिब नहीं आयेगी तो बेशक हर दुश्वारी के साथ आसानी है बेशक हर दुश्वारी के साथ आसानी है (हाकिम–अल मुस्तदरक–3/619-ह०–3950)

तमाम मुसलमानों के लिये ये अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अ़ज़ीमुश्शान खुशख़बरी है कि जब भी कोई तंगी व सख़्ती आयेगी तो उसके साथ साथ आसानी भी आयेगी और हर तंगी जब अपनी इन्तिहां को पहुँच जायेगी तो उसके बाद आसानी का आना लाज़िम है सू०-इन्शिराह 5 व 6 में लफ़्ज़ ''अल ऊ़स्र'' मुकर्रर (दो बार) है और ये माअ़रिफ़ा है और लफ़्ज़ युस्र भी मुकर्रर है और ये नकिराह है और क़ायदा है कि जब माअ़रिफ़ा मुकर्रर हो तो सानी अव्वल का ऐ़न होता है और जब नकिराह मुकर्रर हो तो सानी अव्वल का ग़ैर होता है यानी ''अल ऊ़स्र'' एक है और 'युस्र' दो हैं और अल ऊ़स्र का माअ़ना है मुश्किल, दुश्वारी और युस्र का माअ़ना है आसानी सो एक मुश्किल के साथ दो आसानियाँ हैं पस जब किसी शख़्स पर कोई मुश्किल या तंगी आये तो उसे घबराना नहीं चाहिये बल्कि उसे इन आयतों पर ग़ौर करना चाहिये कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने हर मुश्किल के साथ दो आसानियाँ रखी हैं।

पस अल्लाह तआ़ला इस आयत में अपने बन्दों को तसल्ली दे रहा है कि तुम पर जो सख़्त हालात गुज़र रहे हैं ज़्यादा देर रहने वाले नहीं हैं बल्कि इसके बाद क़रीब ही अच्छे हालात आने वाले हैं और अल्लाह तआ़ला ने तंगी के साथ फ़राख़ी के अल्फ़ाज़ इस माअ़ना में इस्तेअ़माल किये हैं कि फ़राख़ी का दौर इस क़दर क़रीब है कि वो इसके साथ ही चला आ रहा है इसलिये-

बन्दों को मुसीबतो परेशानी में अल्लाह तआ़ला से ना उम्मीद नहीं होना चाहिये और अल्लाह तआ़ला की रहमत और उसके फ़ज़्ल से कभी भी मायूस व ना उम्मीद नहीं होना चाहिये क्योंकि ये काफ़िर का वस्फ़ है जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक अल्लाह तआ़ला की रहमत से सिर्फ़ वो ही लोग मायूस होते हैं जो काफ़िर हैं।
(सू०–युसूफ़–12/87)

मोमिन की ये शान नहीं कि वो मुसीबत व परेशानियों और तंगदस्ती की वजह से अल्लाह तआ़ला की रहमत और उसके फ़ज़्ल से मायूस और ना उम्मीद हो जाये और इन्सान अल्लाह–तआ़ला से अपनी खुशहाली, माल, औलाद और दीगर दुनियावी मतालिब व मक़ासिद के लिये दुआ़ करते हुये कभी नहीं उकताता और उस पर हमेशा अ़मल पैरा रहता है मगर जब उसे कोई तकलीफ़ पहुँचे मसलन बीमारी, फ़क्र व मुख़्तलिफ़ मसाइब तो वो अल्लाह तआ़ला की रहमत से मायूस और ना उम्मीद हो जाता है और समझने लगता है कि ये मुसीबत उसे हलाक कर डालेगी जबकि अल्लाह तआ़ला ने वाज़ेह तौर पर फ़रमां दिया है कि हर दुश्वारी के साथ आसानी है तो हमें चाहिये कि अल्लाह तआ़ला के इस वाअ़दे पर हम मुकम्मल यक़ीन व तवक्कुल रखें और हम मुसलमान हैं तो हम पर वाजिब है कि हम अल्लाह तआ़ला ही हर

बात पर कामिल यक़ीन रखें हैं तो हमें चाहिये कि अपनी जान, माल और औलाद में कोई मुसीबत पहुंचे या किसी क़िस्म की मुसीबत व तंगी हो तो सब्र करें और अल्लाह तआ़ला की रहमत और उसके फ़ज़्ल की उम्मीद रखें और अल्लाह तआ़ला की रहमत से कभी मायूस न हो जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

ऐ ईमान वालो सब्र करो और साबित क़दमी में ज़्यादा मेहनत करो और (जिहाद के लिये) मुस्तइद रहो और हमेशा अल्लाह का तक़वा क़ायम रखो ताकि तुम कामयाब हो सको।
(सू०-आले इमरान-3/200)

सूफ़िया किराम फ़रमाते हैं कि ऐ नफ़्स मसाइबो आलाम वक़्त सब्र से काम ले तो इसके बदले में अल्लाह तआ़ला तुझे दुनिया व आख़िरत की सआ़दतें और अज्रे अ़ज़ीम व दायमी नेअ़मतें अ़ता फ़रमायेगा और तेरे रिज़्क़ में वुसअ़त और कुशादगी अ़ता फ़रमायेगा क्योंकि पर्दा-ए-ग़ैब में बड़े बड़े अजाइब व ग़राइब मौजूद हैं और जब तेरा ग़म व फ़िक्र शिद्दत इख़्तियार कर ले तो सूरह इन्शिराह का मज़मून अपने ज़हन में ला कि तंगी दो आसानियों के दरमियान है कि बेशक हर दुश्वारी के साथ आसानी है और बेशक हर तंगी के साथ फ़राख़ी है और हर तंगी के बाद सहूलत है तो जब तुम इस सूरह का मज़मून और इस-

तरह के अज़कार और ऐसी बातें जब तुम अपने तसव्वुर में लाते रहोगे व इनकी मश्क़ करते रहोगे तो तुम्हारा मुआ़मला आसान हो जायेगा बशर्ते कि कुछ वक़्त तक हिम्मत और कोशिश के साथ सब्र से काम लें तो जब तुम इस मक़ाम पर पहुँच गये तो तुम अल्लाह के यहाँ मुतावक्किलीन में शामिल हो गये और तुम उन लोगों का मक़ाम पा लोगे जो कि अपना हर काम अल्लाह तआ़ला के हवाले करते हैं और उसकी तक़दीर पर राज़ी रहते हैं और तुम साबिरीन का दर्जा पा लोगे और दुनिया में तुम्हें राहते क़ल्ब हासिल होगी और तुम अपनी आख़िरत के लिये अज्रे अ़ज़ीम और जख़ीरा-ए-सवाब जमाअ़ कर लोगे और अल्लाह तआ़ला की बारगाह में तुम्हें बुलन्द मर्तबा हासिल हो जायेगा और अल्लाह तआ़ला तुम्हें अपना महबूब व दोस्त बना लेगा पस इस तरह से तुम दोंनों जहान की भलाई हासिल कर लोगे व सीधा रास्ता पा लोगे।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि बेशक हर मुसीबत की एक इन्तिहां मुक़र्रर है और मुसीबत अपनी इन्तिहाँ पर पहुँच कर ख़त्म हो जाती है पस उसकी इन्तिहाँ तक उस पर सब्र करो और सब्र का अन्जाम बहुत बेहतर व मीठा होता है और सब्र मुसीबत को दिफ़ाअ़ करने का बेहतरीन क़वी हथियार है और ईमान का अच्छा लिबास और इन्सान की उ़म्दाह ख़सलत है पस सब्र इख़्तियार करो और बेक़रारी पर ग़ालिब आ जाओ क्योंकि बेक़रारी अज्र को ज़ाया कर देती है

बेशक इन्सान बेसब्र और लालची पैदा हुआ है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

बेशक इन्सान बेसब्र और लालची पैदा हुआ है कि जब उसे कोई मुसीबत पहुँचे तो वो घबरा जाता है और जब उसे भलाई या माली फ़राख़ी हासिल हो तो वो बुख़्ल करता है।
(सु०-मआ़रिज-70/19-21)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और जब हम लोगों को रहमत से लुत्फ़ अन्दोज़ करते हैं तो वो खुश हो जाते हैं और जब उन्हें कोई तकलीफ़ पहुंचती है उन (गुनाहों) के बाइस जो वो पहले कर चुके थे तो वो फौरन मायूस हो जाते हैं। (सू०-रुम-30/36)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

मगर इन्सान ऐसा है कि जब उसका रब उसे राहत व आसाइश देकर आज़माता है और उसे इज़्ज़त से नवाज़ता है तो वो कहता है कि मेरे रब ने मुझ पर करम फ़रमाया है लेकिन जब वो उसे (तकलीफ़ो मुसीबत देकर) आज़माता है और उस पर उसका रिज़्क़ तंग कर देता है तो वो कहता है कि मेरे रब ने मुझे ज़लील कर दिया।
(सू०-फ़ज्र-89/15,16)

इन्सान की हालत ये होती है जब उसे तंगदस्ती बीमारी या कोई और मुसीबत यानी कोई नागवार, नापसन्द हालत पेश आती है तो वो उस पर सब्र नहीं करता और जब उसे माल मिल जाये तो वो उसको राहे खुदा में और नेक कामों में ख़र्च नहीं करता और इन दोनों हालतों में बन्दे का इम्तिहान होता है कि बन्दा इन दोनों हालतों में पास होता है या फेल व कामयाब होता है या नाकाम होता है दुनियावी किसी मुआ़मले में कामयाब होना कोई माअ़ने नहीं रखता बल्कि अस्ल व हक़ीक़ी कामयाबी आख़िरत की कामयाबी है कि जिसने दुनियावी मसाइबो आलाम पर सब्र किया और अल्लाह की अ़ता कर्दा नेअ़मतों पर शुक्र किया और जो माल अल्लाह ने दिया उसके हुकूक़ अदा किये और माल को राहे खुदा में ख़र्च किया और नेक कामों पर ख़र्च किया और नेक आअ़माल किये तो वो अपने इम्तिहान में पास और कामयाब हो गया।

पस अगर किसी शख़्स को ज़िन्दगी में कभी गुरबत, तंगदस्ती, नादारी, मुसीबतो परेशानी आये या किसी बीमारी में मुब्तिला हो तो वो उस पर बे सब्री और बे क़रारी का मुज़ाहरा करने और शिकवा शिकायत करने से बचे और इन हालात में अल्लाह तआ़ला की रिज़ा पर राज़ी रहे ताकि अल्लाह तआ़ला उसके सब्र के बदले बेहतरीन अज्र अ़ता फ़रमाये और बन्दा अपने इम्तिहान में कामयाब हो जाये हालांकि ये इन्सान की फितरी कमज़ोरी है लेकिन अगर वो अल्लाह तआ़ला की–

भेजी हुई हिदायत को कुबूल कर ले और अपने नफ़्स की इस्लाह के लिये अ़मलन कोशिश करे तो वो इनको दूर कर सकता है और अगर वो अपने नफ़्स की लगाम को ढ़ीला छोड़ देगा तो ये उसके अन्दर रासिख़ (मज़बूत) हो जाती है इन्सान इस सिफ़त पर पैदा हुआ है कि इन्सान उन चीज़ों से मुहब्बत करता है जो उसको खुश करें और उन चीज़ों से नाराज़ होता है जो उसको ना पसंद हों फिर वो अपनी तबई़ सिफ़त के बर ख़िलाफ़ ना-पसंदीदा चीज़ों पर सब्र करे और अल्लाह तआ़ला की इ़बादत और नेक अ़मल करे और राहे खुदा में अपना माल ख़र्च करे पस इसी तरह अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों का इम्तिहान लेता है और उसके ईमान को जांचा जाता है कि बन्दा अपने आअ़माल में किस हालत पर है और ईमान के किस दर्जे पर है।

इन्सान की ये वो हालते नफ़्सानियां है कि जिसकी वजह से इन्सान बेसब्री, हिर्स और बुख़्ल का इज़्हार करता है और जो लोग अपने नफ़्स से जिहाद करते हैं वो अपनी इस मज़मूम ख़सलत के बरअ़क्स काम करते हैं यानी वो मुसीबत व तंगी के वक़्त सब्र करते और राहे खुदा में कसरत से माल ख़र्च करते हैं और अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा नेअ़मतों पर उसका शुक्र अदा करते हैं

हालांकि इन्सान तकलीफ़ों से भागता है और राहत को तलब करता है क्योंकि इन्सान की नज़र

दुनियावी अहवाल और जिस्मानी अ़वारिज़ (दुख, तकलीफ़, बीमारी) पर रहती है हालांकि उस पर वाजिब है कि वो आख़िरत में मशगूल हो और जब वो किसी बीमारी या तंगदस्ती में मुब्तिला हो तो उसे माअ़लूम होना चाहिये कि ये अ़वारिज़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आये हैं तो उसे चाहिये कि वो उन हालतों में अल्लाह तआ़ला की क़ज़ा पर राज़ी रहे और जब उसे सेहत व माल हासिल हो जाये तो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे और अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करे और अपने माल को राहे खुदा और कारे ख़ैर में ख़र्च करे।

अक्सर लोगों की कैफ़ियत ये होती है जब अल्लाह तआ़ला उन्हें सेहत, फराख़ी और नुसरत अ़ता फ़रमाता है तो वो लोग अल्लाह तआ़ला की नेअ़मत पर उसका शुक्र अदा नहीं करते बल्कि तकब्बुर के साथ इतराते हुये खुश होते हैं मगर मोमिन, मुख़लिस, मुतीअ़ और फ़रमां बरदार तो हर हाल में अल्लाह तआ़ला की रज़ा पर राज़ी रहते हैं और वो नेअ़मत के वक़्त तकब्बुर नहीं करते बल्कि अपने रब की हम्दो सना के साथ अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं और मुसीबत पर सब्र करते हैं।

और बाअ़ज़ तो ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला की नेअ़मत व इ़ज़्ज़त पर खुद पसंदी का शिकार हो जाते हैं और अल्लाह तआ़ला की अ़ता कर्दा-

नेअ़मत व इ़ज़्ज़त पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करने और उसे अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल व एहसान क़रार देने के बजाय अपना हक़ और अपना कमाल समझते हैं हालांकि ये तमाम तर्ज़े अ़मल मुसलमान की शान के ख़िलाफ़ हैं मुसलमान तो वो है जिसे अल्लाह तआ़ला माल व इ़ज़्ज़त से नवाज़े तो वो उसे अपना ज़ाती इस्तिहक़ाक़ और अपना कमाल समझने की बजाय ख़ालिसतन रब तआ़ला की नेअ़मत और उसका फ़ज़्ल क़रार दे और जब कोई मुसीबत या तंगी आये तो उसे अपने गुनाहों का नतीजा या अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आज़माइश क़रार दे।

दौलत मंदी व मुहताजी और मसाइबो आलाम व फ़रहतो शादमानी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से आज़माइश और इम्तिहान है और कौन इन दोंनों हालात में सब्र व शुक्र पर क़ायम रहता है ताकि अल्लाह तआ़ला उसे अज्रो सवाब से नवाज़े और जो शख़्स दुनिया में नेअ़मतें हासिल न कर सका बल्कि मसाइब व आफ़ात में मुब्तिला रहा और आख़िरत में उसको जन्नत और उसकी नेअ़मतें मिल गई तो वो शख़्स कामयाब और बा मुराद हुआ बाअ़ज़ औक़ात अल्लाह तआ़ला अपने नेक बन्दों पर मसाइब डालता है तो इसका ये मतलब नहीं कि अल्लाह तआ़ला उनसे नाराज़ है बल्कि अल्लाह तआ़ला ने उनके लिये आख़िरत में जन्नत और उसकी दायमी नेअ़मतें रखी हैं इसलिये हर फ़क़ीर व मुहताज को ये नहीं भूलना चाहिये कि–

अल्लाह तआ़ला ने उसे दुनिया में मालो ज़र नहीं दिया तो क्या हुआ अल्लाह तआ़ला ने उसको दुनिया में बेशुमार नेअ़मतें दी हैं और आख़िरत में भी उसको बेशुमार नेअ़मतें राहतें व इनाअ़मात और अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमायेगा और दुनिया में जो उसे नेअ़मतें मिलीं मसलन उसका बदन सहीह व सालिम है उसकी अ़क्ल काम कर रही है और वो साहिबे ईमान है और आअ़माले सालिहा की तौफ़ीक़ और सांस लेने के लिये हवा और पीने के लिये पानी, खाने के लिये गिज़ा वग़ैराह और आख़िरत में उसके सब्र व शुक्र और नेक अ़मल के बदले में जो अल्लाह तआ़ला उसे अ़ता करेगा उसका तो वो अंदाज़ा भी नहीं लगा सकता अल्लाह तआ़ला ने जन्नत व उसकी बेशुमार नेअ़मतें उसके लिये रखी हैं और ऐसे बन्दों पर अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ीम फ़ज़्ल और एहसान होता है कि अल्लाह तआ़ला उनको आख़िरत संवारने और उसे बेहतर बनाने का एक मौक़ाअ़ इनायत फ़रमां रहा है।

एक हालत राहत व आराम की है दूसरी हालत तंगी, मुफ़लिसी व मुसीबत की है और हक़ीक़त ये है कि इन्सान दोंनों हालतों में आज़माया जाता है कि वो अपने पर'वरदिगार का कहाँ तक मुतीअ़ (इताअ़त करने वाला) व फ़रमां बरदार रहता है इन्सान जब राहत व नेअ़मत पाता है तो ग़फ़लत व माअ़सियत में पड़कर वो अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी करता है और जब वो मसाइब में मुब्तिला होता है तो ना शुक्री व शिकवा शिकायत-

पर उतर आता है और सब्र व तहम्मुल और रब तआ़ला पर तवक्कुल नहीं करता अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा नहीं करता और अल्लाह तआ़ला के ख़िलाफ़ बदगोई और बदगुमानी करता है और नफ़्स का काम गुस्ताख़ी और बे अदबी करना है नफ़्स हमेशा ख़्वाहिशात की कसरत से इन्सान को इज़्तिराब (बेचैन, बेक़रार) और परेशानी में मुब्तिला रखता है

फिर जब नफ़्स को मसाइबो आलाम से निजात दी जाती है तो वो तकब्बुर और ऐश में मुब्तिला हो जाता है और अपने परवर दिगार की इताअ़त से ग़फ़लत व रुगरदानी इख़्तियार करता है जो शख़्स दुनिया व आखिरत में इज़्ज़त व सलामती चाहता है तो उसे चाहिये कि मसाइबो आलाम के वक़्त सब्र व तहम्मुल इख़्तियार करे और अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी न करे और मख़लूक़ से अपने ख़ालिक़ की शिकायत न करे और अपनी हाजात व ज़रुरियात अपने परवर दिगार से तलब करे और अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ अ़ता किया है उस पर क़नाअ़त करे और अल्लाह तबारक व तआ़ला का शुक्र अदा करे और अल्लाह तआ़ला ने अपनी हिकमत व मसलहत को बन्दों से हमेशा मख़्फ़ी रखा है और सब्र करने वालों के लिये रब तआ़ला की मदद लाज़मी है और हर मुसीबत व परेशानी के बाद राहत है और हर सख़्ती के बाद आसानी है।

बराबर रिज़्क़ न देने में हिकमत

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
और अगर अल्लाह तअ़ाला अपने तमाम बन्दों के लिये रोज़ी कुशादा फ़रमां दे तो वो ज़रुर ज़मीन में सरकशी करने लगेंगे लेकिन वो ज़रुरत के अंदाज़े के साथ जितनी चाहता है उतनी उतारता है बेशक वो अपने बन्दों की ज़रुरतों से ख़बरदार है वो खूब देखने वाला है। (सू०–शूरा–42/27)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
अल्लाह तअ़ाला जिसके लिये चाहता है रिज़्क़ कुशादा फ़रमां देता है और जिसके लिये चाहता है रिज़्क़ तंग कर देता है। (सू०–राअ़द–13/26)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
और वही है कि जिसने तुमको ज़मीन में नायब बनाया और तुम में से बाअ़ज़ को बाअ़ज़ पर दरजात में बुलन्द किया ताकि वो उन चीज़ों में तुम्हें आज़माये जो उसने तुम्हें अमानतन अ़ता कर रखी हैं बेशक आपका रब (अ़ज़ाब के हक़ दारों को) जल्द सज़ा देने वाला है और बेशक वो (मग़फ़िरत के उम्मीदवारों को) बड़ा बख़्शने वाला और बेहद रहम फ़रमाने वाला है।
(सू०–अनअ़ाम–6/165)

➡हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तअ़ाला

अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मेरे बाअ़ज़ मोमिन बन्दे ऐसे हैं जिनके ईमान की भलाई मालदार होने में है अगर मैं उन्हें मालदार न करूँ तो फ़क्र उनके ईमान को फ़ासिद कर दे और मेरे बाअ़ज़ मोमिन बन्दे ऐसे हैं कि जिनके ईमान की भलाई मालदार न होने में है कि अगर मैं उन्हें मालदार करूँ तो मालदारी उनके ईमान को फ़ासिद करदे और मेरे बाअ़ज़ बन्दे ऐसे हैं कि जिनके ईमान की इस्लाह सिर्फ़ सेहत से होती है और अगर मैं उन्हें किसी बीमारी में मुब्तिला कर दूँ तो उनकी बीमारी उनके ईमान को फ़ासिद कर देगी और बाअ़ज़ मेरे बन्दे ऐसे हैं कि जिनके ईमान की इस्लाह सिर्फ़ बीमारी से होती है अगर मैं उन्हें सेहत अ़ता कर दूँ तो उनका ईमान फ़ासिद हो जायेगा और मैं अपने इ़ल्म के मुताबिक़ अपने बन्दों से हुस्न तदबीर से पेश आता हूँ और बेशक मैं अ़लीम व ख़बीर हूँ।
(हिल्यातुल औलिया–7/468-ह०–12472)
(कंजुल उ़म्माल–1/180-ह०–1160)
(इब्ने असाकर तारीख़ मदीनतुल दमिश्क़–7/96)

अल्लाह तआ़ला का सबको बराबर रिज़्क़ न देने में बेशुमार हिकमतें है मसलन अगर अल्लाह तआ़ला अपने सब बन्दों के लिये रिज़्क़ वसीअ़ कर देता तो मुम्किन था कि माल के नशे में वो सरकशी करते और ज़मीन में फ़साद फैलाते और ये भी हिकमत है कि जब सारे लोग मालदार होते

तो छोटे छोटे काम कोई नहीं करता और इन्सान का ज़िन्दगी गुज़ारना मुश्किल हो जाता और उसके लिये ज़रुरियाते ज़िन्दगी को पूरा करना ना मुम्किन होता जैसे कोई भी गन्दगी साफ़ नहीं करता और कोई ताअ़मीरात के कामों में मेहनत व मज़दूरी नहीं करता किसान गल्ला व सब्ज़ा उगाने के लिये मेहनत व मशक़्क़त नहीं उठाता और कोई रिक्शा नहीं चलाता मक़सूद ये कि फिर कोई छोटे छोटे और कढ़ी मेहनत व मशक़्क़त के काम कोई भी नहीं करता और दुनियावी ज़िन्दगी का निज़ाम बिगड़ जाता इसलिये अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने जो निज़ाम मुतइय़्न किया इसमें लोगों के लिये ख़ैर व आसानी है और अल्लाह तअ़ाला के हर निज़ाम में हिकमतें और मसलहतें होती हैं जो कि बन्दों की ख़ैर और भलाई के लिये होती हैं और तमाम मुअ़ामलात अल्लाह तअ़ाला की मशइयत पर मौकूफ़ हैं और वो जो चाहता है वो करता है क्योंकि वो मालिके कायनात है हम देखते हैं कुछ लोग अमीर हैं कुछ लोग गरीब हैं कुछ बीमार व कुछ तन्दरुस्त इसमें बेशुमार हिकमतें पोशीदा हैं।

➡ हज़रत शद्दाद बिन औस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने खुत्बा इरशाद फ़रमाया आगाह रहो कि दुनिया मौजूदा सामान है जिससे नेक और बद सभी खाते हैं और आगाह रहो कि आख़िरत सच्चा वाअ़दा है जिसमें अल्लाह तअ़ाला फ़ैसला फ़रमायेगा ख़बरदार सारी मुसीबतें अपने–

किनारों समेत जहन्नम की आग में है ख़बरदार तुम अल्लाह तआ़ाला से डरते हुये नेक आअ़माल किया करो और याद रखो कि तुम पर तुम्हारे आअ़माल पेश किये जायेंगे तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे वो उसे देख लेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे वो उसे देख लेगा।
(बैहक़ी–सुनन–कुबरा–4/274-ह०-5808)

लोगों की अमीरी व ग़रीबी और बीमारी व सेहत मंदी सब कुछ हिकमत के ऐ़न मुताबिक़ होती है और उख़र‘वी एतवार से बहुत बड़े फ़ायदे की हामिल है लिहाज़ा अल्लाह तआ़ाला जिसे दौलत अ़ता करे तो वो उस दौलत को अल्लाह तआ़ाला की इताअ़त और फ़रमांबरदारी में ख़र्च करे और अल्लाह तआ़ाला जिसे ग़रीबी व मुफ़लिसी और मसाइबो आलाम में मुब्तिला करे तो उसे चाहिये कि वो अपनी ग़रीबी व तंगदस्ती पर सब्र करे और जो सेहत मंद हैं तो वो उसकी नेअ़मत को ग़नीमत जानें और अल्लाह तआ़ाला का शुक्र अदा करें और जिस्मानी सेहत से अल्लाह तआ़ाला की इताअ़त व इबादत करें और जो बीमार हों तो वो अपनी बीमारी को मुसीबत न जाने बल्कि वो उस मुसीबत पर अल्लाह तआ़ाला का शुक्र अदा करे क्योंकि बीमारी के सबब से तेरे गुनाहों को मिटाया जा रहा है और आख़िरत की हलाकत व तबाही से तुझको बचाया जा रहा है।

अल्लाह तबारक व तआ़ाला अपने अंदाज़े और

हिकमत के तकाज़े के मुताबिक़ जो चीज़ चाहता है नाज़िल फ़रमाता है और अमीरी व ग़रीबी और बीमारी व सेहतमंदी और दुश्वारी व आसानी और तकलीफ़ो मुसीबत व राहतो आराम और रंजो ग़म व मसर्रत इन सब हालतों में बन्दे की आज़माइश होती है अगर अल्लाह तआ़ला अपने तमाम बन्दो के लिये रोज़ी कुशादा फ़रमां देता और किसी को किसी क़िस्म की तकलीफ़ में मुब्तिला न करता तो फिर बन्दों की आज़माइश कैसे होती इसी तरह अल्लाह तआ़ला अगर हमेशा पानी बरसाता तो ज़रा सोचो ज़िन्दगी कितनी मुश्किल और दुश्वार होती तो माअ़लूम हुआ कि हर चीज़ में अल्लाह तआ़ला की हिकमत होती है जो बन्दों की भलाई के लिये होती है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जिसके साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे बीमारियों व तकालीफ़ व आज़माइशों में मुब्तिला कर देता है। (बुख़ारी–सहीह–5/422-ह०–5645)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/64-ह०–2907)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान मर्द व औ़रत के जान व माल और औलाद में मुसीबत रहती है यहाँ तक कि वो अल्लाह तआ़ला से इस

हाल में मिलता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं होता। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/230-ह०–2399)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मसाइबो आलाम से दो चार होने वालों को जब अल्लाह तअ़ाला अ़ज़ीम सवाब और मरातिब अ़ता फ़रमायेगा तो दुनिया में अ़ाफ़ियत व ऐश व आराम में रहने वाले लोग उनके सवाब व मरातिब को देखकर तमन्ना करेंगे कि काश दुनिया में मेरी खालें कैंचियों से काटी जातीं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/231-ह०–2402)
(इब्ने अबी शैबा–3/537-ह०–10934)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/602-ह०–6553)

सू०–राअ़द में अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया कि काफ़िर दुनिया की ज़िन्दगी पर इतरा गये हैं यानी अल्लाह तअ़ाला ने मुश्रिक़ीन पर जब रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाया तो उन्होंने शर फैलाना शुरु कर दिया और वो तकब्बुर में मुब्तिला हो गये इसलिये अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया कि अगर अल्लाह तअ़ाला अपने तमाम बन्दों के लिये रोज़ी कुशादा फ़रमां दे तो वो ज़रुर ज़मीन में सरकशी करने लगेंगे इसलिये अल्लाह तअ़ाला ने तमाम इन्सानों को एक जैसा रिज़्क़ अ़ता नहीं फ़रमाया बाअ़ज़ लोग ग़रीब है और बाअ़ज़ मुतावस्सित (दरमियानी औसत दर्जे के) और बाअ़ज़ अमीर हैं और इसमें

अल्लाह तआ़ला की बेशुमार हिकमतें हैं अल्लाह तआ़ला ने शक्ल व सूरत में हुस्न व जमाल में रिज़्क़ व माल में इ़ल्म व अ़क़्ल में और कुव्वत व कमाल में एक को दूसरे पर फ़ौक़ियत दी है और इसका मक़सद बन्दों की आज़माइश करना है कि कौन नेअ़मतों के मिलने पर शुक्र अदा करता है और कौन नेअ़मतों के न मिलने पर सब्र करता है और कौन बुराई की राह पर चलता है और कौन नेकी की राह पर चलता है और कौन इम्तिहान में कामयाब होता है और कौन नाकाम रहता है जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

क्या लोग ये ख़्याल करते हैं कि सिर्फ़ उनके इतना कह देने से कि हम ईमान ले आये हैं छोड़ दिये जायेंगे और उनकी आज़माइश नहीं की जायेगी और बेशक हमने उन लोगों को भी आज़माया था जो इनसे पहले थे सो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला उन लोगों को ज़रुर आज़माइश के ज़रिये नुमायां फ़रमां देगा जो दाअ़वा–ए–ईमान में सच्चे हैं और झूठों को भी ज़रुर ज़ाहिर फ़रमां देगा।
(सू०–अ़नकबूत–29/2,3)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और हम ज़रुर बिल ज़रुर तुम्हें आज़मायेंगे कुछ खौफ़ से और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों के नुक़सान से और (ऐ हबीब) आप सब्र करने वालों को खुश ख़बरी सुना दें जिन पर

कोई मुसीबत पड़ती है तो वो कहते हैं बेशक हम अल्लाह ही का माल हैं और हम उसी की तरफ़ पलट कर जाने वाले हैं।
(सू०–बक़राह–28/155,156)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और हम तो तुम्हें अच्छे और बुरे हालात (दोनों तरह) से आज़माते हैं और बिल आख़िर तुम्हें हमारी ही तरफ़ लौटना है। (सू०–अम्बिया–21/35)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जब इन्सान को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वो हमें पुकारता है फिर जब हम उसे अपनी तरफ़ से कोई नेअ़मत अ़ता करते हैं तो वो कहता है कि ये नेअ़मत तो मेरे इ़ल्म व तदबीर से मिली है बल्कि ये तो आज़माइश है मगर उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। (सू०–जुमर–39/49)

बेशक जो कुछ ज़मीन पर है हमने उसे ज़मीन की ज़ीनत बनाया है ताकि हम लोगों को आज़मायें कि अ़मल के एतबार से कौन बेहतर है।
(सू०–कह्फ़–18/7)

अल्लाह तआ़ला ने तमाम इन्सान व तमाम मुसलमान यकसा नहीं किये बाअ़ज़ अमीर हैं और बाअ़ज़ ग़रीब हैं बाअ़ज़ अच्छे हैं बाअ़ज़ बुरे हैं बाअ़ज़ नेक व अ़ालिम हैं बाअ़ज़ जाहिल हैं और बाअ़ज़ क़वी हैं बाअ़ज़ कमज़ोर हैं बाअ़ज़ काफ़िर

हैं बाअ़ज़ मोमिन बाअ़ज़ खूबसूरत हैं और बाअ़ज़ बदसूरत और इस इख़्तिलाफ़े दरजात में हिकमत और बन्दे की आज़माइश पोशीदा है कि आअ़ला दरजात वाले अपने मातहतों को देखकर अल्लाह तअ़ाला का शुक्र अदा करें और शुक्र का सवाब पायें और नीचे वाले ऊपर वालों का देखकर सब्र करें और अज्रो सवाब पायें तो माअ़लूम हुआ कि अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने हिकमत और हमारे इम्तिहान के लिये हमें मुख़्तलिफ़ दरजात में रखा और जो जैसा अ़मल करेगा उसे वैसा ही बदला दिया जायेगा और आख़िरत में नेअ़मतों व अज्रो सवाब और दरजात की बुलन्दी व पस्ती अ़मल के ऐन मुताबिक़ होगी।

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला क़यामत के दिन दोज़ख़ का सबसे हल्का अ़ज़ाब पाने वाले से पूछेगा कि अगर तुझे रुये ज़मीन की तमाम चीज़ें मयस्सर हों तो क्या तू दोज़ख़ के अ़ज़ाब से निजात पाने के बदले में उन तमाम चीज़ों को दे देगा तो वो कहेगा हाँ।
(बुख़ारी–सहीह–6/108-ह०–6557)

मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं ऐ इब्ने आदम तेरी रोज़ी तुझसे भी बढ़कर तेरी तलबगार है पस तुझे चाहिये कि उसकी तलब में शरीअ़त की सीधी राह पर चलता रह।

अल्लाह तआ़ाला ने बाअ़्ज़ को बाअ़्ज़ पर फ़ज़ीलत दी

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-
और तुम उस चीज़ की तमन्ना न किया करो कि जिसमें अल्लाह तआ़ाला ने तुम में से बाअ़्ज़ को बाअ़्ज़ पर फ़ज़ीलत दी। (सू०-निसा-4/32)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-
क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह तआ़ाला जिसके लिये चाहता है रिज़्क़ कुशादा फ़रमां देता है और (जिसके लिये चाहता है रिज़्क़) तंग कर देता है इसमें उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं जो ईमान रखते हैं। (सू०-रुम-30/37)

जब कोई नेअ़मत जो दूसरों के पास हो और वो हमारे पास न हो तो हमें चाहिये कि हम उस नेअ़मत की तमन्ना न करें क्योंकि अल्लाह तआ़ाला का बाअ़्ज़ को बाअ़्ज़ पर फ़ज़ीलत देना ऐ़न हिकमत के तहत होता है तो बन्दे को चाहिये कि वो अल्लाह तआ़ाला के हुक्म और उसकी मर्ज़ी पर राज़ी रहे और किसी नेअ़मत के न मिलने पर ग़म न करे और अल्लाह तबारक व तआ़ाला जो भी नेअ़मत हमें अ़ता करे तो उस नेअ़मत पर हम अल्लाह तआ़ाला का शुक्र अदा करें और जो नेअ़मत न मिले तो उस पर सब्र करें क्योंकि इसी में बन्दे की भलाई पोशीदा होती है और तक़्दीर-

से ज़्यादा न किसी को मिला है और न किसी को मिलेगा और जो मुक़द्दर में है वो हम तक ज़रुर पहुँचेगा दुनिया में कोई शख़्स किसी नेअ़मत की इंतिहा को नहीं पहुँचा और अगर बिल फ़र्ज़ किसी नेअ़मत में वो अपनी इंतिहा को पहुँचा तो दूसरी किसी नेअ़मत में वो ज़रुर कमतर रहेगा और अगर दिल को आरजुओं व तमन्नाओं का मरकज़ बना लिया जाये तो हज़ारों नेअ़मतों का मालिक होकर भी दिल क़रार नहीं पा सकता मसलन एक शख़्स बहुत मालदार है लेकिन वो खूबसूरत नहीं फिर अगर अल्लाह तआ़ला उसे खूबसूरत बनादे फिर वो किसी और चीज़ की तमन्ना करेगा इस तरह उसकी आरजुऐं व तमन्नायें कभी ख़त्म नहीं होंगी और उसका दिल कभी क़रार नहीं पायेगा

इसलिये बेहतर यही है कि अल्लाह तआ़ला हमें जिस हाल में रखे और उसकी रज़ा पर राज़ी रहें और सब्र करते हुये आख़िरत के अज्रो सवाब को पेशे नज़र रखें तो यक़ीनन ऐसे शख़्स का दिल सुकून व क़रार पा जायेगा।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर आदमी के पास दो वादियाँ भर कर माल हो तो फिर भी उस की ख़्वाहिश ये होती है कि काश एक वादी माल और होता इन्सान के नफ़्स को क़ब्र की मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती।

(बुख़ारी–सहीह–6/52-ह०–6436)
(इब्ने माजा–सुनन–3/382-ह०–4235)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/244-ह०–10280)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/585-ह०–6508)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इन्सान के पास अगर सोने का एक जंगल हो फिर भी उसकी ख़्वाहिश ये होती है कि काश एक सोने का एक जंगल और होता इन्सान के मुँह व पेट को (क़ब्र की) मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती। (बुख़ारी–सहीह–6/52-ह०–6438)
(मुस्लिम–सहीह–3/67-ह०–2445)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/195-ह०–2337)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/243-ह०–10274)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम उसकी तरफ़ देखो जो (माल व जमाल और असबाब में) तुमसे कमतर हो और उसकी तरफ़ मत देखो जो इन चीज़ों में तुमसे बरतर हो कि इस तरह से तुम अल्लाह तआ़ला की किसी भी नेअ़मत को हक़ीर न जानोगे। (मुस्लिम–सहीह–5/479-ह०–7430)
(बुख़ारी–सहीह–6/77-ह०–6490)

अल्लाह तआ़ला ने बाअ़ज़ मुसलमानों को माल व

इज़्ज़त और मर्तबे के एतबार से जो फ़ज़ीलतें दी हैं और जो भी ऐसी नेअ़मतें अ़ता फरमाई हैं कि जिसमें रग़बत की जा सके तो उसके हुसूल की दूसरे तमन्ना न किया करें और बन्दा सिर्फ़ अपनी इस्तिताअ़त और मक़दिरत (कुदरत) भर अपनी दुनियावी ज़रुरियात के हुसूल के लिये कोशिश व जद्दो जहद और अल्लाह तआ़ला से उसके फ़ज़्लो करम का सुवाल करे और किसी भी नेअ़मत के सबब हसद न करे और न अल्लाह तआ़ला पर एतराज़ करे कि किसी को अमीर बनाया व किसी को ग़रीब क्योंकि अल्लाह तआ़ला मालिको मुख़्तार और अ़लीम व हकीम है वो जिसे जो चाहता है वो नेअ़मत अ़ता फ़रमाता है इसलिये रब तआ़ला जिस हाल में रखे उसकी क़ज़ा पर राज़ी रहें और रब तआ़ला से अ़फ़्व व आ़फ़ियत की दुआ़ करें।

➡ हज़रत अबू बक्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु से) रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला से अफ़्व व आ़फ़ियत मांगो (तिर्मिज़ी–2/987-3558)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला से उसके फ़ज़्ल का सुवाल करो क्योंकि अल्लाह तआ़ला को ये पसन्द है कि उससे सुवाल किया जाये और दुआ़ के कुबूल होने का इन्तिज़ार करना अफ़ज़ल इ़बादत है। (तिर्मिज़ी–2/994-3571)

कुफ़्र व गुनाहों के बावुजूद नेअ़मतें मिलना ये अल्लाह की ढील है

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

और शैतान ने उनके लिये वो (गुनाह) आरास्ता करके दिखाये थे जो वो किया करते थे फिर जब उन्होंने उन नसीहतों को भुला दिया जो उनसे की गई थीं तो हमने उन पर हर चीज़ के दर'वाज़े खोल दिये यहाँ तक कि जब वो उन चीज़ों (की लज़्ज़तों व राहतों) से खूब खुश हुये जो उन्हें दी गई थीं तो हमने अचानक उन्हें (अ़ज़ाब के लिये) पकड़ लिया तो उस वक़्त वो मायूस होकर रह गये। (सू०-अनअ़ाम-6/43-44)

कुफ़्र व गुनाहों के बावुजूद दुनियावी नेअ़मतें व राहतें और ऐशो इशरत का मिलना दर अस्ल अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ से ढील होती है जिसे बाअ़ज़ लोग कम इ़ल्मी के सबब अल्लाह तअ़ाला की रहमत तसव्वुर करते हैं ताकि इन्सान और ज़्यादा ग़ाफ़िल होकर मज़ीद गुनाहों का मुरतकिब हो जाये बाअ़ज़ औक़ात वो ये ख़्याल करता है कि जो कुछ मैं कर रहा वो सहीह व दुरस्त कर रहा हूँ वरना मुझे ये नेअ़मतें व राहतें न मिलतीं और इसके अ़लावा शैतान गुनाहों को इन्सान के लिये आरास्ता करके दिखाता है तो इन्सान उसे अच्छा और लज़्ज़त आमेज़ समझता है और इस तरह से वो कसीर गुनाहों का मुरतकिब हो जाता है।

बाअ़ज़ लोग सरकशों व नाफ़रमानों की माली तरक़्क़ी देखकर मायूस हो जाते हैं और कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला उन्हें खूब अ़ता कर रहा है और हमें नहीं दे रहा है बल्कि लोगों से शिकवा शिकायत करते हैं और अल्लाह तआ़ला के लिये दिलों में बदगुमानी पैदा करते हैं तो उन्हें इससे सबक़ व इ़बरत हासिल करना चाहिये कि ये सब अल्लाह तआ़ला की हिकमत के तहत होता है कि अल्लाह तआ़ला नाफ़रमानों के लिये ऐशो इशरत व दुनिया की लज़्ज़तों व मालो मताअ़ और उसकी ग़फ़लतों के दर‘वाज़े खोल देता है और दुनिया में उन्हें कसीर नेअ़मतें अ़ता करता है और मआ़श की तंगी को रिज़्क़ की वुसअ़त में बदल देता है ताकि वो अपने शर व गुनाहों में और ज़्यादा बढ़ जायें और उनके लिये रुसवा कुन दर्दनाक अ़ज़ाब है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

हमने जब भी किसी बस्ती में कोई नबी भेजा तो उस बस्ती वालों को (नबी की तकज़ीब की वजह से) हमने उन्हें तंगी व तकलीफ़ में गिरफ़्तार कर लिया ताकि वो गिड़गिड़ा कर दुआ़ करें फिर हमने बदहाली को खुशहाली में बदल दिया हत्ता कि वो (माल व औलाद में) बहुत ज़्यादा हो गये और कहने लगे हमारे आबाओ अजदाद को भी इसी तरह तकलीफ़ और राहत पहुँचती रही है फिर हमने अचानक उनको अपनी गिरफ़्त में ले लिया और उन्हें उसकी ख़बर भी न थी।

(सू०–आअ़राफ़–7/94,95)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और मैं उन्हें ढील दे रहा हूँ बेशक मेरी गिरफ़्त बड़ी मज़बूत है। (सू०-आअ़राफ़-7/183)

जब कोई शख़्स बुरा अ़मल करता है तो शैतान उसकी नज़र को वो अ़मल अच्छा करके दिखाता है और वसवसा डालता है कि यही हक़ का सहीह रास्ता है तो जब बन्दा अपनी बुराईयों को भलाई समझने लगे तो फिर समझ लो कि वो गुमराही व शैतान के रास्ते की तरफ़ चल पड़ा है और रब तआ़ला जिस शख़्स पर माल व मताअ़ व असबाबे दुनिया को वसीअ़ कर दे और उसके अक्सर काम अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के खिलाफ़ हों तो उसको अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ढील दी जाती है और वो ये समझता है कि अल्लाह तआ़ला हमसे राज़ी है इसलिये अल्लाह तआला हमें कसीर नेअ़मतें अ़ता कर रहा हैं और हम ऐशो इशरत में रह रहे हैं और हमारे काम अच्छे हैं तभी तो ये नेअ़मतें हमको बतौर इनआ़म मिल रही हैं और इस तरह वो कसीर गुनाहों का मुरतकिब होने के बावुजुद ये समझता है कि उसका मुवाख़िज़ा नहीं किया जायेगा और न ही उसको सज़ा दी जायेगी।

पस वो कुफ़्र व सरकशी और गुमराही और गुनाहों में बढ़ता चला जाता है और इस तरह उसके गुनाहों में इज़ाफ़ा होता चला जाता है और साथ साथ उसको मिलने वाली सज़ा में भी इज़ाफ़ा

होता चला जाता है और उसे इस बात का इ़ल्म भी नहीं होता फिर जब वो किसी भी गुनाह का इरतिकाब करता है तो अल्लाह तआ़ला उस पर नेअ़मतों के दर‘वाज़े खोल देता है जिससे वो बहुत खुश होता है फिर वो सरकशी और गुमराही में मज़ीद मुनहमिक और मुस्तग़रक़ हो जाता है और जूँ जूँ उस पर नेअ़मतें ज़्यादा होती जाती हैं तूँ तूँ वो ज़्यादा गुनाह करता है फिर अल्लाह तआ़ला ऐ़न ग़फ़लत में उसको अपनी गिरफ़्त में ले लेता है और अल्लाह तआ़ला सरकश व नाफ़रमानों की सज़ा में इसीलिये जल्दी नहीं करता कि वो जानता है कि वो मुझसे बच कर कहीं नहीं जा सकते।

➡ हज़रत अबू मूसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों को ढील देता है लेकिन अल्लाह तआ़ला जब उन ज़ालिमों को अपनी गिरफ़्त में लेता है तो फिर उन्हें नहीं छोड़ता फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ये आयत तिलावत फ़रमाई ‘‘तेरे पर‘वर दिगार की पकड़ का यही तरीक़ा है जब वो बस्तियों के रहने वाले ज़ालिमों को पकड़ता है बेशक उसकी पकड़ दुख देने वाली और निहायत सख़्त है।’’ (सू०–हूद–11/102)
(इब्ने माजा–सुनन–3/304-ह०–4018)

अल्लाह तआ़ला गुमराहों को ऐशो इशरत में ढील देता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
जो शख़्स गुमराही में मुब्तिला हो तो अल्लाह उसे ऊ़म्र व ऐश (व इशरत) में खूब ढील (मुहलत) देता रहता है यहाँ तक कि जब वो लोग उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वाअ़दा किया गया है ख़्वाह वो अ़ज़ाबे इलाही हो या ख़्वाह वो क़यामत हो तब वो उस शख़्स को जान लेंगे जो रिहायश गाह के एतबार से बुरा है और लश्कर के एतबार से भी कमज़ोर तर है और अल्लाह तआ़ला हिदायत याफ़्ता लोगों की हिदायत में मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमाता है और बाक़ी रहने वाले नेक आअ़माल आपके रब के नज़दीक अन्जाम व अज्रो सवाब के एतबार से बेहतर हैं।
(सू०-मरयम-19/75,76)

जो शख़्स गुमराही में मुस्तग़रक हो जाये और अपनी गुमराही पर खुश व राज़ी हो तो अल्लाह तआ़ला उसकी गुमराही में मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमाता है और उसकी गुमराही को और ज़्यादा बढ़ाने के लिये उसकी ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात और उसकी ऐशो इशरत में मज़ीद इज़ाफ़ा करता रहता है और उसको वक़्त मुअ़य्यन तक ढ़ील देता है ये सब उसके लिये बतौर सज़ा होती है क्योंकि उसने हिदायत को छोड़कर गुमराही को इख़्तियार किया।

और जो शख़्स रसूल की मुख़ालिफ़त करे इसके बाद कि उस पर हिदायत की राह वाज़ेह हो चुकी थी और वो मुसलमानों की राह से जुदा राह की पैर'वी करे तो हम उसे उसी (गुमराही) की तरफ़ फेरे रखेंगे जिधर वो (खुद) फिर गया है और बिल आख़िर हम उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेंगे और वो बहुत ही बुरा ठिकाना है।
(सू०–निसा–4/115)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जब उन पर हमारी रौशन आयतें तिलावत की जाती हैं तो काफ़िर लोग ईमान वालों से कहते हैं (कि इस दुनिया में ही देख लो कि हम) दोनों गिरोहों यानी मुसलमान और काफ़िर में से किस की रिहायश गाह बेहतर है और मजलिस खूब तर है और हमने इनसे पहले कितनी क़ौमो को हलाक कर डाला जो साज़ों समाने ज़िन्दगी के लिहाज़ से (इनसे भी) कहीं बेहतर थे।
(सू०–मरयम–19/73,74)

जब गुमराह लोग देखेंगे जिनका उनसे वाअ़दा किया गया है कि दोनो फ़रीक़ो में से कौन बेहतर है और कौन बदतर है तो अ़नक़रीब वो जान लेंगे कि मक़ाम के लिहाज़ से कौन बदतर है और कौन बेहतर है और जमाअ़त के ऐतबार से भी वो जान लेंगे कि कौन ज़्यादा कमज़ोर तर है और उन्हें उस वक़्त हक़ीक़त माअ़लूम हो जायेगी और यक़ीन हो जायेगा कि वाक़ई वो बदकार लोग थे।

कुफ़्फ़ारों ने अहले ईमान से सुवाल किया कि हम तुमसे यानी मोमिनों से अपने मक़ाम व मर्तबे और दरजा-ए-शानो शौक़त व इ़ज़्ज़त और मालो दौलत में बेहतर हैं और हम कुरानो हदीस और दीन व शरीअ़त को नहीं मानते और न हम एक अल्लाह की इ़बादत करते हैं और न तुम्हारे रसूल पर ईमान लाये हैं फिर भी देखो हम ऐ़शो इशरत में रह रहे हैं तुम और तुम्हारे साथी और तुम्हारे नबी जो अल्लाह के महबूब होने का दाअ़वा करते हैं तो फिर ज़रा बताओ मजलिस व जमाअ़त और कुव्वत व ताक़त और ऐ़शो इशरत व मालो दौलत के एतबार से कौन बेहतर है

ऐ मुसलमानों क्या तुम इस पर ग़ौर नहीं करते कि हम इ़ज़्ज़त व दौलत वाले हैं और तुम गुरबत वाले हो और हम कसरत वाले हैं और तुम क़िल्लत वाले हो और हम ऐ़श और आराम वाले हैं और तुम तंग दस्ती व परेशानी वाले हो क्या तुम इस हालत व कैफ़ियत से अंदाज़ा नहीं लगाते हो कि हम सच्चे हैं और तुम झूठे हो और हम हक़ पर है और तुम बातिल पर हो लेकिन कुफ़्फ़ार जब पुलसिरात पर पहुँचेगे तो वो अपने दर्दनाक और बुरे अन्जाम को जान लेंगे और जब नेक मोमिन पुलसिरात से गुज़रेंगे तो उस वक़्त वो नूर के गिलाफ़ों में होंगे और दोज़ख़ उनसे कहेगी ऐ मोमिन तुम जल्दी से गुज़र जाओ क्योंकि तेरे नूर ने मेरी तपिस को कम कर दिया है पुलसिरात पूरे जहन्नम के लम्बाई पर क़ायम है और उस-

पर से हर शख़्स को गुज़रना है जब कुफ़्फ़ार इस पुलसिरात से गुज़रेंगे तो वो दोज़ख़ को देखेंगे तो जान लेगे कि हमारा ठिकाना यही दोज़ख़ है और हमें हमेशा इसी दोज़ख़ में रहना है और तमाम कुफ़्फ़ार नारे दोज़ख़ में घुटनों के बल गिरा दिये

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

(क़यामत के दिन) हम ज़रुर जमाअ़ करेंगे फिर हम उन सब को जहन्नम के गिर्द ज़रुर हाज़िर करेंगे इस तरह कि वो घुटनों के बल गिरे पड़े होंगे फिर हम हर गिरोह में से ऐसे शख़्स को ज़रुर चुनकर निकाल लेंगे जो उनमें से (खुदाये) रहमान का सबसे ज़्यादा नाफ़रमान व सरकश था फिर हम उन लोगों को खूब जानते हैं जो दोज़ख़ में झोंके जाने के ज़्यादा सज़ावार हैं और तुममें से हर एक शख़्स का उस दोज़ख़ के ऊपर से गुज़र होने वाला है ये (वाअ़दा) क़तई तौर पर आपके रब के ज़िम्मे है जो ज़रुर पूरा होकर रहेगा फिर हम परहेज़गारों को निजात देंगे और ज़ालिमों को घुटनों के बल उसमें गिरा हुआ छोड़ देंगे।
(सू०-मरयम-19/68 ता 72)

नाफ़रामानों व सरकशों को अल्लाह तआ़ाला ने दुनियां में ज़्यादा ढील दी है क्योंकि दुनिया की ज़िन्दगी फ़ानी और मुतनाही है और आख़िर ये ज़िन्दगी तो एक दिन ख़त्म हो जायेगी फिर पहले उन्हें मौत की सख़्तियों से दो चार होना पड़ेगा-

फिर उन्हें अ़ज़ाबे क़ब्र और फिर अ़ज़ाबे हश्र और बिल आख़िर उनको दोज़ख़ का अ़ज़ाब दिया जायेगा तो फिर दुनिया की ज़िन्दगी की नेअ़मतों पर फ़ख़्र व खुशी कोई माअ़ने नहीं रखती दुनिया में नाफ़रमानों और सरकशो को जो नफ़ा हासिल है वो अ़ारज़ी है और मोमिनों की तंगदस्ती पर सब्र करने वालों व नेक आअ़माल करने वालों का अज्रो सवाब दायमी है

नेक लोगों को अल्लाह तअ़ाला उनके आअ़माले सालिहा और इताअ़ते इलाही व इताअ़ते रसूल और इख़्लास के सबब हिदायत में मज़ीद इज़ाफा फ़रमाता है और उनके माअ़रिफ़त के दरजात को बुलन्द किया जाता है पहले उसे एक दर्जे का कुर्ब अ़ता किया जाता है फिर दूसरे दर्जे का और ये सिलसिला यूँही चलता रहता है अल्लाह तअ़ाला उनके ईमान में मज़ीद तक़्वीयत और ईमान के दरजात बुलन्द फ़रमाता है उनके इल्म व अ़मले सालेह के रास्ते में मज़ीद आसानी फ़रमाता है।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
ताकि जो लोग ईमान लाये उनके ईमान में इज़ाफ़ा हो। (सू०–मुदस्सिर–74/31)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
जब उनके सामने अल्लाह की आयत तिलावत की जाती है तो उनका ईमान बढ़ जाता।
(सू०–अनफ़ाल–8/2)

गुमराह व सरकश और नाफ़रमान अपने माल व औलाद और अपने मक़ाम और दुनियावी अहवाल को अपने हुस्ने हाल की अ़लामत समझते हैं मगर ऐसा नहीं है बल्कि मुआ़मला इसके बरअ़क्स है कि नेक आअ़माल जिससे आख़िरत में सआ़दत का मक़ाम हासिल हो और अहकामे शरीअ़त की ताअ़मील जो अल्लाह तआ़ला की रज़ा व खुशनूदी का सबब बने बन्दे के लिये इसमें ख़ैर व भलाई है और निजात का ज़रिया है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

क्या वो लोग ये गुमान करते हैं कि दुनिया में हम जो भी उनके माल व औलाद में इज़ाफ़ा करके हम उनकी मदद कर रहे हैं और क्या हम उनके लिये भलाइयों में इज़ाफ़ा कर रहे हैं (ऐसा नहीं है) बल्कि उन्हें अस्ल हक़ीक़त का शऊ़र ही नहीं है। (सू०-मु-मिनून-23/55,56)

गुमराहों के पास माल व मताअ़ और औलाद की कसरत अल्लाह तआ़ला की रहमत व उसके राज़ी होने की दलील नहीं बल्कि ये रब तआ़ला की तरफ़ से उन्हें ढील है ताकि वो अपने गुनाहों में और इज़ाफ़ा करें और अपनी आख़िरत के अ़ज़ाब को और ज़्यादा कर लें इमाम राज़ी ने ये रिवायत ज़िक्र की है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने नबीयों में से किसी नबी की तरफ़ ये वही की कि मेरा बन्दा उस पर खुश होता है कि जब मैं उस पर दुनिया कुशादा कर देता हूँ हालांकि वो मुझसे

बहुत दूर होता जाता है और मेरा वो बन्दा जो अफ़सोस करता है कि जब मैं उससे दुनिया उठा लेता हूँ हालाकि वो मेरे क़रीब होता जाता है।

दुनिया परस्तों की ऐशो आराम उनके लिये मुसीबत व आफ़त है और बुरे अन्जाम का बाइस है क्योंकि दुनियावी चीज़ें निहायत हक़ीर व ज़लील हैं और इन्सान माल व औलाद की मुहब्बत में मुब्तिला हो जाता है फिर वो दिन रात जाइज़ व नाजाइज़ तरीक़े से मालो दौलत जमाअ़ करने में लगा रहता है और जैसे जैसे उसके दिल में माल की मुहब्बत बढ़ती जाती उसके दिल से आख़िरत और यादे इलाही से ग़फ़लत भी बढ़ती जाती है।

दुनिया की सारी नेअ़मतें आफ़तों व तकलीफ़ों और हसरतों से घिरी हुई हैं और इनके साथ बड़ी बड़ी आज़माइशें व मुसीबतें भी है और दुनियावी चीज़ों पर हिसाब व इ़ताब (ग़ज़ब) सख़्त है तो ऐसी आ़रज़ी चीज़ें जो इतनी आफ़त का बाइस हों वो दिल लगाने के क़ाबिल कैसे हो सकती है।

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) चारपाई पर आराम फ़रमां रहे थे हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) आये तो उन्होंने देखा कि चारपाई के निशानात आपके पहलू में नक़्श हो गये हैं हज़रत अबू बक्र

सिद्दीक़ और हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने कहा या रसूलल्लाह आपकी चारपाई और बिस्तर की सख़्ती से आपको किस क़दर तक्लीफ़ पहुँचती है और क़ैसर व किस्रा रेशम व दीबाज के बिस्तरों पर सोते हैं आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐसा न कहो क़ैसर व किस्रा के बिस्तर दोज़ख़ में हैं और मेरा ये बिस्तर व मेरी चारपाई का अन्जाम जन्नत है। (इब्ने हिब्बान सहीह–1/756-ह०–704)

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) एक चटाई पर लेटे हुये थे आपके और चटाई के दरमियान कोई चीज़ न थी और आपके सर मुबारक के नीचे एक चमड़े का तकिया था जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी तो मैंने देखा कि चटाई के निशानात आपके पहलू में गड़ गये हैं मैं रोने लगा आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम किस वजह से रो रहे हो मैंने अ़र्ज़ किया बेशक क़ैसर व किस्रा किस क़दर ऐशो आराम में हैं और आप अल्लाह के रसूल हैं फिर आप ने फ़रमाया क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं हो कि उनके लिये दुनिया हो और हमारे लिये आख़िरत हो (बुख़ारी–4/836-ह०-4913)
(मुस्लिम–सहीह–3/163-ह०–3691)
(इब्ने माजा–सुनन–3/360-ह०–4153)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–5/225-ह०–4188)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/178-ह०–1449)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि अन्सार की एक औ़रत ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के लिये एक गद्दा भेजा जिसमें ऊन भरा हुआ था तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझसे पूछा ऐ आयशा ये क्या है तो मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह फुलां अन्सारी औ़रत आप के आराम के लिये ये गद्दा दे गई है तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ आयशा इसको वापस कर दो खुदा की क़सम मैं चाहूँ तो अल्लाह तआ़ला मेरे साथ सोने और चाँदी के पहाड़ों को र'वाना कर दे।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/183-ह०–1468)

जिस शख़्स की चाहत व ख़्वाहिश दुनिया की ज़िन्दगी व उसकी रौनक़ और उसकी ज़ैबो ज़ीनत के गिर्द घूमती हो मसलन खूबसूरत औ़रत और बेटों के हुसूल की ख़्वाहिश और सोने चाँदी के ख़ज़ानों की तलब और माल व जायदाद की हिर्स और रग़बत और इन्हीं के हुसूल के लिये कोशिश व अ़मल हों और वो उख़र'वी आअ़ला नेअ़मतों से बेरग़बत और अपने बुरे अन्जाम से बेफ़िक्र हो तो वो मोमिन नहीं हो सकता बल्कि वो काफ़िर या मुनाफ़िक़ है और यही वो लोग हैं जिनके लिये सिर्फ़ दोज़ख़ है और दुनिया में इनका अमीर होना इनकी आख़िरत की बद नसीबी है और निहायत ही दर्दनाक बुरे अन्जाम की अ़लामत है।

काफ़िरों के लिये दुनियावी ज़िन्दगी मुज़य्यन की गई

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
काफ़िरों के लिये दुनिया की ज़िन्दगी खूब आरास्ता कर दी गई है और वो ईमान वालों का मज़ाक़ उड़ाते हैं हालांकि जिन्होंने तक़्वा इख़्तियार किया वो क़यामत के दिन उन (काफ़िरों) से बहुत बुलन्द मक़ाम पर होंगे और अल्लाह जिसे चाहता है बे-हिसाब नवाज़ता है। (सू०-बक़राह-2/212)

सो आपको न तो उनके अमवाल तआ़ज्जुब में डालें और न ही उनकी औलाद बस अल्लाह तो यही चाहता है कि उन्हें (इन्हीं) चीज़ों की वजह से दुन्यावी ज़िन्दगी में अ़ज़ाब दे और उनकी जाने इस हालत में निकलें कि वो काफ़िर हों। (सू०-तौबा-9/55)

दुनिया की ज़िन्दगी वो है जो नफ़्स की ख़्वाहिशात में सर्फ़ हो और जो तोशा आख़िरत जमाअ़ करने में सर्फ़ हो वो दीनी ज़िन्दगी है और काफ़िरों व मुनाफ़िक़ों की मालदारी और उनकी औलाद को देखकर तआ़ज्जुब और हैरत करना हिमाकत है और ये सोचना कि अल्लाह तआ़ला ने नाफ़रमानों व कुफ़्फ़ारों को दुनिया में कसीर नेअ़मतें और माल क्यों दिया तो इसकी एक वजह ये है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला कुफ़्फ़ारों को

उनकी नेकियों का बदला दुनिया में ही दे देता है।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

जो लोग (फ़क्त) दुन्यावी ज़िन्दगी व उसकी ज़ीनत (व अराइश) के तालिब हैं तो हम उनके आअ़्माल का पूरा पूरा बदला इसी दुनिया में ही दे देते हैं और उन्हें इस (दुनिया के सिले) में कोई कमी नहीं की जाती (और) ये वो लोग हैं जिनके लिये आख़िरत में कुछ (हिस्सा) नहीं सिवाये आतिशे दोज़ख़ के और वो सब (आअ़्माल अपने उख़रवी अज्र के हिसाब से) अकारत हो गये जो उन्होंने दुनिया में अन्जाम दिये थे और वो (सब कुछ) बातिल और बेकार हो गये जो वो (अ़मल) किया करते थे। (सू०-हूद-11/15,16)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई काफ़िर कोई नेक अ़मल करता है तो उसे उस नेक अ़मल का बदला दुनिया में ही मिल जाता है हत्ता कि जब वो आख़िरत में पहुँचेगा तो उसके पास कोई नेक अ़मल नहीं होगा जिसका उसे अज्र दिया जाये और मोमिन की नेकियों का बदला अल्लाह तआ़ाला आख़िरत के लिये रख छोड़ता है और दुनिया में भी उसको अ़ता फ़रमाता है।
(मुस्लिम-सहीह-6/366-ह०-7089)

दूसरी वजह ये है अल्लाह तआ़ाला काफ़िरों को

वक़्त मुअ़य्यन तक मुहलत व ढील देता है ताकि वो और गुनाहों में ज़्यादा बढ़ जायें और उनके लिये ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और काफ़िर ये गुमान हरगिज़ न करें कि हम जो उन्हें मुहलत दे रहे है ये उनकी जानों के लिये बेहतर है हम तो ये मुहलत उन्हें इसलिये दे रहे हैं कि वो गुनाह में और बढ़ जाये और उनके लिये बिल आख़िर ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है।
(सू०–आले इमरान–3/178)

➡हज़रत उ़क़बा बिन आमिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम देखो कि अल्लाह तआ़ला बन्दों को उनकी नाफ़रमानी के बावुजूद भी उनकी ख़्वाहिशात के मुताबिक़ अ़ता कर रहा है तो ये अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ये उनको ढील है (मुस्नद अहमद–6/122-ह०–17313)

और तीसरी वजह ये है कि अल्लाह तआ़ला उन्हें दुन्यावी ज़िन्दगी में अ़ज़ाब देता है कि ज़्यादा माल की हिर्स व तलब के सबब उनकी राहत व आराम उनसे छीन लेता है कि वो माल को मेहनत से जमाअ़ करें और मशक़्क़त से उसकी हिफ़ाज़त करें और हसरत छोड़ कर मरें और जब ये मरेंगे तो इनकी रुह कुफ़्र की हालत में निकलेगी और वो दोज़ख में ज़लील व ख़्वार होंगे और माल व–

औलाद की वजह से मेहनत व मशक़्क़त और तकलीफ़ व रंजो ग़म कुफ़्फ़ारों के लिये दुनिया में अ़ज़ाब है और इन्हीं चीज़ों पर मुसलमान अगर सब्र करे तो उसके लिये अज्रो सवाब है और काफ़िरों पर दुनिया में जो मसाइब आते हैं उन मसाइब पर उनको आख़िरत मे कोई अज्र नहीं मिलेगा क्योंकि ये मसाइब उनके लिये अ़ज़ाब हैं।

मुसलमानों को काफ़िरों के माली व अफ़रादी कुव्वत पर तअ़ाज्जुब नहीं करना चाहिये और न ही काफ़िरों की तरह दुनिया की मुहब्बत व रग़बत और माल की हवस को अपने दिल में जगह देना चाहिये और हमें चाहिये कि हम ज़रा सोचे और ग़ौर करें कि अगर हमारे दुन्यावी मुअ़ामलात और माल की हवस और आख़िरत से ग़फ़लत कुफ़्फ़ारों की मिस्ल हो जाये तो हम मुसलमानों में और उन कुफ़्फ़ारों में क्या फ़र्क़ रह जायेगा।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

(ऐ बन्दे) काफ़िरों का शहरों में (ऐशो इशरत के साथ) घूमना फिरना तुझे धोके में न डाल दे थोड़ी सी (चन्द दिनों की) मताअ़ है फिर उनका ठिकाना दोज़ख़ होगा और वो बुहत ही बुरा ठिकाना है। (सू०-आले इमरान-3/196,197)

और तुम उस चीज़ की तमन्ना न किया करो कि जिसमें अल्लाह तअ़ाला ने तुममें से बाअ़ज़ को बाअ़ज़ पर फ़ज़ीलत दी है। (सू०-निसा-4/32)

जो माल व औलाद अल्लाह तआ़ला की याद से ग़ाफ़िल करे वो बहुत बड़ी आफ़त और वबाल है इससे उन लोगों को नसीहत हासिल करनी चाहिये जो अपने माल की कसरत और औलाद की वजह से अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र व उसकी इ़बादत व इताअ़त से ग़ाफ़िल हैं।

दुनिया की ज़िन्दगी उनकी आँखों के सामने खुशनुमा बना दी जाती है जो दुनिया के तालिब और अपनी आख़िरत से ग़ाफ़िल होते हैं तो रब तआ़ला उनके सामने दुन्यावी ज़िन्दगी को मुज़य्यन और आरास्ता कर देता है पस वो उस दुनिया में मगन और मुतमइन हो जाते हैं और फिर उनकी ख़्वाहिश और उनके आअ़माल सब कुछ दुनिया के लिये ही होते हैं और माल व मताअ़ के हुसूल में मशगूल रहते हैं ये उनकी कम अ़क़्ली और कम नज़री की दलील है क्योंकि ये दुनिया आज़माइश का घर है और ये फ़ना होने वाली शैः है और इसमें रहने वाला मुसाफ़िर है और उसका अस्ल घर और उसकी हक़ीक़ी मन्ज़िल आख़िरत है।

ग़फ़लत के चार दरजे हैं पहला दरजा ये है कि इन्सान गुनाह करके नादिम हो और आइन्दा गुनाह न करने का क़सद करे और दूसरा दर्जा ये है कि इन्सान गुनाह भी करे और नादिम भी न हो और तीसरा दर्जा ये है कि इन्सान गुनाह करे और उस पर खुश हो कि मैंने बहुत अच्छा काम किया है और ये ला इलाज बीमारी है और चौथा

दर्जा ये है कि इन्सान अपने गुनाह पर ख़ुश हो और गुनाहों से बचने वालो को हक़ीर व ज़लील जाने ये दर्जा भी ला इलाज व कुफ़्र की अ़लामत है और सबसे बेहतर मोमिन वो है जो दुनिया में तो रहता है लेकिन दुनिया उसमें नहीं रहती और दुनिया जिसके दिल में उतर जाये वो ग़ाफ़िल है।

नेक मोमिन और ग़ाफ़िल मुसलमान और काफ़िर की ज़िन्दगी की मिसाल ऐसी है जैसे कि समुन्दर में मोती भी है और पानी के बुलबुले भी और मछलियाँ भी हैं और जो मोती जब समुन्दर से निकलता है तो शाही ताज में पहुँचता है और मछली पानी से निकलते ही मर जाती है और बुलबुले की ज़िन्दगी ऐ़न पानी है तो नेक मोमिन की ज़िन्दगी पानी के मोती की तरह है कि जब वो दुनिया से कूच करेगा तो हमेशाा बाक़ी रहने वाली नेअ़मतों में होगा और ग़ाफ़िल मुसलमान मछली की तरह है कि जब वो मरेगा तो ग़फ़लत की नींद से बेदार होगा और अपने अन्जाम को देख लेगा और काफ़िर की ज़िन्दगी फ़क़त पानी के बुलबुले की तरह है कि सिर्फ़ उसकी ऐश व इशरत दुनिया तक ही महदूद है और जब वो मरेगा तो उस पर शदीद अ़ज़ाब होगा और बिल आख़िर वो नारे दोज़ख़ में दाख़िल किया जायेगा जिसमें वो हमेशा रहेगा।

दुनिया काफ़िरों के लिये जन्नत व उनकी ऐ़शो इ़शरत का मक़ाम है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और जिस दिन काफ़िर लोग आतिशे दोज़ख़ के सामने पेश किये जायेंगे (तो उनसे कहा जायेगा) तुम अपनी लज़ीज़ व मरगूब चीज़े अपनी दुन्यावी ज़िन्दगी में ही हासिल कर चुके और उनसे (खूब) नफ़अ़ उठा चुके हो पस आज के दिन तुम्हें सख़्त ज़िल्लत के अ़ज़ाब की सज़ा दी जायेगी इस वजह से तुम ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते थे और इस वजह से कि तुम नाफ़रमानी किया करते थे। (सू०–अहक़ाफ़–46/20)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक जो लोग हमसे मिलने की उम्मीद नहीं रखते और दुन्यावी ज़िन्दगी से खुश व उसी पर मुतमइन हो गये हैं और जो हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं उन्हीं लोगों का ठिकाना दोज़ख़ है उन आअ़माल के बदले में जो वो (दुनिया में) कमाते रहे और जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल करते रहे उन्हें उनका रब उनके ईमान के बाइस (जन्नतों तक) पहुँचा देगा जहाँ उनकी रिहायश गाहों के नीचे से नहरें बह रही होंगी ये ठिकाने उख़र‘वी नेअ़मतों के बाग़ात में होंगे उन जन्नतों में उनकी दुआ़ ये होगी कि ऐ अल्लाह तू पाक है व उसमें उनकी आपस में दुआ़ऐ ख़ैर का कलमा सलाम–

होगा और उनकी दुआ़ इन कालिमात पर ख़त्म होगी कि तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह तआ़ला के लिये हैं जो तमाम जहानों का पर‘वर दिगार है और अगर अल्लाह तआ़ला (उन काफ़िर) लोगों को बुराई (यानी अ़ज़ाब) पहुँचाने में जल्द बाज़ी करता जैसे वो तलबे नेअ़मत में जल्द बाज़ी करते हैं तो यक़ीनन उनकी मिआ़दे (उ़म्र) उनके हक़ में जल्द पूरी कर दी गई होती ताकि वो मरकर जल्द ही दोज़ख़ में पहुँच जाते बल्कि हम ऐसे लोगों को जो हमसे मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते हम उन्हें उनकी सरकशी में छोड़े रखते हैं कि वो भटकते रहें। (सू०–युनूस–10/7 ता 11)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और काफ़िर ये गुमान हरगिज़ न करे कि हम जो उन्हें मुहलत दे रहे है ये (मुहलत) उनकी जानों के लिये बेहतर है बल्कि हम तो ये मुहलत उन्हें सिर्फ़ इसलिये दे रहे हैं कि वो गुनाह में और बढ़ जायें और उनके लिये बिल आख़िर ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है। (सू०–आले इमरान–3/178)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

यही वो लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी ख़रीदी पस उन पर से न तो अ़ज़ाब हल्का किया जायेगा और न ही उनको मदद दी जायेगी। (सू०–बक़राह–2/86)

बेशक अल्लाह तआला ने दुनिया को कुफ़्फ़ारों

व सरकशों के लिये आरास्ता की है और उन्हें दुनिया में उनकी मन पसंद व लज़ीज़ चीज़ें अ़ता की गईं हैं ताकि वो उनसे सिर्फ़ दुनिया में फ़ायदा और लज़्ज़त हासिल करें ताकि आख़िरत में उनका कोई हिस्सा बाक़ी न रहे और बिल आख़िर तमाम कुफ़्फ़ार नारे दोज़ख़ का ईधन होंगे और उन्हें ज़लील और रुसवा कुन अ़ज़ाब दिया जायेगा और नेक लोग जो दुनिया की ऐश व इशरत व उसकी लज़्ज़तों से किनारा कश रहते हैं और आख़िरत की ज़िन्दगी को दुनिया की ज़िन्दगी पर तरजीह देते हैं उनके लिये बेहतरीन अज्रो सवाब है और उख़र‘वी दायमी नेअ़मतें और जन्नत है जिसमें वो हमेशा रहेंगे।

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप रब तआ़ला से दुआ़ कीजिये कि अल्लाह तआ़ला आपकी उम्मत पर वुसअ़त फ़रमाये क्योंकि उसने ईरान व रोम के लिये वुसअ़त करके उन्हें दुनिया अ़ता फ़रमाई है जबकि वो अल्लाह तआ़ला की इ़बादत भी नहीं करते तो आपने फ़रमाया ऐ उ़मर ये वो लोग हैं जिन्हें उनके हिस्से की चीज़ें दुनिया में ही दे गई हैं। (बुख़ारी–सहीह–2/692-ह०–2467)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया मोमिन के

लिये क़ैद खाना है और काफ़िर के लिये जन्नत है
(मुस्लिम–सहीह–6/468-ह०–7417)
(इब्ने माजा–सुनन–3/350-ह०–4113)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/525-ह०–2324)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/290-ह०–10461)

➡ हज़रत सलमान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना कि दुनिया मोमिन के लिये क़ैद खाना है और काफ़िर के लिये जन्नत है और ये भी फ़रमाते हुये सुना जो लोग दुनिया में बहुत पेट भर कर खाते हैं क़यामत के दिन वो सबसे ज़्यादा भूके होंगे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/434-ह०–6545)

एक रिवायत में है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुन्यावी लज़्ज़ात व शहवात को तर्क करने की वजह से दुनिया मोमिन के लिये क़ैद है (शुअ़बुल ईमान–7/290-ह०-10463)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया उसका घर है जिसका आख़िरत में कोई घर न हो और दुनिया उसका माल है जिसका आख़िरत में कोई माल न हो और दुनिया को वो ही जमाअ़ करता है जिसमें अ़क़्ल न हो।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/330-ह०–10638)

सब्र के फ़ज़ाइल अहादीस की रोशनी में

-: सब्र से बढ़कर कोई नेअ़मत नहीं :-

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो सुवाल से बचे तो अल्लाह तआ़ला उसे सुवाल से बचाता है और जो अपने दिल को बेपर'वाह रखे अल्लाह तआ़ला उसके दिल को बेपरवाह कर देता है और अल्लाह तआ़ला जो कुछ भी तुम्हें अ़ता करे वो बेहतर है और जो सब्र करता है तो रब तआ़ला उसके लिये सब्र को आसान कर देता है और सब्र से बढ़कर कोई नेअ़मत ऐसी वुसअ़त व कुशादगी वाली नहीं जो अल्लाह तआ़ला ने किसी को दी हो
(मुस्लिम–सहीह–3/71-ह०–2424)
(अबू दाऊद–सुनन–2/310-ह०–1644)
(नसाई–सुनन–2/178-ह०–2592)

साबिरीन को अल्लाह दोस्त रखता है

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला दोस्त रखता है मोहताज, फ़क़ीर, मोमिन–

को जो अ़यालदार होकर सुवाल से बाज़ रहता है और अपने फ़क़्र व फ़ाक़ा पर सब्र करता है और अक्सर अल्लाह वाले ऐसे ही लोगों में होते हैं।
(इब्ने माजा–3/353-ह०–4121)

हक़ीक़ी सब्र पर सवाब मिलता है

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हक़ीक़ी सब्र वो है जो किसी सदमे या किसी मुसीबत के आगाज़ के वक़्त किया जाये यानी सवाब उसी में मिलता है आख़िर तो सबको सब्र आ जाता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/549-ह०-987)
(इब्ने माजा–सुनन–1/539-ह०-1596)
(इब्ने अबी शैबा–3/778-ह०-12215,12218)

तवील ग़म वाला आख़िरत में तवील खुशी वाला होगा

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया में जो शख़्स तवील रंजो ग़म वाला है वो आख़िरत में तवील सुरुर व खुशी वाला होगा और जो दुनिया में ज़्यादा सेर होकर खाने वाला है तो वो क़यामत के दिन ज़्यादा भूका रहने वाला होगा।
(कंजुल उ़म्माल–3/640-ह०-16578)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि फुक़रा की एक जमाअ़त ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के पास अपना एक क़ासिद भेजा कि जिसने हाज़िरे ख़िदमत होकर अ़र्ज़ की मैं फुक़रा की जमाअ़त का नुमाइन्दा बनके हाज़िर हुआ हूँ तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम्हें भी मरहबा और उन्हें भी मरहबा जिनके पास से तुम आये हो और तुम ऐसे लोगों के पास से आये हो कि जिनसे मैं मुहब्बत करता हूँ फिर क़ासिद ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह फुक़रा ने ये गुज़ारिश की है कि मालदार लोग भलाई ले गये क्योंकि वो हज करते हैं और हमें हज करने की इस्तिताअ़त नहीं है और वो उ़म्राह करते हैं और हम इस पर क़ादिर नहीं और जब वो बीमार होते हैं तो अपना माल सद्क़ा करके आख़िरत के लिये जमाअ़ कर लेते हैं

उस क़ासिद की ये बातें सुनकर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरी तरफ़ से फुक़रा को ये पैग़ाम पहुँचा दो कि उनमें से जो अपनी गुरबत पर सब्र करे और सवाब की उम्मीद रखे उसे तीन ऐसी तीन चीज़ें हासिल होंगी जो मालदारों को हासिल नहीं होंगी 1- जन्नत में एक ऐसा बाला ख़ाना है कि जिसकी तरफ़ अहले जन्नत ऐसे देंखेंगे जैसे दुनिया वाले आसमान के सितारों को देखते हैं उन बाला ख़ानो में सिर्फ़ अम्बिया, शहीद, फ़क़ीर और

फ़क़ीर मोमिन ही दाख़िल होंगे 2- फ़ुक़रा मालदार लोगों से 500 साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे 3- मालदार सुबहान अल्लाह अल्हम्दु लिल्लाह और ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर कहे और यही कलिमात फ़क़ीर भी कहे तो मालदार फ़क़ीर के बराबर अज्रो सवाब नहीं पा सकता अगरचा वो दस हज़ार दिरहम भी सद्क़ा करें और दीगर नेक आअ़्माल में भी यही मुआ़मला है फिर जब क़ासिद ने वापस जाकर अपने फ़ुक़रा भाइयों को ये फ़रमाने मुस्तफ़ा सुनाया तो उन्होंने कहा कि हम राज़ी हैं हम राज़ी हैं। (कुव्वतुल कुलूब–1/436) (इहयाउल उ़लूम–4/660,453)

सब्र हर ख़ैर की चाबी है

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सब्र हर ख़ैर की चाबी है। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/182-ह०-9996)

सब्र के बग़ैर कोई ईमान नहीं

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि सब्र का मर्तबा ईमान के अन्दर ऐसा है जैसे वुजूद में सर का मक़ाम है कि जब सर को काट दिया जाये तो बाक़ी जिस्म सड़कर बदबूदार हो जाता है नीज़ फ़रमाया जिसका सब्र नहीं उसका कोई ईमान नहीं।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/119-ह०-9718)

रिज़्क़ की तंगी पर सब्र के बदले जन्नत

➡ हज़रत बरा बिन आ़ज़िब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स रिज़्क़ की तंगी पर सब्र करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसको जन्नतुल फ़िरदौस में वो ठिकाना देगा जहाँ वो खुद चाहेगा।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/120-ह०-9722)

कम रिज़्क पर सब्र करने वाला कामयाब

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो शख़्स कामयाब हो गया जो मुसलमान हो गया और उस को बामुश्किल गुज़ारा रिज़्क़ दिया गया और उसने उस कम रिज़्क़ पर सब्र किया।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/120-ह०-9723)

सब्र करना मुश्किल अम्र है

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब कसरत के साथ नफ़्स की इताअ़त

(फ़रमांबरदारी) हो रही होगी ख़्वाहिशाते नफ़्स की इत्तिबा हो रही होगी और दुनिया को तरजीह दी जा रही होगी और साहिबे राय अपनी राय को पसंद कर रहा होगा और उस पर खुश हो रहा होगा तो उस वक़्त तुम खुद को लाज़िम पकड़ना और अ़वाम का मुआ़मला छोड़ देना और बेशक तुम्हारे पीछे अय्यामे सब्र होंगे जिनमें सब्र करना मुट्ठी में अंगारा रखने की तरह मुश्किल होगा उन अय्याम में नेक अ़मल करने वालों का सवाब पचास लोगों के बराबर होगा जो उसके जैसे अ़मल करें। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/121-ह०-9713)

सब्र का हुक्म व तल्क़ीन

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ऐ ईमान वालो सब्र करो और साबित क़दमी में ज़्यादा मेहनत करो और जिहाद के लिये खूब मुस्तइद्द (आमादा, तैयार) रहो और अल्लाह का तक़्वा क़ायम रखो ताकि तुम कामयाब हो सको। (सू०–आले इमरान–3/200)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक तुम लोग मेरे बाद देखोगे कि इन्साफ़ नहीं हो रहा है बल्कि बाअ़ज़ लोगों के साथ तरजीही सुलूक किया जा रहा है तो उस वक़्त तुम सब्र करते रहना यहाँ तक कि तुम लोग मुझे हौज़े कौसर पर पा लेना।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/122-ह०-9735)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस वक़्त तुम लोग किसी ऐसे अम्र को देखो जिसे बदलने की तुम इस्तिताअ़त नहीं रखते तो उस पर सब्र किया करो। (बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-7/140-ह०-9802)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने किसी मुआ़मले में कोई नापसंदीदा चीज़ देखे तो उसे चाहिये कि वो सब्र करे। (बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-7/122-ह०-9734)

अल्लाह तआ़ला साबिरीन को पसंद फ़रमाता है

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से फ़रमाता है कि जाओ मेरे फुलां बन्दे के पास और उस पर मसाइब उढ़ेल दो फिर वो फ़रिश्ते उस पर अ़मल करते हैं मगर वो बन्दा अपने मसाइब पर सब्र करता है फिर वो फ़रिश्ते वापस आकर कहते हैं कि हमने तो उस बन्दे पर मसाइब उढेल दिये कि तेरा हुक्म था मगर वो तो सब्र कर रहा है तो अल्लाह फ़रमाता है मैं उसके सब्र और उसके पुकारने को पसंद करता हूँ। (बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-7/140-ह०-9801)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि जो सब्र करना चाहे तो रब तआ़ला उसे सब्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता है और किसी को कोई ऐसा अ़तिया नहीं दिया गया जो सब्र से बेहतर और वसीअ़तर हो। (मुस्लिम–2/388-2424)

कच्चा बच्चा गिरने पर सब्र करने के बाइस जन्नत

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसका कच्चा बच्चा गिर जाये तो वो कच्चा बच्चा अल्लाह अज़्ज़ा व जल से झगड़ा करेगा जब अल्लाह तआ़ला उसके वालिदैन को दोज़ख़ में डालेगा फिर हुक्म होगा ऐ कच्चे बच्चे ऐ झगड़ने वाले अपने माँ बाप को जन्नत में ले जा तो वो बच्चा अपने माँ–बाप को जन्नत में ले जायेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–1/543-ह०–1608)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/132-ह०-9763,9764)

ना बालिग़ औलाद ज़रियाए बख़्शिश

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हज़रत उ़स्मान बिन मज़ऊन का बेटा फ़ौत हो गया तो उन्हें बड़ा ग़म पहुँचा और उन्होंने अपने घर में ही नमाज़ की जगह बना ली

जहाँ बैठकर वो इबादत किया करते थे हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को जब ये बात माअ़लूम हुई तो आपने फ़रमाया ऐ उ़स्मान जन्नत के आठ दर'वाज़े हैं और जहन्नुम के सात दर'वाज़े हैं और क्या तुम्हें इस बात की खुशी नहीं कि जन्नत में तुम जिस दर'वाज़े के पास जाओ तो वहाँ अपने बेटे के खड़ा पाओ जो तुम्हारा दामन पकड़कर अपने रब के हुजूर तुम्हारी शफ़ाअ़त करेगा उन्होंने कहा या रसूलल्लाह क्यों नहीं फिर किसी ने कहा या रसूलल्लाह क्या हमारी फ़ौत शुदा औलाद के लिये वही है जो उ़स्मान के लिये है आपने फ़रमाया हां जिसने सब्र किया और सवाब की उम्मीद रखी फिर सहाबा ने अ़र्ज़ किया क्या हमारी औलाद के लिये यही अज्र है आपने फ़रमाया हां मेरी उम्मत में से हर शख़्स के लिये है जो सवाब की उम्मीद रखे।

(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/130-ह०-9761,62)
(कंजुल उ़म्माल–2/338-ह०-8673,74)

बीमारी में सब्र करने वाले को अ़ज़ीम अज्र की बिशारत

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई बन्दा बीमार होता है तो अल्लाह तआ़ला उस बीमार बन्दे की तरफ़ दो फ़रिश्तों को भेजता है कि देखो मेरा बीमार बन्दा अ़यादत करने वालो से शिकवा शिकायत करता है या मेरी हम्द व सना बयान करता है (यानी सब्रो

शुक्र पर क़ायम रहता है) अगर वो अपनी बीमारी पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता है और सब्र पर क़ायम रहता है तो फिर वो दोनों फ़रिश्ते उस (हम्दो सना वग़ैराह) को लेकर रब तआ़ला के पास हाज़िर होते हैं हालाँकि अल्लाह तआ़ला खूब जानने वाला और खूब सुनने वाला है फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैंने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है कि अगर मैंने इसे मौत दी तो मैं इसे जन्नत में दाख़िल करूँगा और अगर मैंने इसे शिफ़ा दी तो मैं इसके गोस्त के बदले बेहतरीन गोस्त और खून के बदले बेहतर खून अ़ता करूँगा और इसके गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाऊँगा
(अत्तरग़ीब–वत्तरहीब–2/410-ह०–1727)
(मौता इमाम मालिक–2/940)

बीमारी व दीगर तकलीफ़ो परेशानी के सबब गुनाहों में तख़फ़ीफ़ होती है

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बुख़ार को बुरा मत कहो क्योंकि वो दूर करता है इन्सान के गुनाहों को जैसे भट्टी लोहे का मैल दूर करती है। (मुस्लिम–सहीह–6/204-ह०–6570)
(इब्ने अबी शैबा–3/533-ह०–10915)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/605-ह०–6561)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/698-ह०-1288,1279)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/85-ह०–2936)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से मर'वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने एक मरीज़ की अयादत की (जिसको बुख़ार था) तो आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि खुशख़बरी हो कि बेशक अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ये (बुख़ार) मेरी आग है जो मैं मोमिन बन्दे पर दुनियाँ में इसलिये मुसल्लत करता हूँ ताकि वो आख़िरत की आग के बदले में उसका हिस्सा हो जाये।
(इब्ने अबी शैबा–3/531-ह०–10907)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन की मिसाल लोहे की तरह है कि जब उसे बुख़ार या दीगर तकलीफ़ पहुँचती है तो उसका मैल (गुनाह) ख़त्म हो जाते हैं और पाकीज़गी बाक़ी रह जाती है यानी जिस तरह लोहे को आग में डालने से मैल कुचैल ख़त्म हो जाता है और असल लोहा बच रहता है।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/599-ह०–6544)

बीमारी व दीगर तकलीफ़ो परेशानी गुनाहों का कफ़्फ़ारा है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से मर'वी है कि जब ये आयते करीमा उतरी "जो कोई बुराई करेगा तो उसको उसका बदला मिलेगा" (सू०–निसा–123) तो मुसलमानों पर बहुत सख़्त–

गुज़रा कि हर गुनाह के बदले ज़रुर अ़ज़ाब होगा तो हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया हाँ क्योंकि मुसलमान को जो तकलीफ़ पहुँचती है वो उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाती है हत्ता कि जो उसे ठोकर लगती है या उसे कोई काँटा भी चुभता है तो वो उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है।
(बुख़ारी–सहीह–5/421-ह०-5641,42)
(मुस्लिम–सहीह–6/203-ह०–6569)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/595-ह०–6525)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/76-ह०–2923)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/409-ह०–1725)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन की हर बीमारी उसके लिये गुनाहों का कफ़्फ़ारा है
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/701-ह०–1286)

बीमारियाँ गुनाहों को ख़त्म करने का बेहतरीन ज़रिया हैं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया किसी मुसलमान को जब किसी बीमारी से तकलीफ़ पहुँचे या किसी और तरह से तकलीफ़ पहुँचे तो अल्लाह तअ़ाला उसके गुनाहों को गिरा देता है जैसे दरख़्त अपने पत्ते गिराता है। (बुख़ारी–सहीह–5/423–ह०–5647)

(मुस्लिम–सहीह–6/202-ह०–6559)
(इब्ने अबी शैबा–3/530-ह०–10905)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/593-ह०–6531)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/409-ह०–1724)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/79-ह०–2927)

➡ हज़रत उम्मे अ़ला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) बयान करती हैं कि मैं बीमार हो गई तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) मेरी अ़यादत के लिये तशरीफ़ लाये और फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ उम्मे अ़ला तुम्हें ख़ुशख़बरी हो कि बिला शुबा मुसलमान की बीमारी के ज़रिये अल्लाह तआ़ला उसके गुनाहों को ख़त्म कर देता है जैसे आग सोने और चाँदी का खोट को निकाल देती है।
(अबू दाऊद–सुनन–3/498-ह०–3092)

मुसलसल मुसीबतों से तमाम गुनाह ख़त्म हो जाते हैं

➡ हज़रत साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह लोगों में सबसे ज़्यादा सख़्त आज़माइश किस की होती है तो आपने फ़रमाया कि अम्बिया की फिर दर्जा ब दर्जा मुक़र्रब बन्दों की और आदमी की आज़माइश उसके दीन के मुताबिक़ होती है जो दीन में मज़बूत हो तो उसकी सख़्त आज़माइश होती है

और अगर दीन में कमज़ोर हो तो उसके दीन के हिसाब आज़माइश की जाती है बन्दे के साथ ये आज़माइश हमेशा रहती है हत्ता कि वो ज़मीन पर इस तरह चलता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं होता।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/229-ह०–2398)
(इब्ने माजा–सुनन–3/306-ह०–4023)
(दारमी–सुनन–2/500-ह०–2825)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/477-ह०–826)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/135-ह०–9775)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/349-ह०–1150)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/59-ह०–2901)
(इब्ने अबी शैबा–3/537-ह०–10933)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला जब किसी मुसलमान को कोई तकलीफ़ या बीमारी में मुब्तिला फ़रमाता है तो फ़रिश्ते को हुक्म देता है कि इसके लिये नेक अ़मल लिख दो जो अ़मल ये तन्दरुस्ती की हालत में किया करता था फिर अगर अल्लाह तअ़ाला उसको शिफ़ा अ़ता करे तो उसको गुनाहों से पाक व साफ़ फ़रमाता है और अगर उस तकलीफ़ या बीमारी में उसे मौत दे तो अल्लाह तअ़ाला उसकी मग़फिरत फ़रमाता है और उससे रहमत का मुअ़ामला फ़रमाता है।
(इब्ने अबी शैबा–3/537-ह०–10936)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/313-ह०-7871)

➡ हज़रत अबूमूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई बन्दा जो नेक अ़मल करता रहा हो मगर बीमारी या सफ़र की वजह से वो न कर सके तो अल्लाह तआ़ला उसके लिये वो अ़मल उसी तरह लिखता है जिस तरह तन्दरुस्ती या मुक़ीम होने की हालत में उसका अ़मल लिखा जाता था।
(अबू दाऊद–सुनन–3/497-ह०–3091)
(बुख़ारी–सहीह–3/317-ह०–2996)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मुसलमानों में से किसी को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों को हुक्म देता है कि मेरे बन्दे के आअ़माल नामे में वो अ़मल लिखो जो अ़मल वो सहीह होने की हालत में किया करता था (और अब वो बीमारी या किसी और तकलीफ़ की वजह से वो नहीं कर पा रहा है)
(इब्ने अबी शैबा–3/531-ह०–10909)

बीमारियों के सबब से दरजात बुलन्द होते हैं

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान

को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है हत्ता कि उसे काँटा भी चुभे तो इसके सबब से अल्लाह तआ़ला उसका दर्जा बुलन्द करता है और उसके गुनाहों में तख़फ़ीफ़ करता है (तिर्मिज़ी–सुनन–1/539-ह०-965)
(अबू दाऊद–सुनन–3/498-ह०–3093)
(मुस्लिम–सहीह–6/202-ह०–6561)
(इब्ने अबी शैबा–3/531-ह०–10906)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/596-ह०–6541)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/497-ह०–1278)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान को पहुँचने वाली कोई मुश्किल और ग़म व तकलीफ़ और कोई अज़ि़यत व दुख ऐसा नहीं कि यहाँ तक कि अगर उसके पैर में काँटा भी चुभे तो अल्लाह तआ़ला इसके सबब से उसके गुनाह मुआ़फ़ फ़रमां देता है।
(बुख़ारी–सहीह–5/421-ह०-5640)
(मुस्लिम–सहीह–6/203-ह०-6568)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/540-ह०-966)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को बीमारी देकर आज़माता है हत्ता कि उसके तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/230-ह०-2399)

नाबीना का बदला जन्नत

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जब मैं दुनिया में किसी बन्दे की दो आँखें लेता हूँ (यानी वो पैदाइशी अन्धा हो या दुनिया में आने के बाद अन्धा हो जाये) तो मेरे नज़दीक उसका बदला सिर्फ़ जन्नत है।
(बुख़ारी–सहीह–5/426-ह०-5653)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/230-ह०-2400)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/81-ह०-2930)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/601-ह०-6552)
(बुख़ारी–सहीह–6/46-ह०-6424)
(हिल्यातुल औलिया–9/184-ह०-13879)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरकम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मेरी आँखें दुखने लगीं तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) मेरी अ़यादत के लिये तशरीफ़ लाये और फ़रमाया कि ऐ ज़ैद अगर तुम्हारी आँखों में यही तकलीफ़ रहे तो क्या करोगे तो मैंने अ़र्ज़ किया कि मैं सब्र करूँगा और सवाब की उम्मीद रखूँगा फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तो तुम जन्नत में बग़ैर हिसाबो किताब के दाख़िल होगे और तुम पर कोई गुनाह न होगा।
(कंज़ुल उ़म्माल–2/341-ह०-8687,8688)

मिर्गी का बदला जन्नत

➡ हज़रत अ़ता बिन रबाह (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है उन्होंने कहा कि मुझे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) ने फ़रमाया क्या मैं तुझे जन्नती औ़रत न दिखाऊँ मैंने कहा ज़रुर दिखायें उन्होंने कहा इस सियाह औ़रत ने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर होकर अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह मुझे मिर्गी का दौरा पड़ता है आप मेरे लिये अल्लाह तआ़ाला से दुआ़ फ़रमां दें आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर तू चाहे तो सब्र कर तुझे इसके बदले जन्नत मिलेगी और अगर तू चाहे तो मैं तेरे लिये अल्लाह तआ़ाला से दुआ़ करुँ ताकि तुझे तन्दरुस्ती मिले उसने कहा कि मैं सब्र करुँगी।
(बुख़ारी–सहीह–5/425-ह०-5652)

चार बीमारियों को बुरा न जानो

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया चार बीमारियों को बुरा न जानो 1– आँखों की तकलीफ़ को बुरा न जानो बेशक वो नाबीना पन की जड़ों को ख़त्म करती है इन्सान को नाबीना होने से बचाती है 2–जुकाम को बुरा न जानो बेशक वो कोढ़ की जड़ों को ख़त्म करता

है यानी इन्सान कोढ़ी नहीं होता 3–खाँसी को ना पसंद न करो क्योंकि बेशक वो फ़ालिज़ की जड़ों को ख़त्म करती है 4–फोड़े फुन्सियों को बुरा न जानो क्योंकि बेशक वो सफ़ेद दाग़ों की जड़ों को ख़त्म करता है यानी बन्दा सफ़ेद दागों से महफ़ूज़ रहता है (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/451-ह०–9212)

बीमारियों के न होने में ख़ैर नहीं

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने एक देहाती से पूछा क्या तुझे कभी बुख़ार आया है उसने जवाब दिया नहीं फिर आप ने पूछा क्या तुझे कभी सर में दर्द हुआ है उसने जवाब दिया नहीं जब वो देहाती चल दिया तो आपने सहाबा से फ़रमाया कि जो शख़्स किसी जहन्नमी को देखना चाहे वो इसे देख ले।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/699-ह०–1283)

जन्नत परेशानियों और दोज़ख़ नफ़्सानी ख़्वाहिशात के घेरे में है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दोज़ख़ नफ़्सानी ख़्वाहिशात से ढक दी गई और जन्नत मुश्किलात और दुश्वारियों से ढकी हुई है।
(बुख़ारी–सहीह–6/76-ह०–6487)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब अल्लाह तआ़ाला ने जन्नत को पैदा फ़रमाया तो जिबराईल (अ़लै०) से कहा जाओ और जन्नत को देखो चुनांचा वो गये और उसे देखा फिर आये तो कहा ऐ मेरे रब तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम इसके मुताअ़ल्लिक़ जो कोई भी सुनेगा तो वो ज़रुर इसमें दाख़िल होना चाहेगा फिर अल्लाह तआ़ाला ने उसको मक्रुहात और मुश्किलात व नापंसद बातों व परेशानियों तकलीफ़ों और मशक़्क़तों के घेरे में दे दिया यानी जन्नत में आने वालों को जो अ़मल करने होंगे और शरई पाबन्दियों पर अ़मल पैरा होना होगा ऊ़मूमन उनकी तरफ़ तबिअ़त माइल नहीं होती या फिर हक़ व शरीअ़त की राह पर जमे रहने की वजह से उसे तकलीफ़ें और मशक़्क़तें उठानी होगी फिर अल्लाह तआ़ाला ने फ़रमाया ऐ जिबराईल अब जाओ और जन्नत को देखकर आओ पस वो गये और उसको देखा और फिर वापस आये और कहा कि ऐ मेरे रब तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम मुझे अंदेशा है कि इस जन्नत में कोई भी दाख़िल न हो सकेगा

फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया फिर जब अल्लाह तआ़ाला ने दोज़ख़ को पैदा फ़रमाया तो अल्लाह तआ़ाला ने हज़रत जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) से कहा कि जाओ और दोज़ख़ को देखकर आओ वो गये तो देखा कि वो

एक पर एक चढ़ी जाती है दोज़ख़ की हौलनाकी व उसकी निहायत सख़्त गरम व शोअ़ले उगलती आग को देखकर हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम ने वापस आकर कहा कि ऐ मेरे रब तेरी इज़्ज़त की क़सम जो कोई इसके मुताअ़ल्लिक़ सुनेगा तो इसमें कोई न जायेगा तो फिर अल्लाह तआ़ला ने दोज़ख़ को नफ़्सानी ख़्वाहिशात और मरगूबात (पंसदीदा चीज़ों) के घेरे में दे दिया फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ जिबरईल जाओ और उसे देखकर आओ वो गये और उसे देखा फिर आये और कहा ऐ मेरे रब तेरी इज़्ज़त की क़सम मुझे अंदेशा है कि इस दोज़ख़ में दाख़िल होने से कोई बच न सकेगा। (नसाई–सुनन–6/51-ह०–3797)
(अबू दाऊद–सुनन–6/599-ह०–4744)

जन्नत में फुक़रा की अक्सरियत

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैंने जन्नत का मुशाहदा किया तो उसमें फुक़रा की अक्सरियत देखी और मैंने दोज़ख़ में झांका तो उसमें औ़रतें ज़्यादा थीं। (बुख़ारी–सही–6/60-6449)
(मुस्लिम–सहीह–6/299-ह०-6942)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/381-ह०-2603)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/592-ह०–7455)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/270-ह०–10383)
(कंजुल उ़म्माल–3/641-ह०–16584)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैंने जन्नत में झांका तो वहाँ अक्सर वो थे जो कि दुनिया में फ़क़ीर हैं और मैंने दोज़ख़ में झाँका तो देखा वहाँ अक्सर औ़रतें थी (बुख़ारी–सहीह–6/60-ह०–6449)
(मुस्लिम–सहीह–6/299-ह०–6938)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/381-ह०–2602)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/270-ह०–10384)

➡ हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं जन्नत के दर‘वाज़े पर खड़ा हुआ तो मैंने जन्नत के अन्दर देखा तो वहाँ अक्सर लोग वो थे जो दुनिया में मिस्कीन हैं और मालदार लोग रोके गये हैं यानी जो जन्नती हैं वो भी रोके गये हिसाबो किताब के लिये और जो दोज़ख़ी है उन्हें दोज़ख़ में ले जाने का हुक्म हो चुका है और मैंने दोज़ख़ के दरवाज़े पर खड़े होकर देखा तो वहाँ औ़रतें ज़्यादा थी।
(बुख़ारी–सहीह–5/176-ह०–5196)
(मुस्लिम–सहीह–6/299-ह०–6937)

मोमिन का तोहफा फ़क्र व फ़ाक़ा है

➡ हज़रत मुआ़ज़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया में मोमिन

का तोहफ़ा फ़क़्र व फ़ाका है।
(अल फ़िरदौस–2/111-ह०–2219)
(कंज़ुल उ़म्माल–3/637-ह०–16601)

रोज़े क़यामत हर मालदार व मुहताज की आरज़ू

➡हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कोई भी मालदार और मुहताज ऐसा नहीं है जो क़यामत में ये आरज़ू न करे कि काश अल्लाह तआ़ला उसे दुनिया में उसकी हाजत के मुताबिक़ रिज़्क़ देता और बहुत मालदार न करता क्योंकि वो फ़ुक़रा के मरातिब को देखेंगे जो उन्हें अल्लाह तआ़ला अ़ता फ़रमायेगा। (इब्ने माजा–सुनन–3/359-ह०–4140)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/269-ह०–10378)

अपने से कमतर को देखने से अल्लाह की कोई भी नेअ़मत हक़ीर नहीं लगेगी

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया दुनिया में अपने से कमतर वाले लोगों को देखो और अपने से ज़्यादा वाले लोगों को न देखो इस तरह तुम्हें अल्लाह तआ़ला की कोई भी नेअ़मत हक़ीर नहीं लगेगी। (इब्ने माजा–सुनन–3/359-ह०–4142)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम में से कोई शख़्स किसी ऐसे शख़्स को देखे जो माल व दौलत या शक्ल व सूरत में तुमसे बढ़कर हो तो उस वक़्त तुम ऐसे शख़्स को देखो जो तुमसे कम दर्जे वाला हो तो इस तरह तुम अल्लाह तआ़ला की किसी भी नेअ़मत को हक़ीर न जानोगे।
(बुख़ारी–सहीह–6/77-ह०-6490)
(मुस्लिम–सहीह–5/479-ह०-7430)

जिसे चार चीज़ें मिलीं उसे दुनिया व आख़िरत की भलाई मिली

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसे चार चीज़ें मिल गईं तो उसे दुनिया व आख़िरत की भलाई मिल गई 1- शुक्र गुज़ार दिल 2- ज़िक्र करने वाली जुबान 3- मुसीबत पर सब्र करने की तौफ़ीक़ 4- और ऐसी बीवी जो अपनी ज़ात और खाविन्द की इज़्ज़त व माल में ख़्यानत न करे।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–11/134-ह०-11275)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/478-ह०-7212)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/89-ह०-4429)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/256-ह०-2301)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–3/65-)

नेक लोगों पर सख़्तियाँ आती हैं

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि नेक लोगों पर सख़्तियाँ ज़्यादा आती हैं।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/325-ह०-7901)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जब अपने किसी बन्दे के साथ ख़ैर और भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे मसाइबो आलाम में गिरफ़्तार कर देता है और जब अल्लाह तआ़ला किसी के साथ शर का इरादा करता है तो रोक रखता है उसके गुनाहों की सज़ा को यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उसकी सज़ा को पूरा फ़रमायेगा और आख़िरत में जिसका सवाब ज़्यादा होगा तो उसे दुनिया में मसाइब व आलाम ज़्यादा उठाने होंगे और बेशक अल्लाह तआ़ला जब किसी को दोस्त रखता है तो उस पर बलायें नाज़िल होती हैं फिर जो राज़ी रहे तक़दीरे इलाही पर तो अल्लाह तआ़ला उससे राज़ी होता है और जो नाराज़ हो तो अल्लाह तआ़ला उससे नाराज़ होता है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/228-ह०-2396)
(इब्ने माजा–सुनन–3/310-ह०-4031)
(मुस्नद बज़्ज़ार–1/1318-ह०-1150)

मुसीबतों पर सब्र करने वालों को बेहतरीन अज्र

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मसाइबो आलाम से दो चार होने वाले को जब अल्लाह तआला अज़ीम सवाब और मरातिब अता फरमायेगा तो दुनिया में आफ़ियत व ऐश व आराम में रहने वाले लोग उनके सवाब व मरातिब को देखकर तमन्ना करेंगे कि काश दुनिया में मेरी खालें कैंचियों से काटी जातीं।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/231-ह०–2402)
(इब्ने अबी शैबा–3/537-ह०–10934)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/602-ह०–6553)

मिस्कीन रोज़े क़यामत अल्लाह तआला के क़रीब होंगे

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर चीज़ की एक चाबी होती है और जन्नत की चाबी मिस्कीन से मुहब्बत करना है क्योंकि वो सब्र करते हैं और वो रोज़े क़यामत अल्लाह तआला के क़रीब होंगे।

(कंजुल उ़म्माल–3/641-ह०–16587)
(देलमी–अल फ़िरदोस–3/376-ह०–5029)

मालदारों के पास आमद व रफ़्त कम करना

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया- ऐ आयशा अगर तुम मेरे बाअ़द मेरे साथ मिलना चाहती हो तो तुम्हें चाहिये कि दुनिया के असबाब में से एक सवार मुसाफ़िर के ज़ादे सफ़र मिक़दार तुम्हें काफ़ी रहना चहिये और तुम दौलत मंदों के पास आना जाना न करना (तिर्मिज़ी–सुनन–1/963-ह०–1780) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/274-ह०–10398)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ आयशा अगर तुम जन्नत में मेरा कुर्ब पाना चाहती हो तो तुम फुक़रा की ज़िन्दगी गुज़ारना और मालदारों की सुहवत से बचती रहना और पुराने दुपट्टे को पहनना उस वक़्त तक तर्क न करना जब तक कि उसमें पैवन्द न लगा लो।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/962-ह०–1780)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/312-ह०–6867)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मालदारों के पास कम जाया करो क्योंकि ये इस बात के ज़्यादा लायक़ है कि तुम अल्लाह की नेअ़मतों को हक़ीर न जानोगे। (हाकिम–6/312-ह०–7869)

रोज़ क़यामत मालदार लोग दरजात में पस्त होंगे

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो लोग बहुत मालदार हैं क़यामत के दिन उन्हीं लोगों के दर्जे पस्त (कम) होंगे मगर जिसे अल्लाह तअ़ाला माल अ़ता फ़रमाये और वो अपना माल राहे खुदा में इस तरफ़ और उस तरफ़ लुटाये और अपने माल से नेकियाँ कमाये और वो हलाल तरीक़े से माल कमाये। (इब्ने माजा–सुनन–3/356-ह०–4130) (मुस्लिम–सहीह–3/31-ह०–2305)

फ़क़ीर मोमिन मालदार से बेहतर

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक शख़्स नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के पास से गुज़रा तो आपने लोगों से पूछा कि तुम इस शख़्स के बारे में क्या कहते हो तो उन्होंने कहा कि ये शख़्स शरीफ़ तरीन आदमी है और ये इस क़ाबिल है कि अगर किसी से रिश्ता मांगे तो इसको रिश्ता मिल जाये और अगर ये किसी के लिये सिफ़ारिश करे तो इसकी सिफ़ारिश कुबूल की जाये और ये अगर कोई बात कहे तो इसकी बात मानी जाये फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ख़ामोश हो गये फिर दूसरा आदमी गुज़रा तो आपने पूछा कि

तुम लोग इसके बारे में क्या कहते हो वो बोले या रसूलल्लाह ये फुक़रा मुसलमानों में से है ये तो इस क़ाबिल है कि ये अगर किसी शख़्स से रिश्ता मांगे तो इसे कोई रिश्ता नहीं देगा और अगर ये किसी के लिये सिफ़ारिश करे तो इसकी सिफ़ारिश कोई भी कुबूल नहीं करेगा और अगर ये कुछ भी कहे तो कोई भी इसकी बात को नहीं सुनेगा तो फिर आपने फ़रमाया कि ये फ़क़ीर उस मालदार जैसे तमाम रुये ज़मीन के लोगों से बेहतर है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/294-ह०–10481)
(बुख़ारी–सहीह–6/59-ह०–6447,5091)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/327-ह०–7929)
(इब्ने माजा–सुनन–3/352-ह०–4120)

कम माल वाला क़बिले रश्क है

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरे अहबाब में से मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा क़ाबिले रश्क वो मोमिन है जो कम माल वाला हो और नमाज़ में उसका हिस्सा ज़्यादा हो और वो अपने रब की अच्छी इ़बादत और इताअ़त करता हो और लोगों में वो गुमनाम हो और उसका रिज़्क़ बाक़दरे ज़रुरत हो और उस पर वो क़नाअ़त करता हो।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/200-ह०–2347)
(इब्ने माजा–सुनन–3/49-ह०–4117)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–8/242-ह०–7829)

हर इन्सान की तक़्दीर माँ के पेट में लिख दी जाती

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने रहमे मादर के लिये एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है जो अ़र्ज़ करता है ऐ पर'वर दिगार ये नुत्फ़ा है ऐ मेरे मालिक ये खून बस्ता हो गया है ऐ मेरे रब ये गोस्त का टुकड़ा बन गया है फिर अल्लाह तआ़ला उसकी तमाम तख़्लीक़ का इरादा फ़रमाता है तो फ़रिश्ता अ़र्ज़ करता है ऐ मेरे रब ये नेक बख़्त है या बद बख़्त इसकी रोज़ी कितनी है और ज़िन्दगी की मुद्दत कितनी है चुनांचा ये तमाम तफ़ासील उसकी माँ के पेट में ही लिख दी जाती है। (बुख़ारी–सहीह–3/512-ह०-3333)

अल्लाह ही का है जो वो दे या ले

➡ हज़रत उसामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) की ख़िदमत में आपकी किसी साहब ज़ादी का क़ासिद आया उसने कहा कि उनका बच्चा नज़अ़ की हालत में है आपने उन्हें पैग़ाम भेजा अल्लाह ही का है जो वो ले लेता है और अल्लाह ही का है जो वो दे दे और हर चीज़ का एक वक़्त मुक़र्रर है इसलिये वो सब्र करें और अल्लाह सुबहानहू व तआ़ला से अज्र की उम्मीद रखें (बुख़ारी–सहीह–6/128-6602)

अल्लाह तअ़ाला के नज़दीक अच्छा और बुरा होने की अ़लामत

➡हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या-रसूलल्लाह मुझे ये कैसे माअ़लूम हो कि अल्लाह तअ़ाला के यहाँ मैं किस हालत पर हूँ तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम देखो कि जो चीज़ तुम दुनिया से तलब करते हो अगर वो चीज़ तुम्हें आसानी से मिल जाये और अगर कोई चीज़ आख़िरत की तलब करो और वो तुम्हें मुश्किल से हासिल हो तो समझ लो कि तुम ख़राब हालत पर हो और जिस वक़्त दुनिया की कोई चीज़ हासिल करना तुम्हारे लिये मुश्किल हो और उमूरे आख़िरत में से कोई चीज़ हासिल करना तुम्हारे लिये आसान हो तो समझ लो कि तुम अच्छी हालत पर हो।
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-7/288-ह०-10454)
(दारमी-सुनन-2/477-ह०-2779)

कामयाब बन्दे की अ़लामत

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तहक़ीक़ कामयाब हो गया वो शख़्स जिसने इस्लाम क़ुबूल किया और-

उसे बाक़दरे किफ़ायत (ज़रुरत के मुवाफ़िक़) रिज़्क़ दिया गया और अल्लाह तआ़ला ने अपने अ़ता कर्दा माल पर उसे क़नाअ़त दे दी तो वो शख़्स कामयाब हो गया।
(मुस्लिम–सहीह–2/389-ह०–2426)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/201-ह०–2348,2349)
(इब्ने माजा–सुनन–3/358-ह०–4138,)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/261-ह०–10345)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि जब हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने अल्लाह तआ़ला से हम कलामी की तो अ़र्ज़ किया ऐ मेरे रब तेरे बन्दों में तेरे नज़दीक कौन सबसे ज़्यादा महबूब है तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया जो सबसे ज़्यादा मेरा ज़िक्र करे फिर उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब तेरे बन्दों मे कौन सबसे ज़्यादा बेहतर फ़ैसला करने वाला है तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया जो शख़्स अपने नफ़्स के ख़िलाफ़ फ़ैसला दे जैसा कि वो दूसरों के ख़िलाफ़ फ़ैसला देता है फिर उन्होंने रब तआ़ला से अ़र्ज़ किया ऐ मेरे रब तेरे बन्दों में से तेरे नज़दीक कौन शख़्स सबसे ज़्यादा ग़नी है तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जो शख़्स मेरी अ़ता कर्दा नेअ़मत पर खुश रहे यानी वो क़नाअ़त करे। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/261-ह०–10348)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मालदारी बहुत असबाब रखने से नहीं होती बल्कि मालदारी तो ये है कि दिल बेपर‘वाह हो और जो कुछ अल्लाह तअ़ाला दे उस पर कनाअ़त करे।
(इब्ने माजा–सुनन–3/358-ह०–4137)

हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) की दुआ़ कि मेरी वफ़ात हालते फ़क़्र व मुहताजी में हो

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ मेरे रब मुझे अपनी तरफ़ हालते फ़क़ीरी व मुहताजी में उठाना यानी मेरी वफ़ात फ़क़ीरी व मुहताजी की हालत में करना और मुझे मालदार और ग़नी बनाकर अपनी तरफ़ न उठाना और क़यामत के दिन मुझे मिस्कीनों की जमाअ़त के साथ उठाना।
(इब्ने माजा–सुनन–3/354–ह०–4126)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/203-ह०–2352)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/302-ह०–10506)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/329-ह०–7911)

★★★★★

तवक्कुल

(हिस्सा सानी)

जो अल्लाह पर तवक्कुल करे अल्लाह उसे काफ़ी

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जो शख़्स अल्लाह से डरता है (तो अल्लाह तआ़ला) उसके लिये (दुनिया व आख़िरत के रंजो ग़म से) निकलने की राह पैदा फ़रमां देता है और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाता है जहाँ से उसका गुमान भी नहीं होता और जो शख़्स अल्लाह पर तवक्कुल करता है तो वो उसे काफ़ी है। (सू०–तलाक़–65/2,3)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और अल्लाह पर भरोसा रखिये और अल्लाह ही कारसाज़ काफ़ी है। (सू०–अहज़ाब–33/3)

जो शख़्स अपने दीन व दुनिया के मुआ़मलात में अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल (भरोसा) करता है यानी किसी चीज़ के हुसूल में जो उसके लिये नफ़अ़ मन्द हो और किसी चीज़ को दूर हटाने में जो उसके लिये ज़रर रसां हो और वो अल्लाह तआ़ला पर कामिल एतमाद रखता हो और उसमें आसानी पैदा करने में अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करता हो तो अल्लाह तआ़ला उस मुआ़मलें में उसके लिये काफ़ी है जिस मुआ़मले में उसने रब तआ़ला पर भरोसा किया था इसी तरह रिज़्क़ के मुआ़मले में जो शख़्स अल्लाह तआ़ला पर भरोसा

करे तो अल्लाह तआ़ला उसे वहाँ से रोज़ी देगा जहाँ से उसका गुमान भी न हो पस हमें चाहिये कि हम अल्लाह तआ़ला पर कामिल एतमाद रखें और अपने तमाम उमूर उसी के सपुर्द कर दें तो अल्लाह तआ़ला दोंनों जहान में हमें काफ़ी होगा।

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अगर तुम अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल करो जैसा कि तुम्हें तवक्कुल करने का हक़ है तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें इस तरह रोज़ी देगा जैसे परिन्दों को देता है कि वो सुबह को भूके निकलते हैं और शाम को वो भरे पेट आते हैं। (इब्ने माजा–सुनन–3/365-ह०-4164)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/198-ह०-2344)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/323-ह०-7894)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/86-ह०-1182)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/203-ह०-242)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसे इंतिहाई शदीद हाजत आ पड़े और वो अपनी हाजत अल्लाह तआ़ला की बारगाह में पेश करे तो अ़नक़रीब अल्लाह तआ़ला उसकी हाजत पूरी कर देगा (अबू दाऊद–सुनन–2/311-ह०-1645)

तवक्कुल का माअ़नी असबाब को तर्क करना

नहीं है बल्कि तवक्कुल का माअ़नी है किसी चीज़ के हुसूल के लिये हत्तल इमकान कोशिश की जाये और उसके तमाम असबाब मुहैया किये जायें फिर उसके नतीजे को अल्लाह तआ़ला पर छोड़ दिया जाये और ये भी ज़रुरी नहीं कि जो शख़्स किसी चीज़ के लिये अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल करे वो चीज़ उसे हासिल हो ही जाये बाअ़ज़ औक़ात मुतावक्किलीन मसाइब व आलाम में गिरफ़्तार भी होते हैं और मसाइबो आलाम के सबब आख़िरत में उन्हें बेहतरीन अज्र दिया जाता है और उनके गुनाहों को मिटाया जाता है।

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार लोग बग़ैर हिसाब व किताब के जन्नत में जायेंगे और ये वो लोग हैं जो सिर्फ़ अपने रब पर भरोसा करते हैं।
(बुख़ारी–सहीह–6/70-ह०-6472)
(मुस्लिम–सहीह–1/340-ह०-527)

➡हजरत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अहले यमन हज करते थे और ज़ादे राह नहीं ले जाते थे और कहते थे कि हम तो तवक्कुल करने वाले हैं और जब वो मक्का पहुँचते तो लोगों से सुवाल करते थे तब अल्लाह तआ़ला ने आयत नाज़िल फरमाई

"और ज़ादे राह (सफ़र ख़र्च) ले लिया करो और बेशक सबसे बेहतर ज़ादे राह तक़वा (सुवाल से बचना) है"। (बुख़ारी–सहीह–2/215-ह०-1523)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रिज़्क़ बन्दे को इस तरह तलब करता है जिस तरह मौत उसको तलब करती है (बैहक़ी–शुअ़बल ईमान–2/90-1191)

➡ हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैंने ऐसी कोई भी चीज़ नहीं छोड़ी कि जिसके के बारे में अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें हुक्म दिया हो और मैनें भी तुम्हें उसके बारे में हुक्म दे दिया है और मैंने ऐसी कोई चीज़ नहीं छोड़ी कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें उस चीज़ से रोका हो और मैंने भी तुम्हें उन सब चीज़ों से मनाअ़ कर दिया है और बेशक जिबराईल ने मेरे दिल में ये बात डाल दी है कि कोई भी शख़्स तब नहीं मरेगा जब तक कि वो अपना रिज़्क़ पूरा न करले और अल्लाह तआ़ला से डरो और रिज़्क़ की तलाश में खूबसूरत तरीक़ इख़्तियार करो यानी हलाल को तलब करो और हराम को दोड़ दो। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/88-ह०-1185,1186)

कोई शख़्स अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल करे या न करे अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ भी उसके लिये मुक़द्दर किया है वो तो हर हाल में उसको

ज़रुर मिलना है और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल करता है तो अल्लाह तआ़ला उसके गुनाहों को मिटा देता है और उसके अज्रो सवाब को ज़्यादा कर देता है।

तक़दीर का माअ़ना है किसी चीज़ की मिक़दार को मुअ़य्यन करना और अल्लाह की तक़दीर का माअ़नी है किसी चीज़ को हिकमत के तक़ाज़े से मख़्सूस मिक़दार मख़्सूस सिफ़त और मख़्सूस मुद्दत के लिये बनाना अल्लाह तआ़ला आ़लिमुल ग़ैब है वो इन्सान को पैदा करने से पहले ही जानता था और उसको ये इ़ल्म था कि कौन सा इन्सान कुफ़्र करेगा और कौन ईमान ले आयेगा और कौन नेक अ़मल करेगा और कौन बद अ़मल करेगा और कौन इताअ़त गुज़ार होगा और कौन ना फ़रमान होगा, कौन जन्नती होगा, और कौन दोज़ख़ी होगा सो अल्लाह तआ़ला ने अपने इ़ल्म के मुताबिक़ जिसके लिये जो सहीह था वो लिख दिया और यही तक़दीर है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया ऐ अल्लाह के रसूल उस बच्चे के मुताअ़ल्लिक़ क्या ख़्याल है जो कि बचपन में ही फ़ौत हो जाता है तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला खूब जानता है कि वो बड़ा होकर कैसे अ़मल करता इसी तरह आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से मुश्रिकीन

की नाबालिग़ औलाद के बारे में सुवाल किया गया जो फ़ौत हो जाती है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला खूब जानता है कि वो बड़ा होकर कैसे आअ़माल करता। (बुख़ारी–सहीह–6/127-ह०-6596)
(बुख़ारी–सहीह–6/128-ह०-6600)
(अबू दाऊद–सुनन–6/578-ह०-4711)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मुन्किरीने तक़्दीर की सुहवत से बचो। (अबू यअ़ाला–1/203-ह०-240)
(अबू दाऊद–सुनन–5/583-ह०-4720)

➡हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अपने बेटे से कहा कि तू उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त को नहीं पा सकता जब तक कि ये यक़ीन न करले कि जो कुछ तुम्हें हासिल हो चुका है ये तुमसे रह नहीं सकता था और जो हासिल नहीं हुआ वो तुम्हें मिल नहीं सकता था मैंने हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से सुना है आप ने फ़रमाया कि सबसे पहले अल्लाह तआ़ला ने जो चीज़ पैदा फ़रमाई वो क़लम था फिर उसने फ़रमाया कि लिख उसने कहा ऐ मेरे रब मैं क्या लिखूँ तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया क़यामत क़ायम होने तक हर चीज़ की तक़्दीर लिख ऐ मेरे बेटे मैंने हुजूर नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से सुना है–

आपने फ़रमाया जो शख़्स इसके सिवा किसी और अ़क़ीदे पर मर गया (यानी उसका ईमान तक़दीर पर नहीं था) तो वो मुझसे नहीं।
(अबू दाऊद–सुनन–6/570-ह०-4700)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हर जान का मक़ाम जहन्नम में है या जन्नत में है लिख दिया है और उसके बारे में लिखा जा चुका है कि वो बद बख़्त है या सआ़दत मन्द तो एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह तो क्या हम अपने उस लिखे हुये पर न रुक जायें और हम अ़मल करना छोड़ दें जो अह्ले सआ़दत में से होगा वो अपनी सआ़दत को पा लेगा तो आपने फ़रमाया कि अ़मल किये जाओ क्योंकि हर एक को तौफ़ीक़ दी जाती है नेक बख़्तो को सआ़दत के अ़मल की तौफ़ीक़ दी जाती है और बद बख़्तों को बद बख़्तों वाले आअ़माल की तौफ़ीक़ दी जाती है फिर आपने ये आयत तिलावत फ़रमाई 'पस जिसने (अपना माल अल्लाह तआ़ला की राह में) दिया और परहेज़गारी इख़्तियार की और उसने अच्छाई (यानी दीने हक़ और आख़िरत) की तस्दीक़ की तो हम अ़नक़रीब उसे आसानी (यानी रज़ाए इलाही) के लिये सहूलत फ़राहम कर देंगे'। (सू०–लैल–92/5 ता 10)
(अबू दाऊद–सुनन–6/563-ह०-4694)

तक़दीर पर ईमान लाना फ़र्ज़ है और ये एतक़ाद–

रखना कि अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बन्दों के तमाम अफ़आ़ल व आअ़माल को खूब जानता है ख़्वाह वो ख़ैर हों या शर हों और ख़्वाह वो ज़ाहिरी अ़मल हों या बातिनी अ़मल हों और नेक अ़मल पर सवाब अ़ता करना अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल है और गुनाहों पर अ़ज़ाब देना ये अल्लाह तआ़ला का अ़द्ल है और दायीं जानिब वालों को वो अपने फ़ज़्ल से जन्नत में दाख़िल करेगा और बायीं जानिब वालों को वो अपने अ़द्ल से दोज़ख़ में दाख़िल करेगा।

तक़दीर की दो क़िस्में है एक तक़दीरे मुअ़ल्लक़ और दूसरी तक़दीरे मुबरम (न टलने वाली) तक़दीर मुबरम में कोई तग़य्युर व तबद्दुल नहीं होता जबकि तक़दीर मुअ़ल्लक़ में तबद्दुल का इमकान है मसलन एक शख़्स की मुक़द्दर में औलाद नहीं लिखी है मगर किसी बुजुर्ग की दुआ़ से या किसी और की दुआ़ से उस शख़्स के लिये औलाद का होना मुक़द्दर कर दिया जाता है और फिर उसकी तक़दीर से बे औलाद का होना मिटा दिया जाता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

अल्लाह तआ़ला जिस (लिखे हुये) को चाहता है मिटा देता है और जिसे चाहता है वो सब्त फ़रमाँ देता है और उसी के पास अस्ल किताब है यानी लौहे महफ़ूज़। (सू०-राअ़द-13/39)

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुआ़ के अ़लावा कोई भी चीज़ तक़दीर को बदल नहीं सकती और नेकी के अ़लावा कोई भी चीज़ उ़म्र में इज़ाफ़ा नहीं कर सकती।

(इब्ने माजा–सुनन–3/306-ह०-4022)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/45-ह०-2139)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/198-ह०-6038)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/100-ह०-1442)
(इब्ने अबी शैबा–8/743-ह०-30487)

इसी तरह इन्सान अगर अपने मां बाप या रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आये और उनके साथ नेकी करे तो उसकी उ़म्र बढ़ जाती है या उसके रिज़्क़ में कुशादगी कर दी जाती है और अगर उनके साथ नेकी न करे तो उसकी उ़म्र या उसके रिज़्क़ में इज़ाफ़ा नहीं होता।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसे ये पसन्द हो कि उसके रिज़्क़ में वुसअ़त हो और उसकी उ़म्र दराज़ हो तो वो सिला रहमी करे।

(बुख़ारी–सहीह–5/579-ह०-5985)
(मुस्लिम–सहीह–5/36-ह०-6523,6524)
(अबू दाऊद–सुनन–2/341-ह०-1693)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1058-ह०-1979)

➡ हजरत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि हज़रत जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) ने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से ईमान के मुताअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ईमान ये है कि तुम अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी नाज़िल कर्दा किताबों पर और उसके रसूलों पर और क़यामत के दिन पर और अच्छी व बुरी तक़दीर पर ईमान लाओ। (इब्ने माजा–सुनन–1/50-ह०-63)
(मुस्लिम–सहीह–1/90-ह०-97)
(अबू दाऊद–सुनन–6/564-ह०-4695)
(नसाई–सुनन–3/457-ह०-4996)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फऱमाया कि तुममें से हर एक अपनी माँ के पेट में चालीस दिन तक नुत्फ़े की सूरत में रहता है फिर चालीस दिन तक जमे हुये खून की सूरत में रहता है फिर चालीस दिन तक गोस्त के टुकड़े की सूरत में रहता है फिर अल्लाह तआ़ला एक फ़रिश्ता भेजता है और उसे चार बातों का हुक्म होता है उसकी रोज़ी व उसकी उ़म्र, उसके अ़मल और ये कि उसका नेक या बद होना फिर उसमें रुह फूंकी जाती है यानी उसकी तक़दीर उसके माँ के पेट में लिख दी जाती है हालांकि अल्लाह तआ़ला पहले से ही जानता है कि कौन बन्दा दुनिया में कैसे अ़मल करेगा उसी के

मुताबकि उसकी तक़दीर लिखी जाती है।
(बुख़ारी–सहीह–6/125-ह०-6594)
(मुस्लिम–सहीह–5/112-ह०-6723)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि छः (6) क़िस्म के लोगों पर अल्लाह तआ़ला ने लाअ़नत फ़रमाई है (1) किताबुल्लाह में ज़्यादती करने वाला (2) अल्लाह की तक़दीर की तकज़ीब करने वाला (3) और कुव्वत के बल पर ग़लबा पाकर हुकूमत व इक़्तिदार हासिल करने वाला ताकि इज़्ज़त दे उसको जिसको अल्लाह तआ़ला ने ज़लील किया है और ज़लील करे उसको जिसको अल्लाह तआ़ला ने इज़्ज़त से नवाज़ा है (4) और अल्लाह तआ़ला के हराम कर्दा कामों को हलाल करने वाला (5) और मेरी औलाद की बे हुरमती को हलाल समझने वाला (6) और मेरी सुन्नत को (बतौर तख़फ़ीफ़ और इहानत) तर्क करने वाला।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/54-ह०-2154)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तक़दीर का इन्कार करने वाला मजूसी है अगर वो बीमार हो जाये तो उसकी अ़यादत के लिये न जाओ और अगर वो मर जाये तो उसके जनाज़े में शरीक न हो। (अबू दाऊद–सुनन–6/561-ह०-4691)

पस माअ़लूम हुआ कि तक़दीर पर ईमान लाना लाज़िम है और अल्लाह तआ़ला पर हमें कामिल एतमाद रखना चाहिये क्योंकि जो अल्लाह तआ़ला ने तक़दीर में लिख दिया वो हमारी ज़िन्दगी में ज़रुर होकर रहेगा और जो रिज़्क़ मेरे मुक़द्दर में है वो हमें ज़रुर अ़ता होगा इसलिये हर मुसीबत व तंगी के वक़्त साबिर और मुतावक्किल रहने में ही हमारे लिये ख़ैर व भलाई है ताकि हमें इसका अज्र मिले और अपने तमाम मुआ़मलात अल्लाह तआ़ला के सपुर्द करदें वो उन मुआ़मलात में बन्दे के लिये दुनिया व उख़्र‘वी एतबार से जो बेहतर होगा तो वो वैसा ही करेगा और अल्लाह तआ़ला तवक्कुल करने वालों से मुहब्बत करता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

ऐ हबीब जब आप (किसी चीज़ का) पुख़्ता इरादा करलें तो अल्लाह पर भरोसा किया करें कि बेशक अल्लाह तआ़ला तवक्कुल करने वालों से मुहब्बत करता है। (सू०-आले इमरान-3/159)

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर उससे भी ज़्यादा रहम फ़रमाता है जितना बन्दा अपने आप पर खुद रहम कर सकता है या उस पर उसके वालिदैन रहम कर सकते हैं और कभी भी ये न सोचे कि हमारा मुश्किल मुआ़मला कैसे आसान होगा मुश्किलात कैसे दूर होगी मसाइब कैसे ख़त्म होंगे तकलीफ़े कैसे ज़ाइल होंगी और हाजतें कैसे पूरी होंगी बल्कि अपने रब पर भरोसा रखे और-

ऐसे तमाम मुआ़मलात हल करना अल्लाह तआ़ला के लिये निहायत ही आसान है।

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो दुनिया को छोड़कर अल्लाह पर भरोसा करे तो हर मुश्किल में अल्लाह उसे काफ़ी होगा और वो उसे वहाँ से रिज़्क़ देगा जहाँ से उसका गुमान भी न हो और जो दुनिया पर भरोसा करे तो अल्लाह तआ़ला उसे दुनिया के सिपुर्द कर देता है।
(तबरानी–मुअ़जम–औसत–2/665-ह०-3359)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ हबीब आप फ़रमां दीजिये वही रहमान है जिस पर हम ईमान लाये हैं और उसी पर हमने भरोसा किया है। (सू०–मुल्क–67/29)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं तवक्कुल बेहतरीन अ़मल व इ़ल्म अच्छा रहनुमा है और अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल न करने के सबब इन्सान में हिर्स और बुख़्ल के अमराज़ पैदा हो जाते हैं पस बन्दे को चाहिये कि अपने तमाम कामों में अल्लाह तआ़ला पर भरोसा रखे क्योंकि उसका भरोसा उसकी तमाम आफ़तों के लिये बचाओ और ढाल है और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल रखता है तो उसके बड़े बड़े दुश्वार काम आसान हो जाते हैं।

अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(ऐ हबीब) आप फ़रमां दीजिये कि हमें हरगिज़ कुछ नहीं पहुँचेगा मगर वही कुछ जो कुछ अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिये लिख दिया है वही हमारा कारसाज़ है और अल्लाह ही पर ईमान वालों को भरोसा करना चाहिये। (सू०–तौबा–9/51)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये। (सू०–आले इमरान–3/122)

अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारी मदद फ़रमाये तो तुम पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर वो तुम्हें बे सहारा छोड़ दे फिर कौन ऐसा है जो उसके बाअ़द तुम्हारी मदद कर सके और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये। (सू०–आले इमरान–3/160)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और आसमानों और ज़मीनों का सब ग़ैब अल्लाह ही के लिये है और तमाम मुआ़मलात उसी की तरफ़ लौटाये जाते हैं सो उसकी इबादत करते रहें और उसी (अल्लाह) पर तवक्कुल (भरोसा) रखें और तुम्हारा रब तुम सब लोगों के आअ़माल से ग़ाफ़िल नहीं है। (सू०–हूद–11/123)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और अल्लाह ही पर मोमिनों को भरोसा करना चाहिये और हम अल्लाह तआ़ला पर भरोसा क्यों न करें जबकि उसने हमें (हिदायत व कामयाबी की) राहें दिखाईं और तुम हमें जो भी अज़ि़यतें पहुँचाओगे हम उस पर सब्र करेंगे और अह्ले तवक्कुल को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये (सू०–इब्राहीम–14/11,12)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो तुम अल्लाह के उस इनआ़म को याद करो जो तुम पर हुआ है जब क़ौमे कुफ़्फ़ार ने ये इरादा किया कि अपने हाथ क़त्ल व हलाकत के लिये तुम्हारी तरफ़ दराज़ करें तो अल्लाह ने उनके हाथ रोक दिये और अल्लाह से डरते रहो और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये। (सू०–मायदा–5/11)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और ये सरगोशियां शैतान की तरफ़ से हैं ताकि वो ईमान वालों को रंजो ग़म पहुंचाये हालांकि वो शैतान उन मोमिनों का कुछ बिगाड़ नहीं सकता मगर अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह ही पर मोमिनो को भरोसा रखना चाहिये।
(सू०–मुजादला–58/10)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और याकूब (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे बच्चों

तुम सब एक दर'वाज़े से न जाना बल्कि अलग अलग दर'वाज़ों से दाख़िल होना और मैं अल्लाह की तरफ़ से आने वाली किसी चीज़ को तुम से टाल नहीं सकता और मैंने उसी पर भरोसा किया है और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिये। (सू०–यूसूफ़–12/67)

क़यामत तक वाक़ेअ़ होने वाले तमाम उमूर और इन्सानों की तक़दीर लौहे महफ़ूज़ में लिखकर क़लम खुश्क हो चुका है अब कोई भी शख़्स इस बात पर क़ादिर नहीं कि वो अपनी जान से उस मुसीबत को दूर कर सके जो उस पर नाज़िल होनी है और कोई भी शख़्स इस बात पर क़ादिर नहीं है कि वो खुद को कोई ऐसा फ़ायदा पहुँचा सके जो उसके मुक़द्दर में नहीं है बेशक अल्लाह ही हमारा हाफ़िज़ व नासिर है इसलिये मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिये।

➡ हज़रत उबई बिन काअ़ब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला तमाम ज़मीनो आसमान वालों को अ़ज़ाब देना चाहे तो वो दे सकता है और ये उसका कोई जुल्म न होगा क्योंकि अल्लाह तआ़ला हम सबका मालिक है और मालिक को अपनी मिल्कियत में तसर्रुफ़ का हक़ होता है और अगर वो हम पर रहम करे तो उसकी रहमत हमारे आअ़माल से बेहतर होगी और ऐ बन्दे तेरे पास उहद पहाड़ के

बराबर सोना हो या उहद पहाड़ के बराबर माल हो और तू उसे राहे खुदा में ख़र्च करे तो वो तेरी तरफ़ से कुबूल नहीं किया जायेगा जब तक कि तू तक़्दीर पर ईमान न ले आये पस जान ले कि जो मुसीबत तुझे पहुँची है वो तुझसे टलने वाली न थी और जो मुसीबत तुझसे टल गई वो तुझे पहुँचने वाली नहीं थी तो अगर तू इस अ़क़ीदे के अ़लावा किसी और अ़क़ीदे पर मर गया तो तू दोज़ख़ में दाख़िल होगा। (इब्ने माजा–सुनन–1/57-ह०-77)
(अबू दाऊद–सुनन–4/569-ह०-4699)

तक़्दीर का मसला इन्तिहाई नाज़ुक है और इस मसले में उलझा कर शैतान लोगों का ईमान बर्बाद करने की कोशिश करता रहता है लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिये कि वो तक़्दीर के बारे में बहस व ज़्यादा ग़ौरो फ़िक्र करने से बचे क्योंकि क़ज़ा व क़द्र के मसाइल आ़म अ़क़्लों में नहीं आ सकते इसलिये इन मसाइल पर ज़्यादा ग़ौरो फ़िक्र करना बाइसे हलाकत हो सकता है

इन्सान की जिन्दगी कभी दुख कभी सुख कभी रंजो ग़म कभी राहत व आराम कभी ऐशो इशरत से भरे लम्हात और कभी मसाइब व आलाम से माअ़मूर लम्हात अल ग़रज़ इन्सान अपनी ज़िन्दगी में तरह तरह के हालातों का सामना करता है और मुसलमान को चाहिये मज़कूरा हालात में अल्लाह तआ़ला की रज़ा पर राज़ी और साबिर व शाकिर रहे।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जो लोग अपने रब की रज़ा जोई के लिये सब्र करते हैं और नमाज़ क़ायम रखते हैं और जो रिज़्क़ हमने उन्हें दिया है उसमें से वो पोशीदा और ऐअ़लानियाँ ख़र्च करते हैं और वो नेकी के ज़रिये बुराई को दूर करते रहते हैं यही वो लोग हैं जिनके लिये आख़िरत का (हसीन) घर है जहाँ सदाबहार बाग़ात हैं उनमें वो लोग दाख़िल होंगे और उनके आबा व अजदाद और उनकी बीवियाँ और उनकी औलाद में से जो भी नेको कार होगा और फ़रिश्ते उनके पास जन्नत के हर दरवाज़े से आयेंगे (उन्हें खुश आमदीद कहते और मुबारक बाद देते हुये कहेंगे) तुम पर सलामती हो तुम्हारे सब्र करने के सिले में पस अब देखो कि आख़िरत का घर क्या खूब है।
(सू०–राअ़द–12/22-24)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को माल या जान के ज़रिये तकलीफ़ आये और वो उस तकलीफ़ को छुपाये और सब्र करे और लोगों के सामने अपनी तकलीफ़ की शिकायत न करे तो अल्लाह तआ़ला पर हक़ है कि उसको बख़्श दे (तबरानी–मुअ़जम औसत–1/429-ह०-737)

हज़रत युनूस (अ़लैहिस्सलाम) ने हज़रत जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) से फ़रमाया कि मैं रुये ज़मीन के

सबसे बड़े अ़ाबिद को देखना चाहता हूँ तो हज़रत जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) आपको एक ऐसे शख़्स के पास ले गये जिसके हाथ पांव जुज़ाम (कोढ़) की वजह से कट कर गिर गये थे और वो जुबान से कह रहा था ऐ मेरे रब तूने जब तक चाहा इन आज़ा से मुझे फ़ायदा बख़्शा और जब चाहा इन्हें ले लिया और मेरी उम्मीद सिर्फ़ अपनी ज़ात में बाक़ी रखी ऐ मेरे ख़ालिक़ मेरा मक़सूद बस तू ही तू है

फिर हज़रत युनूस (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि ऐ जिबराईल मैंने आपको नमाज़ी व रोज़दार क़िस्म का कोई शख़्स दिखाने के लिये कहा था तो हज़रत जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) ने जवाब दिया कि ये शख़्स इस तकलीफ़ व मुसीबत में मुब्तिला होने से पहले ये नमाज़ी व रोज़दार था और अब मुझे ये हुक्म मिला है कि इसकी आंखे भी ले लो चुनांचा हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम ने इशारा किया और उसकी आंखें निकल पड़ी मगर उस आबिद शख़्स ने फिर वही बात कही ऐ मेरे रब जब तक तूने चाहा इन आंखों से मुझे फ़ायदा बख़्शा और जब चाहा इन्हें वापस ले लिया ऐ मेरे ख़ालिक़ मेरी उम्मीद सिर्फ़ अपनी ज़ात को रखा और मेरा मक़सूद वस तू ही तू है फिर हज़रत जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़ाबिद से फ़रमाया आओ हम तुम बाहम मिलकर दुअ़ा करें कि रब तअ़ाला तुमको फिर से आंखे व हाथ पांव लौटा दे और तुम पहले की तरह इ़बादत करने लगो-

आ़बिद कहने लगा हरगिज़ नहीं क्योंकि जब मेरे रब की रज़ा इसी में है तो मुझे सेहत नहीं चाहिये हज़रत युनूस अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बाक़ई मैंने किसी और को इससे बढ़कर आ़बिद नहीं देखा फिर हज़रत जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया रज़ाये इलाही तक रसाई के लिये इससे बेहतर कोई रास्ता नहीं। (रौजुर्रयाहीन-स०-335)

अल्लाह तबारक व तआ़ला हमारे तमाम दीनी व दुनियावी उमूर का सरपरस्त है तो उसकी क़ज़ा व क़दर पर राज़ी रहना हम सब पर फ़र्ज़ है इसलिये अह्ले ईमान को अपने तमाम मुआ़मलात व उम्मीदों पर अल्लाह तआ़ला पर एतमाद रखना चाहिये और अपने मतलूब व मक़सूद की तहसील के लिये सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करना चाहिये और जो शख़्स अल्लाह पर भरोसा करता है तो वो कभी महरुम व नाकाम नहीं होता और आख़िरत में भी वो अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल के सबब बेहतरीन अज्र पायेगा और जो ग़ैरो पर भरोसा करता है वो अल्लाह की मदद से महरुम और अपनी उम्मीदों के हुसूल में नाकाम रहता है

तवक्कुल का मफ़हूम ये है कि अपना काम किसी के सपुर्द करके उस पर भरोसा करना और रब तआ़ला पर तवक्कुल करने का मतलब ये है कि अल्लाह तआ़ला के हक़ीक़ी कारसाज़ होने का यक़ीन रखते हुये अपने काम अल्लाह तआ़ला के सिपुर्द कर देना और बन्दे का अल्लाह पर जितना

ईमान होता है उसी के मुताबिक़ अल्लाह तआ़ाला पर उसका तवक्कुल होता है और सख़्ती व तंगी के वक़्त और फ़ायदे मन्द अशिया के हुसूल के लिये और नुक़सानात से बचने के लिये अल्लाह तआ़ाला पर तवक्कुल करना चाहिये और उसी से मदद तलब करना चाहिये और अपनी तदबीर व अ़क़्ल और अपनी ताक़त व कुव्वत पर भरोसा न करे बल्कि अल्लाह तआ़ाला की कुव्वत व हिफ़ाज़त पर भरोसा करे ये हर मुसलमान के लिये दुनिया व आख़िरत में नफ़ा बख़्श है।

अल्लाह तआ़ाला पर तवक्कुल करने के सबब अल्लाह तआ़ाला अपने बन्दों की मदद फ़रमाता है और उनकी मुसीबतें और मुश्किलात दूर फ़रमाता है और जो शख़्स अपनी कुव्वत व ताक़त और दीगर असबाब पर भरोसा करता है तो उसे रब तआ़ाला की मदद नहीं मिलती ब़ल्कि रब तआ़ाला उसे उसके हाल पर छोड़ देता है और रब तआ़ाला जिसकी मदद न फ़रमाये फिर कौन उसकी मदद कर सकता है जैसा कि गज़वा ए हुनैन में बाअ़ज़ मुसलमान अपनी अ़ददी कसरत पर इतरा गये थे और उन्होंने फ़ख़्र का इज़हार किया जिसके नतीजे में मुसलमानों को सख़्त नुक़सान उठना पड़ा।

अल्लाह तबारक व तआ़ाला जिसकी मदद फ़रमाता है फिर कोई शैः उस पर ग़ालिब नहीं आ सकती चाहे दुनिया के तमाम लोग उसके ख़िलाफ़ हों मगर उसका ज़र्रा भर भी नुक़सान नहीं कर–

सकते और अगर अल्लाह तआ़ाला जिसकी मदद न करे और उसे उसके नफ़्स के हवाले कर दे तो तमाम मख़्लूक़ मिलकर भी उसकी मदद नहीं कर सकती क्योंकि तमाम कायनात की हर शैः उसके क़ब्ज़े कुदरत में है कोई भी शैः उसकी इजाज़त के बग़ैर हरकत नहीं कर सकती और न ही उसकी इजाज़त के बग़ैर सुकून इख़्तियार कर सकती है अल्लाह तआ़ाला ने जंगे बदर में मदद फ़रमाई अगर वो इसी तरह हमारी मदद फ़रमाये तो फिर हम पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता और जंगे उहद में बे सहारा छोड़ दिया अगर वो इस तरह हमें बे सहारा छोड़ दे तो हमारी कोई मदद नहीं कर सकता।

दुनियावी व उख़्र‘वी तमाम उमूर अल्लाह तआ़ाला की कुदरत व इख़्तियार में है और जो भी कुछ हुआ है जो कुछ होता है और जो कुछ होगा वो सब अल्लाह तआ़ाला के हुक्म व उसकी मर्ज़ी से होता है पस जब हमें ये माअ़लूम है कि जो कुछ क़ज़ाये इलाही में है वही होगा तो फिर हमें अल्लाह ही पर पूरा भरोसा और कामिल एतमाद रखना चाहिये ताकि हमें अल्लाह तआ़ाला की मदद व नुसरत और आख़िरत में अ़ज़ीम अज्रो सवाब हमें हासिल हो और अल्लाह तबारक तआ़ाला हम से मुहब्बत करे चुनांचा अल्लाह तआ़ाला तवक्कुल करने वालों से मुहब्बत करता है तो वो मक़ाम कितना अ़ज़ीम व आअ़ला है कि जिस पर फ़ाइज़ शख़्स को अल्लाह तआ़ाला की मुहब्बत हासिल हो

तो उसने बड़ी कामयाबी हासिल कर ली क्योंकि जो महबूब होता है तो उसे न तो अ़ज़ाब होता है और न उस पर अल्लाह तआ़ला का गज़ब होता है बल्कि वो अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त और अमान में रहता है और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की पनाह में आ जाये तो फिर वो कभी ज़लील व रसुवा नहीं होता।

अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करना हर ख़ैर व भलाई की कुंजी है और कामिल तवक्कुल चार चीज़ों का नाम है 1- जिस्म बन्दगी व गुलामी में रहे 2- और दिल रबूबियत में रहे यानी दिल में कामिल यक़ीन हो कि तमाम कायनात का ख़ालिक़ व मालिक पाक पर'वर दिगार है और कायनात की हर शैः उसके क़ब्ज़े कुदरत में है और उसकी मर्ज़ी के बग़ैर पत्ता नहीं हिल सकता 3- नेअ़मत पर शुक्र हो 4- और तकलीफ़ो मुसीबत और तंगी के वक़्त सब्र हो।

अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल के साथ साथ असबाब इख़्तियार करना भी निहायत ज़रुरी है और असवाब इख़्तियार करने से तवक्कुल में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता तवक्कुल अपनी जगह बरक़रार रहता है और तदबीर तक़दीर को टाल तो नहीं सकती मगर फिर भी तदबीर करते हुये अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल करना निहायत ही ज़रुरी है जैसा कि हज़रत याकूब (अ़लैहिस्सलाम) के बेटे जब वो मिस्र जाने के इरादे से निकले तो याकूब

(अ़लैहिस्सलाम) ने नसीहत करते हुये फ़रमाया ऐ मेरे बेटो मिस्र में एक दर‘वाज़े से दाखि़ल न होना बल्कि जुदा जुदा दर‘वाज़ो से जाना ताकि तुम बुरी नज़र लगने से महफ़ूज़ रहो ये इसलिये कि आपके बेटे निहायत खूबसूरत व दराज़ क़द थे तो आपने इकट्ठे एक वालिद की औलाद होने की वजह से नज़रे बद से बचाने के लिये आपने ये तजवीज़ फ़रमाई तो ये तदबीर थी फिर आपने फरमाया मैं तुम्हें अल्लाह तआ़ला के अम्र से बचा नहीं सकता तो ये तक़दीर के मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया और मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया है और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिये तो ये अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल के मुताअ़ल्लिक़ था मक़सूद ये कि अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये जो असबाब बयान किये हैं उन असबाब को इस्तेअ़माल किया जाये साथ ये अ़क़ीदा रखा जाये कि जो कुछ होगा वो अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी पर मुन्हसिर है वो जो चाहेगा वही होगा।

तो माअ़लूम हुआ कि हमें हर मुआ़मलात में तदबीर करते रहना चाहिये और सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला पर ही भरोसा रखना चाहिये फिर अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी हमें जिस हाल में रखे हम सब्र व शुक्र पर क़ायम रहें और अल्लाह पर भरोसा रखें और अल्लाह पर तवक्कुल के ज़रिये से ही हर मतलूब व मक़सूद हासिल होता है और तवक्कुल ही के ज़रिये हर ख़ौफ़ को दूर किया जा सकता है।

ईमान वाले अल्लाह ही पर तवक्कुल करते हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

सिर्फ़ वही लोग हैं कि जब (उनके सामने) अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल (उसकी अ़ज़मत व जलाल के तसव्वुर से) ख़ौफ़ ज़दा हो जाते हैं और जब उन पर उसकी आयात तिलावत की जाती हैं तो (कलामे इलाही की लज़्ज़त अंगेज़ बातें) उनके ईमान में ज़्यादती कर देती हैं और वो (हर हाल में) अपने रब पर तवक्कुल करते हैं (सू०-अनफ़ाल-8/2)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम अल्लाह पर ईमान ले आये हो तो उसी पर तवक्कुल करो अगर तुम (वाक़ई) मुसलमान हो तो उन्होंने अ़र्ज़ किया कि हमने अल्लाह ही पर तवक्कुल किया है। (सू०-युनूस-10/84,85)

अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से गुनाहों को तर्क कर देना ये परहेज़गारों का ख़ौफ़ होता है और अल्लाह के जलाल व उसकी अ़ज़मत और उसकी बे नियाज़ी से डरना इस तरह का ख़ौफ़ अम्बिया व मुरसलीन और औलिया-ए-कामिलीन का होता है और रब तआ़ला से जिसका जितना ज़्यादा कुर्ब होता है तो उसे उतना ही ज़्यादा ख़ौफ़ भी होता है और जिसे

जितना ज़्यादा ख़ौफ़ होता है तो उसका तवक्कुल भी उतना क़वी व मज़बूत होता है और तवक्कुल का ये माअ़ना नहीं है कि इन्सान अपनी कोशिशों को छोड़ दे बल्कि तवक्कुल का माअ़ना ये है कि इन्सान ज़ाहिरी असबाब को इख़्तियार करे मगर दिल से उन असवाब पर भरोसा न करे बल्कि अल्लाह की मदद व नुसरत और उसकी हिमायत पर पूरा भरोसा करे।

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक शख़्स ने हुजर अ़लैहिस्सलाम से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं अपने ऊँट को बांधकर तवक्कुल करूँ या फिर इसे खुला छोड़कर तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम इसे बांधकर फिर तवक्कुल करो (तिर्मिज़ी–सुनन–2/312-ह०-2517)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
और कुछ लोग अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करते हुये ज़मीन में सफ़र करते हैं (सू०–मुज़म्मिल–73/20)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
सो जब नमाज़ पूरी हो जाये तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो। (सू०–जुमआ़ा–62/10)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
और ज़ादे राह (सफ़र ख़र्च) ले लिया करो और

बेशक सबसे बेहतर ज़ादे राह तक़्वा (सुवाल से बचना) है। (सू०–बक़्राह–2/197)

➡ हजरत अ़बदुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अहले यमन हज करते थे और ज़ादे राह नहीं ले जाते थे और कहते थे कि हम तो तवक्कुल करने वाले हैं और जब वो मक्का मुअज़्ज़मा पहुंचते तो वो लोगों से सुवाल करते थे तब अल्लाह तआ़ला ने आयत नाज़िल फ़रमाई "और ज़ादे राह (सफ़र ख़र्च) ले लिया करो और बेशक सबसे बेहतर ज़ादे राह तक़्वा (सुवाल से बचना) है"।
(सू०–बक़्राह–2/197)
(बुख़ारी–सहीह–2/215-ह०-1523)

इस्लाम का माअ़ना है अल्लाह तआ़ला के अहकाम के सामने सरे तसलीमे ख़म करना यानी हुक्म मानना व राज़ी बा रज़ा रहना और उसके अहकाम की इताअ़त करना और ईमान का एक माअ़ना ये है कि बन्दा ये मान ले कि अल्लाह तआ़ला वाहिद है और वाजिबुल वुजूद है यानी वो पाक ज़ात जो अपने वुजूद में किसी की मोहताज नहीं है और अल्लाह के सिवा जो कुछ भी है वो हादिस है यानी वो नई चीज़ जो पहले न थी और वो नई चीज़ फ़ानी है और अल्लाह तआ़ला के सिवा जो कुछ है वो अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़

है उसके ज़ेरे तसर्रुफ़ और उसके ज़ेरे तदबीर है जब बन्दे में ये दोंनों कैफ़ियत पैदा हो जायें तो वो सब मुआ़मलात को अल्लाह तआ़ला के सिपुर्द कर देता है और उस बन्दे के दिल में तवक्कुल का नूर पैदा होता है और तवक्कुल का माअ़ना है कि बन्दा अपने तमाम मुआ़मलात व अहवाल को अल्लाह तआ़ला के सपुर्द करदे और अपने तमाम मुआ़मलात व अहवाल में सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करे और जो अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करे तो अल्लाह तआ़ला उसे काफ़ी है और वो अच्छा कारसाज़ है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जिन लोगों ने कहा कि मुख़ालिफ़ लोग तुम्हारे मुक़ाबले के लिये (बड़ी कसरत से) जमाअ़ हो चुके हैं सो उनसे डरो तो (इस बात ने) उनके ईमान को और बढ़ा दिया और वो कहने लगे हमें अल्लाह काफ़ी है और वो क्या अच्छा कारसाज़ है (सू०–आले इमरान–3/173)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और (उन मुनाफ़िक़ों का ये हाल है कि आपके सामने) कहते हैं कि हम ने आपका हुक्म मान लिया फिर वो आपके पास से (उठकर) बाहर जाते हैं तो उनमें से एक गिरोह आपकी कही हुई बात के बरअ़क्स रात को साज़िशी मशवरा करता है और अल्लाह तआ़ला (वो सब कुछ) लिख रहा है जो वो रात भर मन्सूबे बनाते हैं पस ऐ महबूब

आप उनसे रुख़े अनवर फेर लीजिये और अल्लाह पर भरोसा रखिये और अल्लाह काफ़ी है और वो (बेहतर) कारसाज़ है। (सू०–निसा–4/81)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ऐ नबी आपके लिये अल्लाह काफ़ी है और वो मुसलमान जिन्होंने आपकी पैर'वी इख़्तियार की है (सू०–अनफ़ाल–8/64)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

फ़रमां दीजिये भला ये तो बताओ कि जिन बुतों को तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो क्या वो बुत उसकी भेजी हुई तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं या वो मुझे रहमत से नवाज़ना चाहे तो क्या वो बुत उसकी भेजी हुई रहमत को रोक सकते हैं फ़रमां दीजिये मुझे अल्लाह काफ़ी है और भरोसा करने वाले सिर्फ़ उसी पर भरोसा करते हैं।
(सू०–जुमर–39/38)

जो शख़्स काफ़ी से ग़ैर काफ़ी की तरफ़ मुन्तक़िल होगा तो उसका मक़सूद पूरा नहीं होगा इसलिये निहायत ज़रुरी है कि तमाम मुआ़मलात व अहवाल में सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला पर तवक्कुल किया जाये और तमाम उमूर उसी को सौंप दिये जायें तो अल्लाह तआ़ला की मदद व नुसरत हमें ज़रुर हासिल होगी और हम अपने मक़सूद को हासिल कर लेंगें।

शैतान का उस पर कुछ ग़लबा नहीं जो अल्लाह पर तवक्कुल करे

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
उस (शैतान) का उन लोगों पर कोई ज़ोर नहीं चलता जो ईमान लाये और अपने रब पर भरोसा करते हैं। (सू०–नहल–16/99)

शैतान का उन लोगों पर किसी क़िस्म का कोई तसल्लुत (हुकूमत, क़ब्ज़ा, क़ाबू) हासिल नहीं जो ईमान लाये और वो अपने रब पर भरोसा करते हैं यानी अल्लाह तअ़ाला पर तवक्कुल करने वाले मोमिन शैतानी वसवसे कुबूल नहीं करते अगरचा शैतान कोशिश भी करे तो भी उसे कामयाबी नहीं मिलती और शैतान का उन लोगों पर तसल्लुत हासिल है जो शख़्स शैतान को अपना दोस्त बनाते हैं और उसके वसवसों की पैर‘वी करते हैं तो माअ़लूम हुआ कि शैतान किसी के साथ ज़ोर व ज़बरदस्ती नहीं करता बल्कि जो खुद ही उसकी तरफ़ माइल होता है और उसे अपना दोस्त बनाता है वही उसका असर कुबूल करता है और शैतान के जाल में वो फंस जाता है फिर शैतान उसको अल्लाह तअ़ाला की नाफ़रमानी पर उभारता रहता है और उसे जहन्नम के रास्तों पर ले जाता है।

जो शख़्स ईमान और तवक्कुल के ज़ेवर से आरास्ता होता है तो शैतान उस पर ग़लबा नहीं–

पा सकता और अल्लाह तआ़ाला तवक्कुल करने वाले अह्ले ईमान से शैतान के शर को दूर हटा देता है और शैतान का उन पर कोई इख़्तियार नहीं रहता।

अल्लाह तआ़ाला के बचाये बग़ैर शैतान के वसवसों से बचना ना मुम्किन है और अल्लाह की तौफ़ीक़ के बग़ैर उसकी इ़बादत पर कुव्वत मुम्किन नहीं और अल्लाह के सिवा कोई ख़ालिक़ नहीं है और बन्दा किसी चीज़ का मालिक नहीं है।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

जब उन्हें शैतान की तरफ़ से कोई वसवसा आता है तो वो फ़ौरन अल्लाह को याद करते हैं और उसी वक़्त उनकी आँखे खुल जाती हैं।

जब इन्सान पर ये मुनकशिफ़ हो जाये कि अल्लाह के सिवा केई हाजत र'वा नहीं, और कोई मुश्किल दूर करने वाला नहीं है रिज़्क़ देना या न देना, ग़नी करना या फ़क़ीर करना और ज़िन्दगी या मौत देना हर चीज़ अल्लाह तआ़ाला के इख़्तियार में है तो फिर वो शख़्स अपने सब मुआ़ामलात व अहवाल में और तंगी व मुसीबत में किसी ग़ैर की तरफ़ नहीं देखता बल्कि उसके दिल में सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ाला का ख़ौफ़ होता है और उसी से उम्मीद होती है और उसी पर भरोसा होता है।

हक़ीक़ी तवक्कुल ये है कि बन्दा अल्लाह

तआ़ला के समने ऐसा हो जैसे गुस्ल देने वालों के हाथों में मुर्दा होता है कि वो जिस तरह चाहे उसे उल्टाये पल्टाये और हक़ीक़त में मुतावक्किल वो शख़्स है जो मख़लूक़ पर क़तई भरोसा न करे और न अपने हाल की किसी से शिकायत करे बल्कि अपने रब पर यक़ीन और भरोसा करे कि अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी और उसके हुक्म के बग़ैर कोई उसकी मदद नहीं कर सकता और न उसका भला कर सकता न बुरा कर सकता जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचाये तो उसके सिवा कोई उसे दूर नहीं कर सकता और अगर वो तुम्हारे साथ भलाई का इरादा फ़रमाये तो कोई उसके फ़ज़्ल को रोक नहीं सकता और वो अपने बन्दों में से जिसे चाहता है अपना फ़ज़्ल पहुंचाता है और वो बड़ा ही बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (सू०-युनूस-10/107)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
अल्लाह तआ़ला लोगों के लिये (अपने ख़ज़ाना ए) रहमत से जो कुछ खोल दे तो उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो रोक ले तो उसके बाद कोई उसे छोड़ने वाला नहीं और वही ग़ालिब है बड़ी हिकमत वाला है। (सू०-फ़ातिर-35/2)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं

कि अल्लाह तआ़ाला के सिवा किसी से उम्मीद क़ायम न करे और अपने गुनाहों के सिवा किसी बात से न डरे क्योंकि अगर तुम अल्लाह तआ़ाला की रहमत की उम्मीद रखोगे तो तुम्हारे तमाम मक़ासिद पूरे हो जायेंगे और जो मसाइब तक़दीर में लिखे दिये गये हैं इन्सान कितना ही होशियार हो वो मसाइब उस पर ग़ालिब आ ही जाते हैं और जो शख़्स अल्लाह तआ़ाला की तक़दीर पर राज़ी रहता है तो वो मसाइब में अच्छी तरह सब्र करता है जो शख़्स अल्लाह तआ़ाला पर तवक्कुल करता है तो वो उसके सारे मक़सूद व मतलूब पूरे फ़रमां देता है और फिर वो शख़्स फिक्र मंद नहीं रहता और अल्लाह तआ़ाला पर तवक्कुल तब हो सकता है कि जब उसका यक़ीन कामिल हो।

★★★★★

अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन अल्लाह तबारक व तआ़ला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसके फ़ज़्लो करम व तौफ़ीक़ और उसके हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इनायत व रहमो करम और उनके तुफ़ैल और अह्ले बैत अत्हार के फ़ैज़ व नज़रे करम व तमाम सहाबा किराम व जुमला औलिया किराम के फ़ैज़े रुहानी व बरकात से मैंने इस किताब की ताअ़लीफ़ की है अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझ हक़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं क़तई इसके क़ाबिल न था

अल्लाह तआ़ला इस किताब को अपनी बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और क़यामत तक लोगों के लिये इस किताब को फ़ैज़ रसाँ रखे व मेरी ज़िन्दगी व आख़िरत ईमान बिल ख़ैर पर क़ायम रखे व तमाम उम्मते मुस्लिमा को हिदायत अ़ता फ़रमाये और अपनी व अपने हबीब और अहले बैत अत्हार व सालिहीन की मुहब्बत से दिलों को मुनव्वर व मुनज़्ज़ाह फ़रमाये और क़ल्ब व रुह को मुज़य्यन फ़रमायें और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत की मग़फ़िरत फ़रमाये। **आमीन**

★★★★★

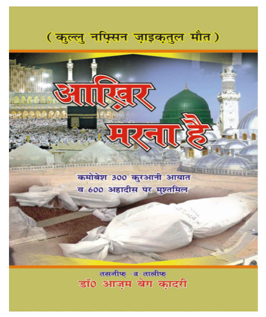

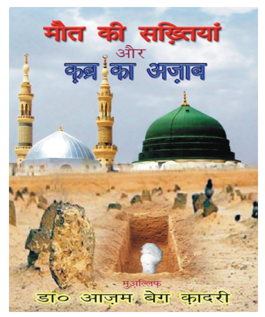

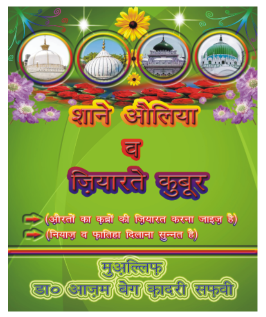

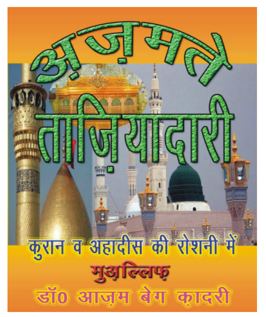

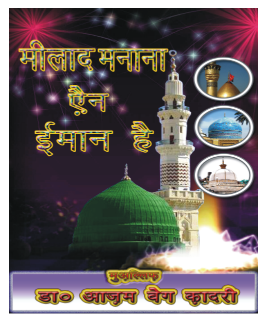

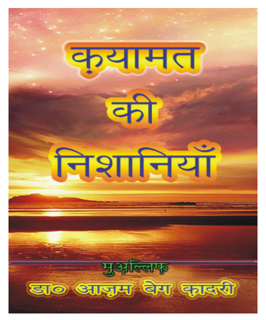

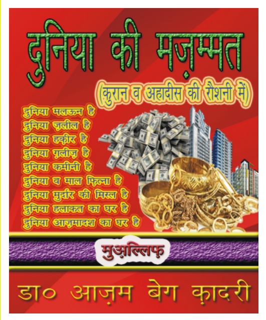

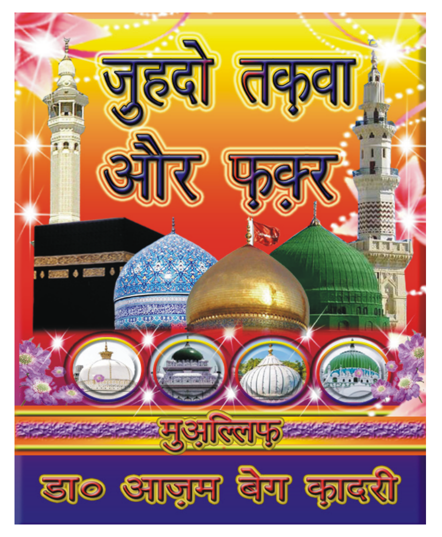

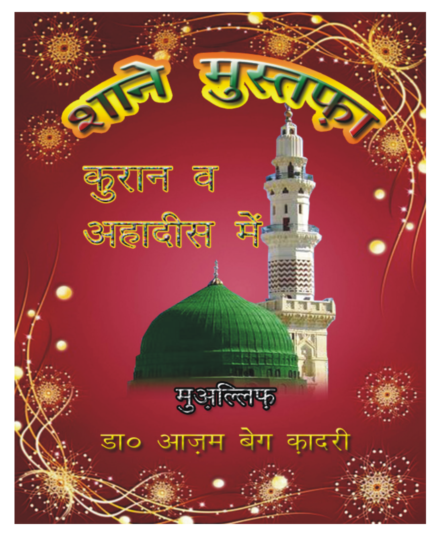

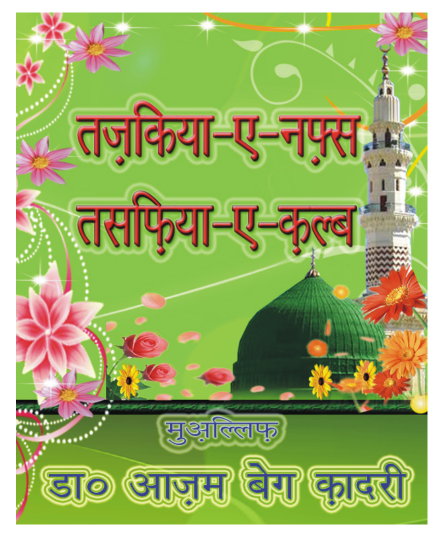

मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)